श्रीपद्मप्रभु-कीर्तन ।



लेखक व प्रकाशक—

मास्टर—छोटेलाल जैन

मालिक 'पद्म-वाणी' कार्यालय पद्मपुरी, पो० शिवदासपुर

(जयपुर स्टेट)

सोल एजेन्ट—

फूलचन्द जैन फोटोग्राफर

पद्मपुरी, पो० शिवदासपुर, (जयपुर स्टेट)

प्रथमबार १०००	वीर निर्वाण संवत २४५७	सादी जिल्द २) सजिल्द २॥)

उपहार

सेवा में

श्रीमान् ______________________

____

____

के कर कमलों में सादर उपहार स्वरूप समर्पित।

आपका

____


श्री महावीरस्वामी
प्र फूलचंदजैन·फोटोग्राफर·वाड़ा
COPY RIGHT

विषय-सूची

विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ

अपने दो शब्द

इस परिवर्तन शील संसार में मनुष्य को पद पद पर जीवन संग्राम करना पड़ता है, और इस तरह यदि जीवित रहा तो उसे नाटक के पर्दे की तरह अनेक रूपों में बदलना पड़ता है। संग्राम में वही विजयी होता है जो आत्म विश्वास के साथ आगे बढ़ने की उत्कट इच्छा रखता है और उसे अपने जीवन को बाल, युवा, वृद्ध, रोग शोक, सुख दुख आदि खाइयों को पार करके जीवन की अन्तिम अवस्था को पहुंचना पड़ता है। इतनी कठिनाइयों को पार करने के पश्चात् उसके विचार या अनुभव तपे हुए सोने की तरह परिपक्व हो जाते हैं। ऐसे विचार वालों में यदि उनकी बुद्धि लोकोपकार की तरफ हुई और उनमें लिखने की योग्यता हुई तो वे अपने अनुभव को जो कुछ उन्होंने संसार के अनेक परिवर्तनों को देखकर उत्पन्न किया है, उपकार के लिये छोड़ जाते हैं। अब आगामी सन्तान का कार्य है कि वे जीवन संग्राम में विजयी बनने के लिये अपने को बिना हानि में डाले उनके अनुभवों से लाभ उठावें।

"महाजनो एन गता स पन्था।"

हमारे पूर्व पुरुषों ने जो मार्ग बतला दिया है उसी रास्ते पर चलें। हमारे कहने का यह मतलब नहीं है कि कोई अन्ध भक्त होकर केवल पूर्व पुरुषों का अनुकरण करें किन्तु मनुष्य को अपनी बुद्धि की कसौटी से उन विचारों को कस कर काम में लाना चाहिये। सभी पुराने विचार त्यागने योग्य नहीं है और न सभी नये विचार ग्रहण करने योग्य हैं। देश काल का विचार करके उनको त्यागना और ग्रहण करना मनुष्य का कर्तव्य है।

किन्तु धर्म एक ऐसी वस्तु है जो सदा शाश्वत एक रहा है और एक रहेगा न उसमे परिवर्तन हुआ है न होगा। एक और एक सदैव से दो होते आये है कोई तीन नहीं कह सकता। अग्नि गरम होती है उसका स्वभाव न कभी ठण्डा हुआ है न होगा। इसी प्रकार आत्मा का स्वभाव शुद्ध परम निरंजन वीतरागमय है। किन्तु कर्मों के बन्धन से वह संसारी और विकार मय हो गया है और इसीलिये मनुष्य अपने आपको भूलकर पर-पदार्थों को अपना समझ उसमे सुख दुःख मानता है। यथार्थ में सच्चा सुख बिना मोक्ष के और कहीं मिल भी नहीं सकता है। मनुष्य को वह सुख पाने के लिये कर्तव्य करना श्रेयस्कर है किन्तु बालपने मे अज्ञान अवस्था, युवापने में इन्द्रियों की परवशता और वृद्धा अवस्था मे शिथिलता आ जाने से वह अपने कर्तव्य कर्म को भूल जाता है। यदि अन्तिम अवस्था मे बुद्धि ने धोखा नहीं दिया तो उसे अपने पूर्व जीवन का सिंहावलोकन करने पर पश्चाताप होता है। किन्तु अब क्या जब—

'चिड़िया चुन गईं खेत"

सब पश्चाताप व्यर्थ जाता है।

इसलिये मनुष्य का धर्म है कि वह संसार में रहकर भी अपने नित्य नियमों को कमल के पत्तों की तरह बनाये, जो भविष्य में सुखकारी हो सकता है।

युवा अवस्था मनुष्य का एक ऐसा समय है जब कि वह सत्संग व कुसंग में पड़कर बन व बिगड़ सकता है। यदि इस समय ध्यान नहीं दिया गया तो आगामी जीवन कष्टमय बीतना स्वाभाविक हो जाता है, और यदि ठीक मार्ग पर चला तो उसे राजनैतिक, सामाजिक व धार्मिक जीवन को पार करना पड़ता है। और अनेक ठोकरें खाने के बाद वह अपने को एक नई स्थिति

में पाता है, ऐसे बहुत से मनुष्य हैं जिनका ऐसा पट परिवर्तन हुआ है।

मेरा राजनैतिक जीवन समाप्त होने के पश्चात् सामाजिक जीवन में बहुत सा समय व्यतीत हुआ है उसमें भी शिक्षा संस्थाओं से अधिक सम्पर्क रहा है। सन् १५ या १६ में भारतवर्षीय दि० जैन महाविद्यालय मथुरा का कार्य भार मेरे सिर पर पड़ा। उसके पश्चात् ललितपुर के गज रथोत्सव के समय जब कि लाखों की संख्या में जन समाज एकत्र हुआ था उस समय बुन्देलखण्ड प्रान्त के विद्यार्थियों व विद्वानों को दूसरे प्रान्तों में अपमान के साथ अध्ययन अध्यापन करना पड़ता है इसकी ठेस श्रीमान पूज्य न्यायाचार्य पं० गणेशप्रसाद जी वर्णी को लगी तो उनके सहयोग में रहकर मुझे उस अपमान के निराकरण करने को वर्णी दीपचन्द जी व बाबा भागीरथ जी वर्णी के साथ देश के बहुत से स्थानों में दौरा करना पड़ा और पांच लाख की स्कीम से जबलपुर में बुन्देलखण्ड दि० जैन शिक्षा मन्दिर की स्थापना की गई थी और भी अनेक राष्ट्रीय संस्थायें और राष्ट्रीय हिन्दी मन्दिर जो कि पू० मालवीय जी के द्वारा स्थापित हुआ था मेरा अधिक सम्पर्क रहा है जिसके बल पर मैं कह सकता हूं कि समाज में दान देने वालों की कमी नहीं है किन्तु सच्ची लगन से काम करने वाले कार्यकर्ताओं की कमी है और इसके विपरीत अयोग्य-केवल मान चाहने वाले कार्यकर्ताओं के चुंगल में पड़कर संस्थाओं का पतन हो जाता है। समाज तो दान देकर चुप रह जाती है वह यह नहीं देखती कि इसका सदुपयोग या दुरुपयोग हो रहा है यह बात ध्यान देने योग्य है।

जब "तलवार काम न दे तब अखबार निकालो।' इस बीसवीं शताब्दी में यह कहावत अक्षरशः सत्य है। इस समय संसार में जितने परिवर्तन राजनैतिक-सामाजिक व धार्मिक हो रहे हैं उसमें

पत्रों का सबसे बडा हाथ है। भले ही भारत की समाज इस महत्वपूर्ण हथियार को अभी तक न समझ सकी हो जितना कि यूरोप के लोग समझ कर उससे काम ले रहे हैं। इग्लैड या अमरिका मे एक पत्र सम्पादक की हैसियत प्राइमिनिस्टर (प्रधान मत्री) से किसी प्रकार की कम नहीं रहती। वह चाहे तो अपनी कलम से सारा उलटफेर कर सकता है, उनके पत्रों की संख्या लाखों और करोडों मे प्रतिदिन निकलती है। एक मेहतर से लगाकर बादशाह तक उस पत्र के पढने की रुचि रखते हैं। भारत मे एक शिक्षा की कमी का भी कारण है जिससे पत्रों को आज दिन घाटे के लिये रोना पडता है जिसमे सामाजिक और धार्मिक पत्र तो बिना सहायता के चल ही नहीं सकते, फिर भी यदि निर्भीकता पूर्वक उनका सम्पादन किया जावे तो समाज मे वह बडी भारी क्रान्ति फैला सकते हैं। ऐसा अनेक पत्रों के द्वारा हुआ भी है और हो रहा है। समाज में दुराचार फैलाने वाले प्लेग के कीडों की तरह ऐसे मुखिया उपस्थित हैं उनको यदि ठीक रास्ते पर लाने का कोई साधन है तो इस समय एकमात्र अखबार ही है।

मुझे "परवार-बन्धु" व "कौशल समाचार" के कार्य भार को सम्हालने का मौका मिला है। उतने समय मे मैंने समाज की नस-नस जानने का अवसर पाया है और उससे मैं कह सकता हू "दुनिया झुकती है झुकाने वाला चाहिये" रूढियादी व नये विचारक तभी तक अपने विचारों को ढकेलना चाहते हैं जब तक कि उनका विरोध करने वाला एक प्रचण्ड साधन उनके सामने नहीं आता है। "परवार-बन्धु" ने अपने समय मे जो क्रांति की लहर उत्पन्न की थी आज उसके लेखों से प्रत्यक्ष मालूम पडती है। समाज की कितनी विरोधाग्नि मे से होकर उसे निकलना

पड़ा यह बात भी उसके लेखों से छिपी नहीं है। इस समय भी उसकी फाइलें युवकों के लिये पठनीय हैं। उसने अपना काम पूरा किया इसका अब भी हम को संतोष है। मेरा विचार तो ये है कि "टिमटिमाते चिराग से उनका बुझ जाना ही उत्तम है" उन पत्रों के लिये जो केवल चापलूसी या मानकपाय के लिए निकलते हैं पनप नहीं सकते और न उससे समाज का कोई लाभ हो सकता है। अतः या तो उन्हें निर्भिकता पूर्वक समाज की बुराइयों को दूर करना चाहिए या बन्द कर देना चाहिये। अपनी स्वार्थ वासना के लिए समय व द्रव्य खर्च करके काले कागज रंगने से कोई लाभ नहीं है।

जैन समाज व्यापार प्रधान है उसकी गरीबी और फैली हुई बेकारी को दूर करने के लिए व्यापार ही मुख्य साधन है। परन्तु खेद की बात है, कि सरकारी शिक्षालयों में इसकी कमी तो प्रत्यक्ष ही है किन्तु यदि समाज भी कोई विद्यालय खोलती है तो इस कमी की पूर्ति की ओर ध्यान न देकर अन्धानुकरण करती है। इसका फल यह होता है कि उसमें से निकले हुए विद्यार्थी या तो बेकार फिरते हैं या नौकरी की खोज में अपना समय व्यतीत करते हैं और नौकरी पाकर ऐसे बहुत ही कम विद्वान होते हैं जो अपने पद या मर्यादा को स्थिर रख के अपनी बुद्धि का सदुपयोग कर सकें। प्रायः उनको मासिक वेतन देने वाले किसी एक या अनेक लोगों की चापलूसी म ही अपनी शिक्षा समाप्त कर देनी पड़ती है। इस लिए इस बात की आवश्यकता है कि शिक्षित लोगों को व्यापार की ओर ध्यान देना चाहिए। वर्तमान समय में अधिकांश अशिक्षित लोगों के हाथ में व्यापार है और जिन शिक्षित लोगों ने इस साधन को अपना लिया है वे कभी बड़ी से बड़ी नौकरी पसन्द नहीं करेंगे कहा भी है "व्यापारे बसति लक्ष्मी" इस समय व्यापार के लिए ही संसार व्यापी युद्ध हुआ है और

होता रहेगा जो जाति इसके महत्वको समझती है वह दूसरा अधिकार स्वीकार न करेगी और शिक्षित लोग ही संसार के व्यापार को समझ कर के नियमानुसार लाभ उठा सकते है। केवल कमीशन एजेन्ट बने रहना व्यापार नहीं है। एक शिक्षित आदमी अपने बुद्धि बल से बहुत बड़ा विस्तार कर सकता है जब कि एक अशिक्षित आदमी रुपयों की थैली रखकर भी उससे व्याज पैदा करने के सिवाय कोई व्यापारिक लाभ नहीं उठा सकता। मैंने अनुभव करके देखा कि जिस समय जबलपुर में कुछ बहुत पुराने लोगों के हाथ मे यह धन्धा था, उस समय मैंने यह कार्य अपने हाथ मे लिया था और उसको इस चरम सीमा तक पहुंचाया कि जिससे उन लोगों को बाहर से माल मंगाना ही छोड देना पडा । उसका एक कारण यही था कि लोग सीधे बम्बई, कलकत्ता, कानपुर खरीद के लिए दौडते है वे यह भूल जाते है कि ये स्थान उपज के नहीं किन्तु स्टाक के हैं। यदि उपज के स्थानों से सीधा माल खरीदा जाये तो उससे लाभ हो सकता है यह बात शिक्षित लोग ही समझ सकते है क्यों कि उनको भूगोलिक ज्ञान रहता है । इस लिए समाज के विद्वानों को इस ओर ध्यान देना चाहिये ।

मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ है। इसी से पाप, पुन्य, स्वर्ग, नर्क आदि की सत्ता प्रतीत होती है, और इस लिये मनुष्य को अपने विचारों को कार्यरूप मे परिणित करने के लिए कभी आगे को नहीं टालना चाहिये। यह बिलकुल ठीक है —काल करन्ते आज कर, आज करन्ते अब। पलमे परलो होयगा बहुरि करेगो कब।

मैंने जीवन के अनेक परिवर्तनों में फिरते रहने से समय २ पर जो विचार उत्पन्न हुए उनको संग्रह करने के पश्चात् शान्ति के साथ लेख बद्ध करने का निश्चय किया था किन्तु जिस समय सब कार्यो से छुट्टी लेकर सम्बद्ध करने का समय आया तब शरीर ने

धोका दिया और मुझे अपने ही ग्राम में एकान्त शान्त केवल धर्म मय जीवन व्यतीत करने का ही निश्चय करना पड़ा। बल्कि अपनी मालगुजारी से भी उदासीन होकर आत्म ध्यान में आज के दो वर्ष से तल्लीन रहा। परिजन-पुरजन और सभा सोसाइटी तथा मित्रों से भी सम्बन्ध त्याग दिया। यह भी आशा छोड़ दी थी कि मैं अपने ग्राम से बाहर कभी किसी स्थान को जासकूंगा। परिवार के लोगों के विशेष आग्रह करने पर भी मैं तीर्थ यात्रा आदि के लिए भी न गया इतने समय में अपने कहलाने वाले ग्राम में और भी कटु अनुभव हुए जिसने सांसारिक उदासीनता में और भी साहयता दी। कितु यह जीवनके लिए एक कसौटी थी। इस बीचमें श्रीपदमपुरीके अतिशयकी चर्चा मेरे कानों में पड़ी। फिर भी उदासीन रहा किन्तु उन की भक्ति के आवेश में मैंने वहीं कुछ रचनायें की और उससे मुझे बड़ी शान्ति मिली और आज के तीन महीने पहले जब कि मुझ को या किसी कुटुम्बी जनों को हमारी यात्रा का स्वप्न में भी विचारनहीं था। वह मुझ में एकाएक बल आया और मैं सब परिग्रह त्याग कर श्री पद्मपुरी के लिए चल दिया। मैं स्वयं तथा गांव के लोग समझते थे कि ऐसी अशक्त अवस्था में इतनी लम्बी यात्रा नहीं कर सकता किन्तु मैंने बड़ी कुशलता के साथ श्री पद्मप्रभु के दर्शन किये और अपने को किसी दूसरे रूपमें ही पाया। वहां पर मेरी सोई हुई शक्ति जाग्रत हुई और लोगों के विशेष आग्रह से मुझे कार्य का अवसर मिला। इस समय संघ शक्ति से ही सब कार्य सफल होते हैं, इस लिए व्यापारियों को उत्साहित करके व्यापार संघकी स्थापनाकी। उसमें भी अनेक विरोध उत्पन्न हुए। अन्त में उसका लोगों का लोहा मानना पड़ा। बड़े आश्चर्य की बात है कि ऐसे अतिशय क्षेत्र पर जहां कि यात्रियों का आना जाना लगा रहता है वहां पर कोई शिक्षा संस्था न हो, और स्थापित की जावे तो कुछ लोग उसका विरोध इसलिये करें कि कहीं

इस सस्था की कमेटी हमारे अधिकारों को न छीन ले। कितनी मूर्खता पूर्ण बात है। किन्तु श्रीपद्म विद्यालयकी स्थापना हुई और इसमे सेठ गुलाबचन्द जी रूपाडी वालों का उत्साह सराहनीय है। भगवान से मेरी यह विनय है कि जयपुर रियासत के कुछ लोगों मे जो अन्य प्रान्तों के लोगों से भेद-भाव की भावना है वह शीघ्र ही दूर होकर जैन धर्म के प्रचार मे सहायक होवे। जैन धर्म सर्वेषु मैत्री की शिक्षा देता है उसके अनुयायियों का उस पर चलना परम धर्म है।

यहा आने पर मुझ मे लिखने का अदृश्य भाव आया और मैंने यह पद्म प्रभु कीर्तन लिख डाली जो कि पाठकों के समक्ष है। यह कैसी है इसके कहने का मुझे कोई अधिकार नहीं है। किन्तु इसके लिखने का उद्देश्य और कुछ नहीं केवल सासारिक विचारों मे समय न लगा के भक्ति की भावना और प्रभावना अग की पूर्ति थी। वह पूरी हुई। जिस समय यह अधूरी ही लिखी जा रही थी व पूरी होने पर भी भगवान पद्म प्रभु के सामने इसके अनेक कीर्तन हो चुके हैं। उस समय मैंने लोगों की रुचि शीघ्र ही प्रकाशित कराने की देखी और उनकी इच्छानुसार इसमे भजन आदि भी जोड दिये गये हैं। जिन सज्जनों के भजन लिये हैं मैं उनका हृदय से आभारी हू।

इसी तरह दूसरा साधन "पद्म-वाणी" के प्रकाशित करने का है जो डिक्लेरेशन मिलते ही प्रकाशित किया जायगा।

अन्त मे मैं दानवीर लाला सरदारीमल जी जैन गोटेवाले रईस और श्रीयुत मास्टर शीतलप्रसाद जैन बी० ए० देहली का अत्यन्त आभारी हूँ। जिनकी विशेष कृपा से तीन मास देहली मे रहने आदि की सुविधायें आप लोगों के द्वारा प्राप्त हुई।

देहली
५-७-४६ } —छोटेलाल जैन

नोट

इस पुस्तक के तैयार करने में शारीरिक, मानसिक और आर्थिक कठिनाइयों का भारी मुक़ावला करना पड़ा। किन्तु भगवान् की कृपा से अन्त में सब काम शान्ति पूर्वक हो गया। चि० फूलचन्द ने इस मौके पर सम्पूर्ण प्रकार की सहायता हृदय से दी; इसलिये हम उसे आशीर्वाद देते हैं कि वह सुखी रहे और फले-फूले। उसका २२२८)।।। रु० लागत मय कमीशन के हिसाब करने पर हुए जिसे हमने उतने मूल्य की पुस्तकें देदी हैं। इसी प्रकार चि० कुन्दनलाल का भी कोई पैसा बाकी देना नहीं रहा है। अब हम बाकी स्टाक के और जैन-साहित्य मन्दिर, जबलपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के पूर्ण मालिक हैं। उनको हम किसी को दें तो उसमें किसी कुटुम्बी या लड़कों वगैरा का कोई अधिकार नहीं होगा। जो हमारी सेवा करेगा अन्त में वही इन सब पुस्तकों और आगामी प्रकाशित होने वाली पुस्तकों वा संस्करणों का पूरा मालिक होगा—यह बात चि० फूलचन्द और चि० कुन्दनलाल स्वीकार करते हैं और मैं अपनी सेवा के योग्य प्यारीबाई मूडराबाली पर पूर्ण विश्वास करता हूं और आज ही से उसे इस सब का मालिक बनाता हूं। हिसाब-किताब रखना, लेना-देना सब उसी के हाथ में रहेगा। मेरे जीवन के रहते हुए वह मेरी इच्छानुसार कार्य करेगी। मेरी मृत्यु के बाद ही वह इसका मनचाहा उपयोग कर सकेगी।

ता० ४-२-४६ ई०　　　　　　——छोटेलाल जैन।

द० फूलचन्द जैन फोटोग्राफर, मु०—दरीबा कलां, देहली।
द० कुन्दनलाल जैन, मु०—दरीबा कलां, कूंचा सेठ, देहली।
Sital Prasad Jain B. A, Kinari Bazar, Delhi.
द० सुमेरचन्द जैन, न्यायतीर्थ, ४-२-४६

———



श्रीपद्मप्रभु-कीर्तन।

(१) दोहा

बाड़ा के श्रीपद्म को, प्रथम नवाऊँ शीश।
सफल करें जो कामना, मंगलमय जगदीश॥

(छन्द ३१ मात्रा)

केवलज्ञान प्राप्त कर जिनने, किया जगत का है उपकार।
वे अरहंत जगत उद्धारक, हनें कर्म को परम उदार॥
सिद्ध सदा वासी शिवपुर के, स्वयं सिद्ध आदर्श अपार।
पंच परम गुरु सुमरन करके, नमन करूं मन को शतबार॥

(३)

सरस्वती जिनवाणी माता, दूर करो मन के अविचार।
तीर्थंकर चौबीस हुए हैं, हैं होंगे भूप के अवतार॥
सिद्ध क्षेत्र अतिशय के मन्दिर, बने हुए जो विविध प्रकार।
हाथ जोड़ कर भाव सहित मैं, वन्दूं उनको बारम्बार॥

(४)

वादिराज मुनि कुमुदचन्द्र जी, आगम के मानो अवतार ।
कुन्दकुन्द स्वामी शिवगामी, मानतुंग मुनि ज्ञानागार ॥
परम दिगम्बर ऐसे मुनि जो, मन को देते शान्ति अपार ।
श्री अकलंक देव को ध्याऊँ, किया जिन्होंने धर्म प्रचार ॥

(५)

महाधवल जयधवल ग्रन्थश्री, षटपाहुड़ औ गोमटसार ।
मोक्षशास्त्र की विस्तृत टीका, ज्ञानार्णव का ज्ञान अपार ॥
चार भांति के अनुयोगों में, जैन धर्म का मिलता सार ।
अगम अलौकिक उस आगम को, नमस्कार है बारम्बार ॥

(६) दोहा

श्री गुरु के पद पद्म का; करके मन में ध्यान ।
बाड़ा के श्री पद्म का कीर्तन करूँ बखान ॥

(७)

जीवन धन्य उन्हीं का जानो, जो जग का करते उपकार ।
राग द्वेष तज स्वयम् बुद्ध हो, जीवों को भी देते तार ॥
अगुआ बनकर मोक्ष मार्ग के, सत्य धर्म का करें प्रचार ।
परम दिगम्बर वीतराग हो, करमों को कर देते क्षार ॥

(८)

ऐसे पूज्य परम हितकारी, सच्चे ज्ञाता करुणागार ।
आर्य भूमि की कौशाम्बी में, पद्मप्रभु ने ले अवतार ॥

श्रीधर पिता सुशीमा माँ को, मुदित किया था अपरम्पार।
किन्तु जगत जंजाल जानकर, हुए तपस्वी तज घर-बार॥

(९)

घोर तपश्चया कर उनने, कर्मों को काटा तत्काल।
पूजा अर्चा कर देवों ने, समोशरण को रचा विशाल॥
दिव्य ध्वनि सुन करके प्रभु की, भव्य जीव हो गये निहाल।
तीर्थंकर छटवें कहलाये, जिनका लिखता हूँ यह हाल॥

(१०)

कातिक शुक्ल त्रयोदशी को, जन्म दिवस का करते मान।
चैत सुदी तेरस का दिन था, हुआ उन्हें जब केवलज्ञान॥
फागुन बदी चतुर्थी के दिन, मोक्ष गये थे श्री भगवान।
पीछे मे प्रतिमा को प्रभु की, पूज्य बनाई दे सन्मान॥

(११) दोहा

परम्परा से पद्म की, प्रतिमा बनी विशाल।
बाडा में प्रगटी वही, जिसका कहूँ हवाल॥

(१२)

पाँचें थी वैशाख शुक्ल की, सम्वत दो हजार औ एक।
सूर्योदय का समय मनोहर, चिड़ियों का था राग अनेक॥
कौन जानता था इस दिन को, अतिशय का होगा अभिषेक।
होगी मूर्ति प्रगट प्राची की, पूजेंगे जिसको हर एक॥



मूल्या का मामा जगन्नाथ जाट

(१३)

देवोंकृत यह चमत्कार था, या प्रभावना का था भाव।
मूला जाट न समझा इसको, उसके मन में हुआ प्रभाव॥
मामा ने कारण बन करके; दिया अलग होने का ताव।
लिया फावड़ा और कुदाली; लगा बनाने अपनी नाव॥

(१४)

माँ का वह इकलोता बेटा, था गरीब औ दीन महान्।
सोचा उसने बना झोपड़ी, जीवन की रक्खूंगा शान॥
फिर न कहेगा मुझ से कोई, घर से निकलो हो नादान।
मिहनत करके पेट भरूंगा, कर लूंगा पूरा अरमान॥

(१५)

अब न सहूँगा बात किसी की, चाहे निकलें तन से प्राण।
गौरव हीन मनुष्य ही क्या है, जो सहते रहते अपमान॥
बालक हूँ पर मन तो मेरा; युवकों से भी बड़ा महान।
क्यों न बनूं फिर वीर व्रती मैं; भगवन करना बुद्धि प्रदान॥

(१६) दोहा

भावों में भरपूर हो; लेकर प्रभु का नाम।
खोद रहा था नींव को; और न था कुछ काम॥



मूल्या नींव खोद रहा है

(१७)

लगा रहा था पूरी ताकत; निर्भय होकर मूला जाट ।
तन पसेव से भींग रहा था; किन्तु निकाली मिट्टी काट ॥
उसी समय उसने क्या देखा; गोल गोल पत्थर का पाट ।
फिर खोदा तब सावधान हो; मिले उसे भारी सम्राट ॥

(१८)

चौंक पड़ा वह फेंक फावड़ा, खड़ा रहा फिर हो चुपचाप ।
लगा सोचने बला कहाँ की, लेली मैंने अपने आप ॥
सुन लेगा राजा यदि घटना, तो देगा भारी सन्ताप ।
पिण्ड छुड़ाऊँ कैसे इससे, मन में करता पश्चाताप ॥

(१९)

उसी समय कुछ लोग गांव के, आकर देने लगे सलाह ।
यह प्रतिमा श्री जिन की प्यारी, जल में डालो इसे अथाह ॥
मूला को तब ज्ञान हुआ फिर. मिटी सकल वह दिल की दाह
उमड़ पडा अति प्रेम हृदय से, पूजा की हुई उसको चाह ॥

(२०)

था चबूतरा पास एक में, प्रतिमा को उस पर स्थाप ।
लगा पूजने भक्ति भाव से, भूल गया सारा सन्ताप ॥
आस पास यह चर्चा फैली, आपस में हो कथा कलाप ।
जैना जैन सभी नर नारी, आने लगे वहाँ पर आप ॥

मूल्या जाट भगवान की पूजा कर रहा है



(८१) दोहा

कुछ घटना ऐसी हुई, उसी समय दो चार।
चमत्कार से पूर्ण जो, देवोंकृत आचार॥

(२२)

साता और असाता दोनों, पाप पुन्य का समझो खेल ।
कर्म उदय जब जैसा होता, वैसा मिलता उसको मेल ॥
संयम नियम और दर्शन से, पूरी बढ़ती सुख की बेल ।
होने वाला यदि अनिष्ट हो, तो उसको वह देता ठेल ॥

(२३)

पाप पुण्य के फल की गाथा, जैन शास्त्र में लिखी अनन्त ।
जैसी करनी वैसी भरनी, बतलाते हैं सदा महन्त ॥
भाव सहित भगवन की पूजा, दुःखों का कर देती अन्त ।
सुन लो इसकी कथा सुनाता, गर्मी का था मौसम अन्त ॥

(२४)

सावन भादों का महिना था, हरियाली थी चारों ओर ।
रुम झुम पानी बरस रहा था, घटा घिरी थी अति घनघोर ॥
अँधियारी कारी छाई थी, जिसे चाहते चित से चोर ।
चमक चमक जाती थी बिजली, थे प्रसन्न पशु पक्षी मोर ॥

(२५)

इसी समय कुछ यात्री गण भी, पहुंच चुके थे बन के बीच ।
गाड़ी वाला हाँक रहा था, अन्धा होकर आँखें मींच ॥
जहाँ तहाँ वर्षा के जल से, हुई राह में थी अति कीच ।
डग डग पर रुक करके फिर भी, बैल रहे थे गाड़ी खींच ॥

(२६) दोहा

उसी समय कुछ दूर से, आज्ञा मिली कठोर।
गाड़ी रोको अन्यथा, सजा मिलेगी घोर॥

(२७)

चौंक पड़े सब घबराये भी, किन्तु लिया साहस से काम।
प्रभु के दर्शन कर लौटे थे, लिया इसी से उनका नाम॥
"नाडा वाले बाबा की जय," बोल उठे इक साथ तमाम।
पद्म प्रभु का सुमरन करके, खड़े देखने को अंजाम॥

(२८)

इतने में कुछ डाकू आये, माँगा उनने माल तमाम।
आना कानी यदि कुछ की तो, होगा सबका काम तमाम॥
धमकी दे गहिना गुरिया ले, लौट रहे थे अपने धाम।
काँप रहे थे थर थर सब ही, मौन बने थे दिल को थाम॥

(२९)

क्या देखा तब सबने मिलकर, खडा सामने एक जवान।
डाकू दल से कडक बोलता, वापिस दो इनका सामान॥
नहीं अन्यथा तुम्हें बाँध कर, ले जाऊँगा जेल स्थान।
बोली उसकी जोरदार थी, ऊँचा पूरा था बलवान॥

(३०)

डाकू डरे तुरत ही उनने, ज्यों का त्यों लौटाया माल।
गाडी को फिर हाँक वहाँ से, हुआ साथ में बन प्रतिपाल॥

स्टेशन शिवदास पुरा तक, पहुंचाया सबको तत्काल।
सभी प्रेम से लगे देखने, डाकू समझे उसको काल॥

(३१) दोहा

सुहागमल जी हैं बड़े, सेठ निगोत्या जान।
जयपुर वासी पर घटी, घटना यही महान॥

(३२)

जयपुर की थी ब्रह्मचारिणी, धन्धा करती थी दूकान।
निकल गई कुछ रकम बक्स से, दीवाली के पर्व महान॥
समो शरण में पद्म प्रभो के, उसको पता मिला वरदान।
बाई ने तब तारा से सब, नोट लिये अपने पहचान॥

(३३)

यह तो थी मामूली घटना, और सुनो तुम देकर ध्यान।
दिल्ली वाले नव दम्पत्ति थे, रूप नारायण नाम सुजान॥
बाड़ा वाले पद्म प्रभो के, अतिशय का करने सन्धान।
आये थे फिर दर्शन करके, लौट रहे थे निज स्थान॥

(३४)

गाड़ी पर पहुंच चुका था, कपड़ा लत्ता औ सामान।
जाने को तैयार खड़े थे, इतने में आया कुछ ध्यान॥
भूल गया हूं घड़ी हाथ की, ठहरा था मैं जिस स्थान।
दौड़े देखा पूछा ताछा, किन्तु न पाई चीज महान॥

(३५)

हो निराश जब लौट रहे थे, साथी ने तब कहा विचार।
पद्म प्रभो के समोशरण में, जाकर अपनी करो पुकार॥
निश्चय से होता सब कुछ है, संशय से होता अविचार।
सुना कथा स्तुति कर लौटे, मन में छाई शान्ति अपार॥

(३६)

उसी समय रोती चिल्लाती, आई नारी एक अजान।
देकर घड़ी कहा उसने तब, माफ करो मुझको भगवान॥
नाथूराम चौधरी सागर, बड़े प्रतिष्ठित औ धनवान।
आँखों देखा हाल सुनाया, जिसे लिखा हमने दे मान॥

(३७) दोहा

चरणों में श्री पद्म के, मन भौंरा को रोक।
ध्यान मगन जो जन हुआ, गया उन्हीं का शोक॥

(३८)

लेकर जन्म सभी मर जाते, दुःखों की जड़ है संसार।
धर्म सहाई एक जीव का, कर देता भव सागर पार॥
धर्म विमुख जो चर्या करते, काम क्रोध मद लोभ अपार।
मर कर योनि भूत की पाते, या जाते नरकों के द्वार॥

(३९)

उमा स्वामी के मोक्ष शास्त्र में, भूतों का मिलता उल्लेख।
किन्तु यहाँ पर समोशरण में, लग जाती है उन पर मेख॥

गन्धोदक की महिमा भारी, गणना के बाहर है लेख।
यदि चाहो तो बाड़ा में आ, आँखों से अपनी लो देख ॥

(४०)

मदनलाल सेठी निवास के, रहते हैं जयपुर के पास।
पाँच साल से पत्नी उनकी, रोगों से जकड़ी थी खास ॥
तब बाड़ा में आकर उनने, पद्म प्रभो पर कर विश्वास।
दर्शन कर गन्धोदक छींटा, भगी भूतनी छोड़ लिबास ॥

(४१)

नन्दकिशोर वकील भेलसा, चार वर्ष से थे हैरान।
चक्कर आते चिल्लाती थी, पत्नी को था रोग महान ॥
माला फेरी पद्म नाथ की, हुई भूतनी अन्तर्ध्यान।
गया रोग हालत है अच्छी, करती है प्रभु का गुणगान ॥

(४२) दोहा

पोस्ट कुचामन में बड़ा गूगड़वार मुकाम।
तीन साल से थी दुखी, छगन लाल की वाम ॥

(४३) दोहा

पूजन कर श्री पद्म का, सात बार जय बोल।
शरण गिरी भगवान के, रोग गया बे मोल ॥
अब अच्छी है देश में, प्रभु का जपती नाम।
भूतों का डर मिट गया, करती घर का काम ॥

(४४)

मोजमाबाद जिला जयपुर में, रहते हैं श्री मुन्नालाल ।
भूतों की माया में फस कर, पत्नी थी उनकी बेहाल ॥
गन्धोदक की मार न सहके, भगी भूतनी तब तत्काल ।
तीन बार हो चुके यहाँ पर, अब अच्छा है उनका हाल ॥

(४५)

सागर जिला खुरई में रहते, नामी गुरहा चुन्नीलाल ।
उनका पत्नी को कुछ दिन से, भूत लगे थे होकर काल ॥
सता रहे थे दुख देते थे, गलने नहीं देते थे दाल ।
हार चुके थे सभी तरह से, तब बाडा में हुए निहाल ॥

(४६)

नित्य शाम को दीपक लेकर, कर आरती भव्य महान ।
भक्ति भाव से एक साथ मिल, प्रभु का करते हैं गुणगान ॥
उनका घी अतिशयकारी है, जिसे लगाते कर सन्मान ।
रोग शोक सब भग जाता है, भूतों की घुटती है जान ॥

(४७) दोहा

जय बोलो श्री पद्म की, मन मन्दिर में थाप ।
दुख दरिद्र सब दूर हों, मिट जावें सन्ताप ॥

(४८)

जैन किशोर जैन की स्त्री, एक साल से थी अति मन्द ।
सिरसा गंज गाँव में रहते, भुला चुके थे सब आनन्द ॥

पद्मपुरी बाड़ा में आकर, चले गये सारे दुख दन्द ।
चार भूत औ तीन भूतनी, निकल गईं देकर सौगन्ध ॥

(४६)

बच्चे होकर मर जाते थे, बाधा थी भूतों की खास ।
पाँच साल से सता रहे थे, छोड़ी थी जीवन की आस ॥
आया ध्यान चलो बाडा में, पद्मप्रभो के बनकर दास ।
सफल हुई पत्नी की काया, धन्य हुए बनारसी दास ॥

(५०)

बद्री प्रसाद जैन गौरमी, रहते अभी भिंड में हाल ।
भूतों की बाधा से पत्नी, पहिली हुई काल के गाल ॥
शादी हुई दूसरी फिर भी, रहने लगी बहुत बेहाल ।
तब बाड़ा के पद्मप्रभो ने, किया उन्हें आरोग्य विशाल ॥

(५१)

विद्याधर काला बी० ए० हैं, हेडमास्टर टोड़ाराय ।
बहुत दिनों की बीमारी से, क्षीण हुई थी उनकी काय ॥
चलना फिरना पढ़ना लिखना, छोड़ चुके थे अपनी आय ।
दर्शन करते ही बल पाया, अतिशय का था यही उपाय ॥

(५२) दोहा

दर्शन से श्रीपद्म के, नष्ट होय सब पाप ।
पुन्य बढ़े दिन दिन घड़ी, जिसका है नहि नाप ॥

(५३)

लक्ष्मी पुरी अनाथालय के, छात्र एक थे बच्चन लाल ।
मैग्यद उनको आया करते, बीत चुके थे ढाई साल ॥
गन्धोदक के छींटा लगते, बकने लगे भगे तत्काल ।
धन्य धन्य बाडा के बाबा, पद्मनाथ हो दीन दयाल ॥

(५४)

राम दयाल ब्रह्म जैपुर के, रैवन्यू में करते काम ।
अभी अभी मावन में आये, पत्नी को लेकर बीमार ॥
समोशरण में ज्योंही पहुंचे, बाबा की बोली जयकार ।
गया रोग चंगी हुई काया, पूर्ण हुआ बल का संचार ॥

(५५)

दरिया गंज देहली के थे, पन्नी नायक मुन्नालाल ।
साथ पडौमिन के भोजन से, उनकी स्त्री थी बेहाल ॥
तीन माह का हमल गिरा था, भूतों का था ये सब जाल ।
पद्म स्वामी के दर्शन से, निकल गई बाधा तत्काल ॥

(५६)

मामचन्द दिल्ली वाले हैं, रहते सदा सदर बाजार ।
उनकी बहिन हुई जर्जर थी, आठ साल से थी बीमार ॥
किया इलाज बहुत वैद्यों का, बैठ रहे थे हिम्मत हार ।
अन्तिम शरण पद्म की पाकर, लौटे थे खुशहाल अपार ॥

(५७) दोहा

बाड़ा अतिशय क्षेत्र है, पद्म प्रभो का धाम।
दर्शन से पातक कटें, पूर्ण होय सब काम॥

(५८)

दानवीर सरदारी मल जी, बड़े प्रतिष्ठित औ सरदार।
पुत्री सूरज देवी के प्रिय, बालक को था चढ़ा बुखार॥
मुन्नो देवी दम्पति के सह, पहुँचे जब प्रभु के दरबार।
पीड़ा मिटी आंख की सारी, हुआ पुत्र चैतन्य अपार॥

(५९)

दर्शन करते पल में यह सब, देखा सबने विविध प्रकार।
लगा खेलने सन्नो प्यारा, जो पहिले था अति बेजार॥
जय के नारे लगे पद्म के, जय हो पद्म जयति कर्तार।
महिमा भारी पद्मपुरी की, समझे तब राजेन्द्र कुमार॥

(६०) दोहा

गद् गद् हो श्री पद्म के, भक्ति भाव से पूर्ण।
पूजा की दर्शन किये, हुये दुःख सब चूर्ण॥

(६१)

अग्रवाल गोयल गौत्रज हैं, जगन्नाथ औ जीवाराम।
शहर आगरा जुम्मामसजिद, पीछे है कपड़े का काम॥
उनके भाई श्री गोपाल को, चक्कर आया एकाएक।
खाना पीना छूट गया था, छूट गया था सभी विवेक।

(६२)

मृगी रोग को समझ सभी विधि, किये उसी के सब उपचार।
घर पर जाकर रोग दूसरा, देखा सबने विविध प्रकार॥
हुआ शाम का चक्र खाट से, उठ उठ भागें चीख पुकार।
बड़ा कठिन था समय रात का, घबराहट थी अपरम्पार॥

(६३)

चार आदमी पकड़ रहे थे, रात भयानक थी सुनसान।
वैद्य डाक्टर कितने आये, हार गये मारे विद्वान॥
ऐसी घबराहट के अन्दर, पद्मपुरी का आया ध्यान।
जय बोली जब पद्म प्रभो की, गया रोग पा लिया निदान॥

(६४) दोहा

उसी समय हम लोग सब, गये पुरी तत्काल।
जय बोली श्री पद्म की, पूजा रची विशाल॥

(६५)

भूत भूतनी तीन थी, बकती थीं बेहाल।
भागी फिर दरबार से, चंगे हुये गोपाल॥

(६६) दोहा

माला फेरो पद्म की, पूर्ण करो विश्वास।
होंगी निश्चय से सभी, पूरी मन की आस॥

(६७)

क्या सोचा है कभी आपने, क्षण भंगुर है ये संसार।
लेकर जन्म सभी मर जाते, राजा रंक और सरदार॥

काल बली ने उनको खाया, कहते हैं जिनको अवतार।
फिर तो हम अज्ञानी प्राणी, बच न सकेंगे किसी प्रकार॥

(६८)

नाच रही है मौत हमेशा, सिर पर होकर पूर्ण सवार।
क्या जाने कब किस पर टूटे, उसकी ताल अचानक मार॥
ठाठ पड़ा तब रह जावेगा, माल खजाना औ व्यापार।
साथ न जावेगा कोई भी, माता पिता पुत्र परिवा,॥

(६९)

सच्चा साथी एक धर्म है, नाविक को जैसे पतवार।
चाहे जैसी नदी चढ़ी हो, कर देता वह उसको पार।
भवसागर से तरना चाहो, तो करियेगा पर उपकार।
उसकी विधि ऋषियों ने हमको, बतलाई है चार प्रकार।

(७०)

दान वही कहलाते जो हैं, औषधि अभय शास्त्र आहार।
इनको देकर पुन्य कमाओ, लोगों का होगा उपकार।
अमर रहेगा नाम तुम्हारा, धन का होगा सद्व्यवहार।
इन्द्र आदि पद मिलते जिससे, ऐसा सुन्दर है व्यापार॥

(७१) दोहा

माल पड़ा रह जायगा, निकल जायेंगे प्राण।
इससे तो अच्छा यही, कर दीजे कुछ दान॥

(७१)

ज्ञान दान या शास्त्र दान का, यह युग देता है उपदेश ।
ज्ञानी बनो स्वयं फिर जग में, पहुँचा दो घर घर संदेश ॥
जिनवाणी की यही विनय है, है प्रभावना अंग विशेष ।
जैन धर्म का मर्म सुनाओ, फैले जिससे देश विदेश ॥

(७२)

अनेकान्त मय धर्म अहिंसा, है अकाट्य औ परम उदार ।
बड़े बड़े विज्ञानी तक ने मान लिया उसका आभार ॥
उसे छिपा कर रखने से अब, अविनय होगी अपरम्पार ।
सच्चा सेवक गुरु का वह है, जो पाले उनका आचार ॥

(७३)

छपा-छपा कर ग्रन्थ अनेकों, बांटो उनका करो प्रचार ।
जिससे पढ़कर अज्ञानी भी, मोक्ष मार्ग का पावे द्वार ॥
लाखों में यदि एक मनुष्य भी, चलने लगा धर्म अनुसार ।
तो समझो कृत कृत्य हुए तुम, सुधर गया परलोक अपार ॥

(७४)

देखो अन्य अजैनी भाई, समय देखकर करते काम ।
लाखों की संख्या में अपने, ग्रन्थ बांटते हैं बिन दाम ॥
जैन जाति में दानी तो हैं, जो दे देते सब धन धाम ।
किन्तु समय का ध्यान नहीं है, इससे फल होता है वाम ॥

(७५) दोहा

समय देखकर जो करें, दुनिया के सब काम ।
वही सफलता पा सकें, अमर करें निज नाम ॥

(७७)

ऐसा मौका बहुत दिनों में, आज मिला हमको है सार ।
बाड़ा ग्राम जिला जयपुर में, अतिशय की है धूम अपार ॥
परम दिगम्बर पद्मप्रभो की, प्रतिमा प्रगटी परमाकार ।
वीतराग मय सुन्दर छवि है, मन मोहक है अपरम्पार ॥

(७८)

जैनाजैन सभी नर नारी, चमत्कार को देख अनेक ।
भक्ति भावसे आते जाते, करते हैं पूजा अभिषेक ॥
इष्ट सिद्धि होती है उनको जो करते हैं मन में टेक ।
भूत भूतनी तो जाते ही, भग जाती हैं एका एक ॥



भाग्यशाली मूल्या जाट

(७६)

मूला जाट पुन्य शाली है, जिसका हुआ अमर है नाम।
पृथ्वी खोद निकाला जिसने, बना रहा था जो निज धाम।।
ऐसा नाम न होगा उनका, जो करते लाखों का काम।
पूजन भजन आरती भी तो, छाप बिना उसके बेकाम।।

(८०)

अब कर्त्तव्य हमारा ये है, देकर दान रंक धनवान।
धनवावें मन्दिर मिल करके, जिससे होवे सम्यक ज्ञान।।
अतिशय की आवाज जगत में, फैला दो करके सन्मान।
यही उचित है दानी धनको, अब तो देवो खुल कर दान।।

(८१) दोहा

जो कुछ कहते आप हैं, करो उसी अनुसार।
मन वच तन की एकता, सत्य अहिंसा सार।।

(८२)

यदि देते कुछ वचन आप हैं, बनवाने को कुछ स्थान।
तो वह द्रव्य देव की होकर, हो जाती निर्माल्य समान।।
फिर उसको निज धन्धे में ले, पाप कमाते हैं अनजान।
इससे तो यह अच्छा होता, तुरत दान करता कल्याण।।

(८३)

ऐसे दानी जैन जाति में, पड़े हुए हैं बहु धनवान।
धर्म हेतु जो दे सकते हैं, लाखों की संख्या का दान।।

धन जन से सम्पन्न विवेकी, मिलन सार हों सरल उदार।
सच्चे वक्ता मान रहित हों, सदा नम्र हों फिर दातार॥

(६३)

पूरी शक्ति लगा कर सेवा, करते हैं सब की निष्काम।
सफल कामना उनकी होती, पूरा होता है सब काम॥
पुन्य उदय जब जिसका होता, बढ़ता उस ही का है नाम।
पद्मपुरी में हमने देखा, ऐसा एक व्यक्ति गुणधाम॥

(६४)

श्रीपुत सेठ गुलाब चन्द जी, रुपाहेड़ी वालों का नाम।
इसी तरह से फैल रहा है, जिसे जानते लोग तमाम॥
भवन पाटनी अभी बनाया, जो आता है सब के काम।
गायन शाला संघ सभा में, देते योग और धनधाम॥

(६५)

पद्मपुरी में सबसे पहिले, हुए अग्रसर थे ही आप।
फिर जयपुर के और गांव के, लोगों ने आकर दी छाप॥
क्षेत्र बढ़े सब शक्ति लगावें, मिट जावें सारे सन्ताप।
यही भावना उनकी रहती, पद्म प्रभो के सच्चे दास॥

(६६)

चिरंजीवें ऐसे मनुज, हो उनका कल्याण।
धर्म हेतु जो सब तजें, तन मन धन औ प्राण॥

(९७)

मोरीलाल गौत्र गोधा है, जयपुर में रहते सरदार।
जागीरदार है बड़े प्रतिष्ठित, अच्छे हैं आचार विचार।
सैंतिस बीघा दी जमीन है, मन्दिर बनने को आधार।
बिना लगान माफ दी जिनने, धन्यवाद उनको कई बार॥

(९८)

छत्री के बनवाने वाले, सेठ गुलाब चन्द जी मौर।
रहते है इन्दौर खास में, क्या ही उत्तम है वह ठौर॥
मोती लाल पुत्र है उनके, करते काम लगा कर दौर।
होगा सिद्ध कार्य मन उनका, यदि होगी इच्छा भी और॥

(९९)

मौरानीपुर झांसी वाले, दयाचन्द जी सिंघई सुजान।
कपड़े का धन्धा करते है, चलती उनकी खूब दुकान॥
पत्नी रोग रहित होने पर, दिया पाँच सौ का है दान।
कार्य शुरू होने पर कमरा, बनना देंगे उसी प्रमान॥

(१००)

उल्फतराय जैन देहली, सब्जी मण्डी पता निशान।
कपड़े के व्यापारी पूरे, करते सदा प्रभु का ध्यान॥
मैनावती धर्म पत्नी थी, बाधाओं से घिरी महान।
किये पद्म के दर्शन जब मे, चँगी हो करती गुणगान॥

(१०१)

स्वर्गी श्रीयुत न्यादरमल जी, दिल्ली के नामी सरदार।
बेला देवी पत्नी उनकी; हैं आदर्श रूप भरतार॥
पद्मपुरी में प्रगट हुये जब, पद्मा स्वामी परम उदार।
एक कटहरा तब बनवाया, उल्फत की मंशा अनुसार॥

(१०२) दोहा

रोग रहित जो तन करे, है वह ईश समान।
सदा सर्वदा दीजिये, इससे औषधि दान॥

(१०३)

सेठ प्रेमसुख जी दानी हैं, आये थे बाड़ा में हाल।
फर्म गनेशीलाल प्रेमसुख कलकत्ता में खूब निहाल।
दर्शन करके पद्म प्रभो का, वचन दिया उनने तत्काल।
पन्द्रह दस हजार मिल करके, बनवा देंगे औषधि हाल॥

(१०४)

दानवीर सरदारीमल जी, गोटे वालों का है नाम।
जैनरत्न हैं बड़े प्रतिष्ठित, जिसे जानते लोग तमाम॥
दीन दुखी विद्यार्थी गण को, देते वास और धन धाम।
खुला हृदय है दान मान में, आते हैं सब ही के काम॥

(१०५)

रक्षक आप अनाथालय के, ट्रस्टी क्या हैं मानों प्राण।
बिम्ब प्रतिष्ठा धर्म कार्य में, अभिनन्दन पाते सन्मान॥

लाखों तो दे चुके अभी तक, फिर भी करते रहते दान।
शौम्य शान्त निर्भीक शेर हैं, सदा निभाते अपना आन॥

(१०६)

मैनेजर हैं मंत्री भी हैं, बी० ए० हैं शीतल परसाद।
रंग बिरंगे बहु धन्धे हैं, पर रखते हैं मन की याद॥
पड जाते हैं पीछे जिसके, उसको देते पूरा लाद।
बाधाओं से कभी न डरते, चाहे जो हो वाद विवाद॥

(१०७)

फरुख नगर से दिल्ली आये, अभी हुये हैं तेरा साल।
पीपल वाली गली आपकी, नाम पिता का पन्नालाल॥
मंत्र शास्त्र के पूरे ज्ञाता, ज्योतिष रत्न देखने भाल।
महावीर औ पद्म प्रभो के, सच्चे सेवक अनुपम लाल॥

(१०८)

पद्म प्रभो को हृदय मे जो करते गुण गान।
जग मे वह नर हैं सदा, पाते पूरा मान॥

(१०९)

देवी चन्द्रकान्ता दिल्ली, पत्नी श्रीयुत छुट्टनलाल।
सदा वाले कहलाते हैं, हैं आदर्श रूप भरतार॥
पद्मपुरी में पद्मप्रभु के, दर्शन को आये थे हाल।
एक सिंहासन दिया आपने, जिस पर शोभित श्रीवरलाल॥

(११०)

श्रीयुत बाबूराम नाम है, फ़र्म वड़ा है हीरालाल ।
रहते सदर बजार देहली, रखते सूत आदि हैं माल ॥
पद्मपुरी में आये जब ही, गद गद हुये देखकर हाल ।
वचन दिया दो हाल बनाने, जो बन जावेंगे तत्काल ॥

(१११)

मनी राम ज़ी रामनाथ जी, अग्रवाल रेवाड़ी ग्राम ।
छै सौ रुपया दिये प्याऊ को, धौव्य फण्ड में होगा नाम ॥
श्रीमती सुलतानसिंह जी, रायबहादुर की प्रिय बाम ।
कलश बड़ा सुन्दर दे करके, वचन पूर्ण कर देगीं काम ॥

(११२)

रहें दरीबकला देहली, सेठ श्रीयुत धन्नालाल ।
पूर्णचन्दजी नाम फर्म का, अग्रवाल हैं सदा निहाल ॥
प्याऊ अथवा धर्म क्षेत्र को, दान दिया होकर खुशहाल ।
प्यास बुझावेंगे यात्री गण, हों अमीर अथवा कंगाल ॥

(११३) दोहा

दान सदा मन से करो, होगा पर उपकार ।
स्वयं पुन्य पाओ तभी, कहता धर्म पुकार ॥

(११४)

महावीर प्रसाद देहली, दाँतों के डाक्टर हैं खास ।
रहते आप पहाड़ी धीरज, अथवा मन्दिरजी के पास ॥

दो सौ और तीन सौ गज का, बनवा देगें एक निवास।
जिसमे यात्री ठहर सकेगें, पद्म प्रभो के बनकर दास ॥

(११५)

सेठी श्रीयुत भोरीमल जी, उनके भाई अजित प्रसाद।
खुशहाल राय कटरा के वासी, दिल्ली रहती सबको याद ॥
श्रीमन चन्द्रकीर्ति जी मुनि के, केश लोंच होने के बाद।
दान दिया बाड़ा में आकर, पद्म प्रभो के छूकर पाद ॥

(११६)

महावीर परमाद सेठश्री, लाला सोहन लाल सुजान।
उमराव गली दिल्ली में रहते, धर्म कर्म से हैं गुणवान ॥
दस हजार से पन्द्रह तक का, दिया आपने उत्तम दान।
सड़क बने शिवदासपुरा से, पद्मपुरी तक है अनुमान ॥

(११७)

श्रीयुत मदनलालजी जैनी, पद्मप्रभो के पक्के दास।
गुप्ता एण्ड कम्पनी मन्ची, परफ्यूमर्स पता हैं खास ॥
दिल्ली सदर बाजार मध्य में, करते सदा आप हे वास।
देगें दान अन्त में तब ही, होगी उनकी पूरी आस ॥

(११८) दोहा

सदा जपो प्रभु पद्म को, निशि वासर लो नाम।
पद्म पद्म श्री पद्म जी, सफल करो सब काम ॥

(११६)

बाजार सदर दिल्ली में रहते, दौलतराम जिनेन्द्र प्रसाद ।
अतिशय देखा पद्मप्रभो का, मन में करके उनको याद ॥
चंचल लक्ष्मी चलती फिरती, समझ लिखा फिर यह संवाद ।
दस सौ रुपया का निवास गृह, बनवा देगें छोड़ विवाद ॥

(१२०)

देवी चन्द्रावती देहली, धर्म कर्म करतीं व्यापार ।
सिद्धोमल जी कागज वाले, पता चावड़ी है बाजार ॥
जहां प्रगट श्री पद्म हुए हैं, वहां चबूतरा का आकार ।
बनवा देंगी वचन दिया है, यह है सुन्दर विशदविचार ॥

(१२१)

सेठी श्रीयुत बिन्द्रावन जी, फर्म बड़ा बम्बई में नाम ।
एण्ड सन्स पाया धूनी में, होता उनका सुन्दर काम ॥
तीस हजार रकम के भीतर, लगा सकेंगे अपना दाम ।
बेदी या दरवाजा अथवा बनवा देगें यात्रा धाम ॥

(१२२)

सेठ गनेशीलाल साथ में, चम्पालाल जाति के वीर ।
दो सौ फुट लम्बी हो चौड़ी, अस्सी फुट के समझो तीर ॥
एक धर्मशाला बनवाकर, हर लेंगे यात्री की पीर ।
ब्यावर वाले आप कहाते, है उदार अतिशय गम्भीर ॥

(१०३) दोहा

पद्म प्रभो के दर्श से, मिट जाता है क्लेश।
दर्शन इससे नित करो, करो न गलती लेश ॥

(१०४)

श्रीयुत श्यामलाल जी मीकर, मूलचन्द भाई विद्वान।
कुआ सहित बनवा देवेंगे, यात्री को उत्तम स्थान॥
सुख से ठहरेंगे जिसमें सब, निर्मल जल का होगा पान।
शिवराम पुरा स्टेशन होगी, चमन मगन जो है वीरान॥

(१०५)

चम्पालाल रामस्वरूप जी, ब्यावर का है वचन अमोल।
लम्बी चौड़ी गज पचास की, यात्रा शाला देंगे खोल॥
नक्शा से तब जान पड़ेगा, सीधी होगी अथवा गोल।
किन्तु बनेगी पद्मपुरी में, निश्चित है उनका यह बोल॥

(१०६)

लादूलाल सेठ जी नामी, भाई मानकचन्द सुजान।
रहते हैं इन्दौर ग्राम में, करते सब उनका सन्मान॥
वेदी एक बनाने को है, दिया आपने सुन्दर दान।
जिसमें अतिशय कारी भारी, शोभित होंगे श्री भगवान॥

(१०७)

मालिक फर्म सहारनपुर के, सेठो लाला शान्ति प्रसाद।
हैं सराफ धर्म बड़े ही, दान मान में करते याद॥

यथा नाम वैसा ही गुण है, देते जग को सुख संवाद ।
वेदी में पच्चीकारी का, वचन दिया है छोड़ विवाद ॥

(१२८)

कैलाशचन्द्र जी गंगलवाल हैं, फर्म धीर जी औ रघुनाथ ।
रहते हैं इन्दौर जिला में, खुला हुआ है उनका हाथ ॥
वेदी में सोने की रचना, बनवा देंगे मन के साथ ।
भ्राजमान होंगे तब उसमें, पद्म प्रभो जी जग के नाथ ॥

(१२९) दोहा

अज अविनाशी हैं प्रभो, गुण अनन्त की खान ।
बाड़ा के श्री पद्म को, नमूँ नमूँ धर ध्यान ॥

(१३०)

गोत्र काशलीवाल आपका, भँवरलाल जी नाम उदार ।
ग्राम केकड़ी मारवाड़ में, करते हैं उत्तम व्यापार ॥
एक कोठरी बनवा देंगे, पानी पीने को भण्डार ।
वचन खुशी से दिया पूर्ण है, अपनी ही इच्छा अनुसार ।

(१३१)

लाला रूपचन्द के आत्मज, जिला सहारनपुर के खास ।
भाई श्री प्रकाशचन्द्र जी, लघु भ्राता हैं पद्म प्रकाश ॥
वचन दिया है एक कोठरी, बनवा देंगे उच्च निवास ।
पद्मपुरी के पद्म प्रभो में, उनका है पूरा विश्वास ॥



मुनि सुकुमाल पर उपसर्ग [पृष्ठ ८५]

(१३२)

ज़िला फतेपुर गाँव टूंडला, रहते उसमें चन्दनलाल।
राज बहादुर नाम दूसरा, सदा सहायक जैसे ढाल॥
बाड़ा पद्मपुरी में आकर, दर्शन करके हुए निहाल।
दस सौ का तब वचन दिया है, कोई काम बने तत्काल॥

(१३३)

पांड्या श्री गम्भीरमल्ल जी, सेठ कुचामन के श्रीमान।
बीस हजार एक सौ रुपया, दिया धर्मशाला को दान॥
गहरे हैं नामानुसार ही, नहीं उन्हें कुछ भी अभिमान।
मिलनसार हैं बड़े प्रेम से, होता है उनका सन्मान॥

(१३४) दोहा

सुख चाहो यदि लोक में, करो पूर्ण सन्तोष।
मिथ्यामद त्यागो सभी, दान करो सब कोष॥

(१३५)

हैं सर्राफ श्रीमान बड़े ही, हीरालाल कन्हैयालाल।
नीमच सदर छावनी वाले, पूज्य पिता के प्यारेलाल॥
दर्शन करके पद्मप्रभो के, वचन दिया उनने तत्काल।
दो हजार रुपयों का उत्तम, बनवा देंगे पूरा हाल॥

(१३६)

सेठ श्यामसुख बालचन्द जी, गंगवाल है गोत्र अनूप।
ग्राम किशनगढ़ आन्ध्र प्रान्त में, बड़ा मान है जैसे भूप॥

पद्मपुरी में भक्तों के हित, देंगे बना हाल का रूप।
छाया उत्तम बन जावेगी, फिर न पड़ेगी सर पर धूप॥

(१३७)

सेठी श्रीयुत चिमनलाल जी, गद्दी का पद निशनदयाल।
हाकम होटल ग्राण्ड यही है, जिसमें रखते उत्तम माल॥
मसूरी के दृश्य मनोहर, पद्मपुरी से फीके हाल।
थाँम दिये चाँदी के उनने, शोभा होगी परम विशाल॥

(१३८)

कलकत्ता के श्री प्रकाश जी, चन्द्र सहित है नाम विशाल।
बड़तल्ला स्ट्रीट छियन्तर, मिले मार्फत मुन्नालाल॥
फर्म द्वारकादास बड़ा है, पता लिखाया अपना हाल।
बाड़ा में बनवा देंगे, एक कोठरी देकर माल॥

(१३९) दोहा

प्यास बुझाना जीव की, है उत्तम आचार।
पद्मपुरी में खोल दो, प्याऊ का भण्डार॥

(१४०)

सेठी श्रीयुत सूरजमल जी, गोदाजी कहलाते आप।
साभर में रहते हैं सज्जन, करते उत्तम वचनालाप॥
प्याऊ के हित दान दिया है, मिट जाये जिससे सन्ताप।
एक मुश्त दस सौ रुपया था, मासिक पन्द्रह का है नाप॥

(१४१)

नेका वाले हलवाई जी, मदनलाल जी है शुभ नाम।
घी वालों के रस्ते पर ही, करते अपना सुन्दर काम॥
है बजार जौहरी जयपुर, ठीक ठिकाना उनका धाम।
चौदह ग्यारह चवालीस को, देखा अतिशय बाड़ा ग्राम॥

(१४२)

इच्छा हुई द्रव्य कुछ देवें, जिससे हो सबका कल्याण।
गृह त्यागी सज्जन जो आवें, उनको बने एक स्थान॥
पूर्ण व्यवस्था हो जाने पर, हो सकता है धर्म ध्यान।
पद्मपुरी में पद्मप्रभो के, भक्तों का होगा सन्मान॥

(१४३)

जैन धर्म का मर्म शान्ति से, समझ सकेंगे सब विद्वान।
पाठन पठन शास्त्र का होगा, हों विचार आदान प्रदान॥
चिनमूरत चैतन्य अलौकिक, निज स्वरूप का होगा ज्ञान।
इससे बढ़कर दुनियां में क्या, हो सकता है बढ़ कर दान॥

(१४४) दोहा

मदनलालजी धन्य हो, जिनका हुआ विचार।
उदासीन आश्रम खुले, होवे धर्म प्रचार॥

(१४५)

रजधानी दिल्ली में रहते, लाला जी श्रीलाल सुजान।
नाई की मण्डी कहलाती, गोत्र काशलीवाल महान॥

पद्म प्रभो के दर्शन करके, आया मन में ऐसा ध्यान ।
एक कोठरी बनवा देगें, बाड़ा में उत्तम स्थान ॥

(१४६)

महावीर परसाद जैन हैं, मंगल सेन फर्म का नाम ।
गोटे वाले आप कहाते, मेरठ उनका सुन्दर ग्राम ॥
पद्मपुरी में नेत्र तृप्त कर, प्यास बुझाने का है धाम ।
बनवा देगें पन्द्रह सौ में, जो आवेगा सब के काम ॥

(१४७)

रफीगंज है जिला गया में, रहते देवूलाल दयाल ।
गूदड़मलजी नाम साथमें, गोत्र काशलीवाल विशाल ।
दिया धर्मशाला को दस सौ, बन जावेगा जिसमें हाल ।
नाम आपका पद्मपुरी मे, लेगें युवा वृद्ध और बाल ॥

(१४८)

लखनऊ नगर पुरानी बस्ती, पार्क अमीनाबाद विशाल ।
तथा काम ही किया आपने, यथा नाम ज्यों कुन्दनलाल ॥
चार पाइयों का तखमीना, मिलने पर सब देगें माल ।
जिसपर यात्री शयन करेंगे, गावेंगे प्रभु की जयमाल ॥

(१४९) दोहा

बाड़ा अतिशय क्षेत्र है, पद्म प्रभो का धाम ।
दर्शन से पातक कटें, पूर्ण होंय सब काम ॥

(१५०)

श्रीयुत किशनलाल जी राँका, और चतुर्भुज नामी फर्म ।
नागपूर इतवारा वासी, करते सदा उच्च हैं कर्म ॥
निर्भय होकर जन समाज में, बतला देते सारा मर्म ।
एक तीन सौ दिया दान में, सबसे बड़ा समझते धर्म ॥

(१५१)

श्रीयुत ककरी के सुपुत्र हैं, फूलचन्द औ सूबालाल ।
महावीर परसाद पाटनी, आप टिकारी के हैं लाल ॥
पोस्ट कर्धना जिला गया में, बिता रहे हैं अपना काल ।
पन्द्रह सौ में एक कोठरी, बनवा देंगे हो खुशहाल ॥

(१५२)

लाला मुन्शी लाल नाम है, और जोहरीचन्द उदार ।
नगर मुज्जफर में रहते हैं, कहलाते हैं ठेकेदार ॥
धन्धा करते धर्म कर्म से, पता ठीक छोटा बाजार ।
बाड़ा में बनवा देने का, लिया कोठरी का है भार ॥

(१५३)

श्रीयुत किशन लाल जी जैनी, नागपूर है मध्यप्रदेश ।
एक्सचेंज का बेंक इण्डिया, पता न समझो गलती लेश ॥
मन्दिर के बन जाने पर ही, दिया जायगा दान विशेष ।
ऐसा लिखा चेत्र बुक में है, यही आपका है आदेश ॥

(१५४) दोहा

करते जो संकल्प हैं, पद्मपुरी में लोग।
पूरे होते हैं सभी, मिट जाते हैं रोग॥

(१५५)

जयपुर के सरदार बड़े हैं, श्रीयुत ठोल्या गोपीचन्द।
राज्यमान श्रीमान सभी विध, रहते महलों में सानन्द॥
जवारात का धन्धा करते, पन्नीलाल सेठ के नन्द।
वैभव शाली पुन्यवान हैं, नहीं जानते कुछ छल छन्द॥

(१५६)

मन्दिर और धर्मशाला के, बनवाये हैं कई स्थान।
प्रकृति शान्त है सरल बड़े ही, मिलता है सब से सन्मान॥
करते रहते दान सदा हैं, आता है जब उनको ध्यान।
आखिर लक्ष्मी पुत्र आप हैं, और जौहरी उच्च महान॥

(१५७)

सोना और सुगन्ध साथ में, उपमा के लायक हैं आप।
धर्म कर्म में सदा निरत हो, भगवन की जपते हैं जाप॥
बढ़ा चढ़ा है काम आपका, पूर्व पुन्य का यही प्रताप।
अब करते सो फल पावेंगे, जैन धर्म का सच्चा नाप॥

(१५८)

दशरथ के सुत राम लखन से, भाई मिलकर रहते चार।
प्रेम परस्पर में पूरा है, है उत्तम उनका आचार॥

बड़े सभापति चांड़ा के हैं, क्षेत्र कमेटी के आधार।
ऊपर नाम लिया है जिनका, रक्खे कुशल उन्हें करतार ॥

(१५६) दोहा

जैन धर्म में आप की, श्रद्धा पूर्ण विवेक।
पद्म प्रभो को भाव से, देते माथा टेक ॥

(१६०) दोहा

चाड़ा के श्री पद्म का, है प्रताप कुछ और।
दाता सब के हैं प्रभो, तीन लोक शिरमोर ॥

(१६१)

जनता के प्रतिनिधि मिल करके, सभा समिति का होता रूप।
मिलता है अधिकार उन्हें फिर, कार्य करें सब के अनुरूप ॥
निज कर्तव्य और पद रक्षा, करते सज्जन सदा अनूप।
यदि विवाद हो किसी तरह का, तो बन जाते जैसे सूप ॥

(१६२)

इंजिन बनकर उस गाड़ी के, जो कहलाता दिल्ली मेल।
लेता खींच सभी डिब्बों को, चाहे जैसी होवे रेल ॥
यदि सन्मुख आता है कोई, तो देता है उसको ठेल।
ठीक समय पर पहुंचा देता, रखता ध्यान न करता खेल ॥

(१६३)

पटरी पर से उतर न पाता, चलता जाता अपनी चाल।
कल पुरजे औ शक्ति भाप की, उसके भीतर पक्का माल ॥

रहता पोला किन्तु ठोस हो, करता पार खाई औ ताल ।
बाधा विघ्न उपस्थित हो तो, समय देखकर देता टाल ॥

(१६४)

नेता मुखिया मुख जैसा हो, पोषण करता सारे अंग ।
पक्षपात तज सदा एक सा, सज्जन का करता सत्संग ॥
हवा परख कर डोर खींचता, गिरे न जिससे चढ़ी पतंग ।
खिले फूल सा मोहक होता, मानो पूरा बना अनंग ॥

(१६५) दोहा

पद्मपुरी में पद्म के, सेवक ऐसे लाल ।
जो तज कर सब कामना, पूजा करें विशाल ॥

(१६६)

क्षेत्र कमेटी के मन्त्री जी, हैं उत्साही औ विद्वान ।
मिलनसार हैं सच्चे वक्ता, जयपुर में पाते सन्मान ।
हिन्दु हिन्दी भाषा के हित, अर्पण करते अपने प्राण ।
लोक हितैषी नेता पूरे, नहीं संकुचित रखते ज्ञान ॥

(१६७)

अगुआ होकर आगे बढ़ते, सहते रहते तीखे बान ।
सभी तरह के रंगों का है, धन्धा करते उच्च दुकान ॥
रंग में रहते सदा रंगे हैं, राग अनेक एक सुरतान ।
काम किसी का यदि कुछ होवे; तो कर देते तुरत महान ॥

(१६८)

नहीं चाहते मान बड़ाई, करते काम सदा चुपचाप ।
नाम प्रकाशन से डरते हैं, दूर भागते अपने आप ॥
वैर विरोध घटाने के हित, होता उनका कार्य कलाप ।
चतुर चितेरे के सदृश हैं, जो देते हैं उत्तम छाप ॥

(१६९)

मन्त्री क्षेत्र कमेटी बाड़ा, सम्पादक पूरे गुणवान ।
श्रीयुत गुलाब चन्द जैन हैं, काला उनका गोत्र महान ॥
पद्मप्रभो की सेवा के हित, अर्पण करते शक्ति प्रदान ।
समय समय पर आते जाते, रखते अपना पूरा ध्यान ॥

(१७०) दोहा

मन्दिर श्री प्रभु पद्म का, हो जावे तैयार ।
यही भावना आप की, सफल करे करतार ॥

(१७१)

बड़ा कठिन है काम क्षेत्र का, आते जहां मूर्ख विद्वान ।
सब का सेवक बन कर रहना, निर्धन हो चाहे धनवान ॥
धर्म क्षेत्र की उन्नति के हित, यथा योग्य करना सन्मान ।
मौका पाकर शान्त चित्त हो, सहना भी पड़ता अपमान ॥

(१७२) दोहा

भिक्षुक बनना है बुरा, अपने तन के काज ।
किन्तु लोक हित के लिये, तज दो सारी लाज ॥

(१७३)

आवश्यकता बता क्षेत्र की, भिक्षुक बनकर लेना दान।
अपने तन का स्वार्थ छोड़ कर, धर्म हेत यदि जावे प्रान॥
तो भी चिंता रंच न करना, आगे बढ़ना जिनका ध्यान।
वही हितैषी धर्मवीर हैं, कर सकता सब का कल्याण॥

(१७४)

निंदा स्तुति चाहे जो हो, किंतु न देते उस पर कान।
निश्चित पथ पर चलते जाते, जो रखते हैं पूरा ज्ञान॥
कभी न विचलित होते उससे, बना लिया जो बिन्दु निशान।
सच्चे सेवक मिलें भाग्य से, छोड़ चुके हों जो अभिमान॥

(१७५)

कुशल प्रबन्धक राग द्वेष तज, जो रखते हों ऐसा ज्ञान।
धर्मोन्नति हो प्रेम भाव से, मद से होता है नुकसान॥
ऐसे नर यदि मिलें क्षेत्र को, तो होवे भारी उत्थान।
शीघ्र काम पूरा हो जावे, हो प्रभावना धर्म महान॥





श्री आचार्य शान्तिसागरजी

॥ ॐ ॥

श्रावक-धर्म ।

(१७६) दोहा

सुख चाहे जग में सभी, दुख से भागें दूर।
किंतु काम उल्टे करें, माया में हो चूर ॥

(१७७)

खेल खेलते बालकपन में, मौज उडाते करके ब्याह ।
द्रव्य मिले मिलती ही जावे, द्रव्य वान में बनूं अथाह ॥
देख दूसरों की बढ़ती को, होती मन में भारी डाह ।
लडके बच्चे भाई बन्धु हों, बढती जाती इसकी चाह ॥

(१७८)

इच्छा पूरी कभी न होती, नित्य नया होता है दौर ।
आकुलता बढ़ती ही जाती, बनू सभी का मैं सिर मौर ॥
जगका ये व्यापार सदा से, होता आया है इस ठौर ।
सुख चाहो तो बनो निराकुल, है उपाय इसका नहिं और ॥

(१७९)

सच्चे सुख का मार्ग बताया, पद्मप्रभो ने ले अवतार ।
इसके पहिले ऋषभदेव से, बना हुआ था जो आधार ॥
छोडी माया जग की सारी, स्वयं बने जगदीश अपार ।
फिर जीवों को शिक्षा देकर, किया जगत का है उपकार ॥

(१८०)

दुखिया भाई उसको सुनकर, मनन करें पालें आचार।
तो फिर सब कष्टों से बचकर, हो जावेगा बेड़ा पार॥
मोक्ष मिलेगा जहाँ अलौकिक, सुख का है पूरा भंडार।
आवागमन न होगा फिर से, छूट जायगा ये संसार॥

(१८१)

उसकी विधि भगवन ने हमको, बतलाई है एक प्रकार।
हो सकती है नहीं अन्यथा, उलट जाय चाहे संसार॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरित से, मिथ्या का होता परिहार।
तीनों मिलकर मोक्ष मार्ग का, बतला देते सच्चा द्वार॥

(१८२)

सप्त तत्व जो कहे गये हैं, आगम की आज्ञा अनुसार।
देव शास्त्र औ सच्चे गुरु में, श्रद्धा करना पूर्ण प्रकार॥
सम्यक दर्शन कहलाता है, जो कर देता है उद्धार।
सीढ़ी बनी प्रथम यह पक्की, जैन धर्म का समझो सार॥

(१८३)

तत्वों को जैसे का तैसा, हो विपरीत न बिल्कुल ज्ञान।
असली रूप दिखा देता जो, न्यूनाधिक हो नहिं अज्ञान॥
उसको प्राप्त कराने वाले, कहे चार अनुयोग महान।
भगवन गणधरादि श्री मुनि हैं, उसको कहते सम्यक ज्ञान॥

(१८४)

हिंसा चोरी झूठ परिग्रह, मैथुन पाप कहाते हीन।
राग द्वेष औ इनको तजकर, निज स्वरूप में होना लीन॥
ज्यों अगाध निर्मल सागर में, स्थिर रहती मानो मीन।
है सम्यक चारित्र ज्ञान मय, जो चेतन को करे नवीन॥

(१८५)

यद्यपि निश्चय नय से चेतन, शुद्ध बुद्ध औ है अविकार।
किन्तु आदि से लगे कर्म हैं, छिपा इसी से है आकार॥
मेघों का परदा हटने से, रवि दिखता ज्यों पूर्ण प्रकार।
अथवा समझो चमकदार है, ढकी राख से है अंगार॥

(१८६)

पटल हटाने हेतु पुरुष ही, करते हैं पुरुषार्थ अपार।
मुनि ग्रहस्थ के भेद मात्र से, होता है उनका आचार॥
क्रमशः अथवा एक साथ ही; अपने अपने बल अनुसार।
पालन करके इसे भव्य जन, कर्मों को कर देते चार॥

(१८७)

छोड़ परिग्रह निरारम्भ हो, रखें न कुछ भी अपने पास।
परम दिगम्बर वीतराग हो; सब प्रकार की छोड़ें आस॥
सहें परीषह करें तपस्या, जंगल में ही करते वास।
है उनका आचार महाव्रत, राग द्वेष जो करता नाश॥

(१८८)

किन्तु नहीं कर सकते जो जन, ऐसा उत्तम धर्माचार।
वे ग्रह में रह करके अपना, लेवें बना उच्च आचार॥

क्षुल्लक ऐलक उदासीन हो, धर्म ध्यान का करें विचार।
पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत, पालें ये शिक्षाव्रत चार॥

(१८९)

हिंसा मिथ्या चोरी मैथुन, और परिग्रह भारी पाप।
स्थूल रुप से उन्हें छोड़ना, कहा अणुव्रत प्रभु ने आप॥
निरतिचार इनको करने से, मिट जाता सारा सन्ताप।
मिलती देह देव की उत्तम, अवधिज्ञान होता है आप॥

(१९०)

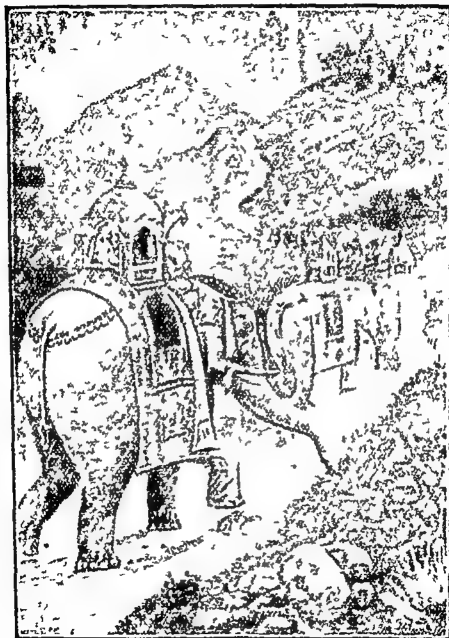
मन वच तन से त्रस जीवों का, करना नहीं रंच संहार।
अतीचार हैं पाँच इसी के, उनको तजना सभी प्रकार॥
छेदन भेदन भोज्य निवारण, पीड़न बहुत लादना भार।
कहा अहिंसा अणुव्रत इसको, श्रावक का सच्चा व्यवहार॥

(१९१)

बोले झूठ न झूठ बुलाये, कहे न दुखदाई संवाद।
निन्दा गिरवी झूठ वचन तज, लेख आदि भी लिखना बाद॥
सत्य अणुव्रत धारी पूरे, व्यर्थ न करते वाद विवाद।
भूल न होती कभी उन्हों से, अतीचार को रखते याद॥

(१९२)

है अचौर्य व्रत परधन हरना, भूला पड़ा गिरा हो माल।
लेना देना छोड़ सभी विध, अतीचार का करें संभाल॥
नाप तौल में कम बढ़ करन, शुद्ध चीज में खोटी डाल।
इत्यादिक बातों से बचना, रखना सदा इसी का ख्याल॥



मेढक की मुक्ति [पृष्ठ ८६]

(१६३)

परनारी से नेह न करता, सब कुकर्म से रहता दूर।
अति तृष्णा स्त्री में रखना, बचन बोलना अति ही क्रूर॥
वेश्या से सम्बन्ध मिलाना, रति में अति होना चकचूर।
ये अतिचार छोडने से ही, ब्रह्मचर्य व्रत होगा पूर॥

(१०४)

हो प्रमाण धन धान्यादिक का, अधिक न रक्खे अपने पास।
सावधान हो वाहन लादे, लोभ आदि का करदे नाश॥
अति सग्रह करना वर्जित है, छोड़ो उनकी झूठी आस।
है परिमाण परिग्रह सुन्दर, व्रतधारी करते विश्वास॥

(१६५)

अणुव्रत पॉच कहे ऊपर है, उनमें जोडो गुणव्रत तीन।
आठ मूल गुण हो जाते है, यही धर्म में सदा नवीन॥
मद्य मॉस मधु महामलिन है, होना इसमें कभी न लीन।
सदाचार संयम से रहना, जिससे होता है दुख हीन॥

(१६६)

ग्यारह सीढ़ी श्रावक की है, क्रमशः करना उनको पार।
दर्शन शुद्ध समझता है ये, क्षण भंगुर है सब संसार॥
शरणागत हो पद्मप्रभो के, तत्व मार्ग का जाने सार।
दर्शन प्रतिमा धारी श्रावक, कहलाता है व्रती अपार॥

(१९७)

माया मिथ्या औ निदान अति, तीन शल्य कांटे समजान।
देखो इनको सदा सर्वदा, अणुव्रत पाले पूर्ण प्रमाण॥
सात शील को धारण करता, अतीचार का रखता ध्यान।
व्रत प्रतिमाधारी श्रावक है, होता उनको सम्यक्ज्ञान॥

(१९८)

तीन बार करके आवर्तन, चार दिशा में त्रय त्रय बार।
छोड़ परिग्रह सारे जग के, हो जाता है पद्माकार॥
या खड़गा सन करके प्यारी, मन वच तन का तज व्यापार।
संध्या करता तीन काल में, सामायिक का व्रती अपार॥

(१९९)

आठें और चतुर्दश होतीं, हर महिने में पूर्ण चार।
उपवासादिक उनमें करता, शक्ति लगाकर पूर्ण प्रकार॥
अशुभ काम की चर्चा तज कर, करता है जो धर्माचार।
प्रोषधधारी प्रतिमा वाला, कहलाता वह व्रती अपार॥

(२००)

शाखा गाँठ बेर फल कच्चे, अथवा होवें सुन्दर फूल।
शाक बेर बहु बीज आदि को, तजता है वह सब ही मूल॥
अप्राशुक चीजों में रत हो, करता नहीं कभी वह भूल।
सचित्त त्याग प्रतिमा का धारी, पालेता संयम का फूल॥

(२०१)

गेहूँ चावल दूध दही घृत, चाहे होवे जल की धार ।
अन्न पान औ खाद्य लेह्य सब, कहते जिनको चार प्रकार ॥
जीवों पर जो दयावान हो, तज देता निशि का आहार ।
रात्रि भुक्त त्यागी श्रावक का, यह बतलाया शुभ आचार ॥

(२०२)

विष की बेल गंधयुत नारी, मल से पूर्ण भरे हैं अंग ।
मन वच तन से उनको तजना, कभी न करना उनका संग ॥
कभी न विचलित होना पथ से, चाहे आवे स्वयं अनंग ।
ब्रह्मचर्य है सप्तम प्रतिमा, होते जिसको लखकर दंग ॥

(२०३)

जिससे हिंसा होती अति है, करना नहीं वही व्यापार ।
सेवा खेती आदि परिग्रह, तज देना आरम्भ अपार ॥
सब कामों से हो विरक्त फिर, करता उत्तम धर्म विचार ।
आरम्भी हिंसा का त्यागी, समझो उसको पूर्ण प्रकार ॥

(२०४)

दस प्रकार के बाह्य परिग्रह, औ ममता को देते त्याग ।
शील और सन्तोषी होकर, समझे अपना उत्तम भाग ॥
निज स्वरूप में तन्मय होकर, ईंधन में देता है आग ।
प्रतिमा त्याग परिग्रह की है, पालें तजकर सब ही राग ॥

(२०५.)

छोड़ सभी आरम्भ परिग्रह, कामों से रहते हैं दूर।
सम्मति देते नहीं जरा भी, कुछ भी होवे चकनाचूर॥
लौकिक बाधा को सह लेते, इच्छा को रोके भरपूर।
अनुमति त्यागी व्रतधारी, वे कहलाते हैं पूरे शूर॥

(२०६)

ग्रह को तज जंगल में जाकर, दीक्षा लेता मुनि से खास।
ब्रत आदिक का पालन करके, रखता वस्त्र एक है पास॥
उत्तम श्रावक की प्रतिमा यह, जो करती कर्मों को नाश।
ऐलक छुल्लक कहलाते वे, छोड़ चुके जो घर का वास॥

(२०७)

ऊपर कहीं गई ही प्रतिमा, श्रावक का है उत्तम कर्म।
क्रमशः उन्नति करता जावे, जबतक मिले न मुनि का धर्म॥
करें शुद्ध आचार बाह्य के, मन से छोड़े राग कुकर्म।
भावों की बहिया में बह कर, निज स्वभाव का समझे मर्म॥

(२०८)

षट् आवश्यक कर्म ग्रही के, करता जावे धर के ध्यान।
श्री जिनेन्द्र की पूजा अर्चा, गुरु की भक्ति करे सज्ञान॥
जैन शास्त्र का अध्ययन करके, तत्वों का कर लेवे ज्ञान।
संयम तप औ दान करे नित, सच्चे श्रावक की पहचान॥

(२०६)

पूजा का उद्देश्य यही है, भाव शुद्ध हों उतने काल।
माया ममता और परिग्रह, तज देवें ग्रह का जंजाल॥
परम दिगम्बर वीतराग छवि, करवा देती हमको ख्याल।
ऐसा मौका मिलने पर ही कृत्य कृत्य होंगे तत्काल॥

(२१०)

इससे पूजन करना प्रभु की, है ग्रहस्थ का धर्म महान।
मिलती शान्ति अलौकिक जिससे, भावों का होता उत्थान॥
कर्म असाता कमती होकर, पुण्यवान होता धनवान।
बढता वैभव जग में भारी, जीवन का होता कल्याण॥

(२११)

है उपासना कर्म दूसरा, जैनी श्रावक का कर्तव्य।
नवधा भक्ति करो उन गुरु की, राग रहित जिनका मंतव्य॥
लंगा लंगोटी धूनी रमते, समझो उनको पूर्ण अभव्य।
साम्यभाव रख करके सब पर, श्रीजिन पर दृढ रहता भव्य॥

(२१२)

सम्यक दर्शन ज्ञान चरित ही, रत्नत्रय है धर्म महान।
कोई पाता स्वय उसे ही, कोई पाते कर सन्धान॥
जैन शास्त्र का अध्ययन करना, जिससे मिलता सम्यक ज्ञान।
वही मुक्ति का कारण समझो, इसमे पढो सदा धर ध्यान॥

(२१३)

मनन करो तत्वों का निशिदिन, जिनवाणी का हो आह्वान।
मोक्ष मार्ग की वही प्रकाशक, वही लोक में देती मान॥
अन्य न कोई कर सकता है, जीवों का ऐसा कल्याण।
नमों नमों कर जोर नमों सब, मिल कर छेड़ो उसकी तान॥

(२१४)

संयम से रहना सुखकर है, उसके बिना सभी कुछ व्यर्थ।
इन्द्रिय मन को रोक हमेशा, करो न कुछ भी कार्य-अनर्थ॥
दया भाव रक्खो प्राणी पर, पालो धर्म उन्हीं के अर्थ।
धर्म अहिंसा जग में भारी, फल मिलता उसका अव्यर्थ॥

(२१५)

बाहर भीतर से विशुद्ध हो, चंचल मन को इक दम रोक।
सामायिक प्रतिदिन ही करना, रखे न मन में कुछ भी शोक॥
प्रतिभा होगी प्रगट इसी से, प्रभा पूर्ण होगा इह लोक।
ऐसा ही तप तपो सन्तजन, जिससे सुधरेगा परलोक॥

(२१६)

छटवां कर्म ग्रही का उत्तम, देना दान चार प्रकार।
उनके नाम कहाते ये हैं, औषधि अभय शास्त्र आहार॥
खोल औषधालय निज धन से, करो गरीबों का उपकार।
रोग रहित होने पर वे ही, कर सकते हैं धर्म प्रचार॥

(२१७)

क्षमा बड़ों को उचित कहा है, छोटों से यदि हो अपमान।
तो निज बल को रोक शान्ति से, अभयदान का दो वरदान।
वही शूर सन्तोषी है जो, निर्बल को बल दे बलवान।
पालन करते इसको सज्जन, कहलाते हैं वही महान॥

(२१८)

मुनि को अथवा सत्पात्रों को, नित्य कराना भोजन पान।
पहिले उन्हें जिमा कर पीछे, स्वयं जीमना उत्तम दान॥
साधर्मी भाई जो आवें, तो करना उनका सन्मान।
अन्य विधर्मी हट्टे कट्टे, नहीं पात्र इनको लो मान॥

(२१९)

शास्त्र दान या ज्ञान दान को, समझो तन के नेत्र समान।
इसके बिना न दिखता जैसे, इस जग का कुछ भी सामान॥
त्यों मिथ्या तम को हरता है, तेज सूर्य सम अनुपम ज्ञान।
करो शास्त्र का दान इसी से, घर-घर में हों ग्रन्थ महान॥

(२२०)

मन्दिर और धर्मशाला भी, बनवादो उत्तम स्थान।
धर्म साधना होती इनमें, औ प्रभावना पूर्ण महान॥
बाड़ा में श्री पद्म प्रभो के, अतिशय का क्या करें बखान।
छोटेलाल बुद्धि है थोड़ी, कीर्तन बड़ा मेरु सम जान।

(२२१)

केवल लिखा भक्ति वश होकर, नहीं और था कुछ भी ध्यान ।
अन्तरतम से हुई प्रेरणा, थी अव्यक्त और बलवान ॥
आता याद न कुछ भी मुझको, कैसे बल ये मिला महान ।
तन जर्जर है-है मन मैला, उसमें आये क्यों भगवान ॥

(२२२)

मेढ़ी जिला जबलपुर में ही, छोड़ चुके थे सब धन धाम ।
उदासीन हो शान्त चित्त से, जपते थे प्रभु का शुभ नाम ॥
तीन काल सामायिक करके, आसन पूरे प्राणायाम ।
पूजा औ चालीसा रच कर, करना पाठ यही था काम ॥

(२२३)

यद्यपि इच्छा थी बलशाली, किन्तु शक्ति से था लाचार ।
समझ लिया था प्रभु के दर्शन, कर न सकूंगा पूर्ण प्रकार ॥
बन्धुजनों के आग्रह को भी, रहा टालता बारम्बार ।
किन्तु शक्ति इक दम से आई, स्वयं दौड़कर आया द्वार ॥

(२२४)

उसी शक्ति को मैं नमूँ, जो अपूर्व दातार ।
महिमा उसकी कुछ कही, अल्पबुद्धि अनुसार ॥
पद्म प्रभो के नाम से, कट जाते सब पाप ।
निश्चय से स्तोत्र को, पढ़िये अपने आप ॥

आशा

आशा के बन्धन में प्राणी,–फंसा रात दिन रहता है।
हित अनहित सर्वस्व भुला कर बड़े वेग से बहता है॥
भ्राता माता पिता पुत्र से, अतिशय नाता करता है।
समय पड़े पर काम पड़ेंगे, यही सोच मन भरता है॥१॥

किन्तु भयंकर भूल उसे यह दोनों दीन डुबाती है।
आर्थिक और परमार्थिक मग से, निश्चय नित्य छुडाती है॥
जेठ मास की कठिन ताप में ज्यों मृग जल बन जाता है।
रेता को जल जान मृगा हा! अपने प्राण गंवाता है॥२॥

विश्व प्रपंच ये वर्तमान के औ अतीत के दृश्य महान।
आँखों देखे कानों सुनकर फिर भी बनते हैं अनजान॥
आशा तेरी बलिहारी है, अन्धे बहरे किये सुजान।
भूल भुलैया जान बूझ कर, खेल रहे प्राणी नादान॥३॥

अब आयेगी ऋतु बसन्त फिर, खूब गुलाब खिलेंगे फूल।
भौंरा इस आशा में बिंधता, कण्टकमय डाली के फूल॥
जग जाहिर है अमीचन्द की, घटना बंग देश की तूल।
आशा पर पानी फेरा था, मिली न थी क्लाइव से धूल॥४॥

जग की झूठी आशा छोडो, तोडो सब जग का नाता।
स्वारथ की जनता इस जग की, पिता पुत्र भ्राता माता॥

भर छलांग कर पार नदी को, बनकर रवि रथ के घोड़े ।
अखिल विश्व में शक्ति नहीं, फिर जो तेरे मग को मोड़े ॥२

ध्येय और धुन के पक्के मनु, धीर वीर गम्भीर मना ।
बाधा विघ्न विविध बन्धन को, अपने में लेते अपना ॥
इसमें घाव चौगुना करके, हो प्रशस्त वह मार्ग बना ।
रोक न सकते रंचक रोड़े, कर्म वीर नर का बढ़ना ॥३

बिखरी माल

होती है क्यों मूक वेदना, दारुण ज्वाला करुण पुकार ।
संचित प्रेम सिंधु बरसों का, फूट पड़ा क्यों अश्रु द्वार ॥
लगता क्यों सूना सूना सा, काट रहा है क्यों घर द्वार ।
तोड़ रहा कोई धीरे २ प्राणों की तन्त्री के तार ॥१॥

सतत् उदासी दाहक पीड़ा, व्याकुलता बढ़ती जाती ।
घोर निराशा छाई मन में, आशा अन्त न है पाती ॥
उती हृदय हिलोरें भारी, रह रह क्यों आंधी आती ।
उखट न जाये विटप कहीं यह, बिना तेल के ज्यों बाती ॥२॥

जीवन का आदर्श अलौकिक, प्रतिदिन की पूजा अभिषेक ।
लगा प्राण की बाजी जिसको, बना पाई थी सुन्दर एक ॥
बिखरी वह मोती की माला, दाने २ हुए अनेक ।
हाय मिलेंगे कब फिर से वे, फैले यहाँ वहाँ प्रत्येक ॥३॥

याद

आता याद समय बच्चों का, जब वे दौड़े आते थे।
लड़ते और झगड़ते थे, पर मोद इसी में पाते थे॥
दूध रखो कान्ति को इसमें, यों सुरेश कह जाते थे।
शीला ने शान्ती को मारा, भैया चपत जमाते थे॥

घोड़ा बनता था सुरेश का, शान्ति कान्ति चिल्लाती थी।
तीनों उस पर बैठ न जाते, तब तक चैन न आती थी॥
बड़े मौज मे झौलो २, कान्ती खेल खिलाती थी।
सग सुरेश के बहिन सुशीला, ऊधम खूब मचाती थी॥

दिन भर उनका आना जाना, रोना धोना और पुकार।
कस्फा भॉ कहती थी कान्ती, हाथ लगा कर मुह के द्वार॥
अपने आप सजा दे देती, हट्ट शब्द कह के उच्चार।
भैया कहके बड़े प्रेम से, शान्ति खिलाती थी पुचकार॥

आज वही हीडित पीडित सी, भैया भैया कह अनजान।
दौड २ कर जाती घर में, किन्तु वहॉ पाती सुनसान॥
देख दशा उसकी यह व्याकुल, धीरज खोते धीरजवान।
बाल हृदय भी कुसुम कली सा, खिचता बढ़ता होता म्लान॥

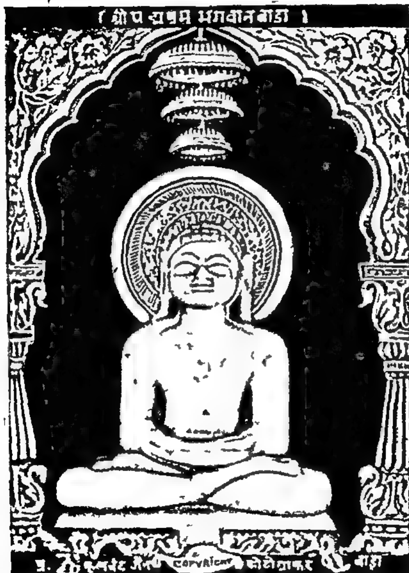




पद्म-विद्यालय पद्मपुरी के कार्यकर्ता गणः—क्रमशः १. श्री भूरामलजी। २. सेठ गुलाबचन्दजी पाटनी सभापति। ३. मास्टर छोटेलालजी–अधिष्ठाता। ४ सेठ कुन्दनलाल जी–संरक्षक। मुन्शी हजारीलाल जी वकील—मन्त्री। पीछे की लाइन में खड़े हुये—फूलचन्द जैन सदस्य प्र० का०। सि० कुन्दनलाल जैन उपमन्त्री।

श्री पद्मप्रभु–पार्श्वनाथ–महावीर

स्तोत्र–चालीसा–मेरी भावना



लेखक व प्रकाशक—मास्टर छोटेलाल जैन

सम्पादक "पद्मवाणी" कूचा सेठ, देहली।

राम कहानी

[अप्रकाशित पुस्तक के कुछ अंश]

चरण कमल में महावीर के, पहिले शीश झुका करके।
करूँ प्रार्थना जिनवाणी से, हरो दोष मेरे उर के॥
पूजनीय श्रीराम भरत हैं, मोक्ष गये मुनिव्रत धरके।
उनकी गाथा पुण्यकारिणी, मुख से निकली गणधर के॥
परम्परा से कही गई जो, मुनिजन ने सन्मानी है।
छोटेलाल नमन कर उनको, कहता राम कहानी है॥१

है आदर्श अनोखी गाथा, रघुकुल के उन लालों की।
वीरव्रती वैरागी पूरे, प्रेम पगे मतवालों की॥
क्षत्री होकर धर्म निभाया, रखी लाज भीषण रन में।
किया मान मर्दन रावण का, निर्भय हो विचरे वन में॥
गुजर चुकीं सदियों पर सदियाँ, फिर भी हुई न पुरानी है।
सबक सिखाती आज सभी को, अनुपम राम कहानी है॥२

पिता वचन को मान रामने, जंगल में मंगल माना।
काँटों की शैया को सिय ने, फूलों की माला जाना॥
वे मिसाल है जोड़ न जिसकी, सतियों में पाई जाती।
गीत मनोहर जिसके अब भी, घर घर में जनता गाती॥
अग्नि कुंडमें कूँद पड़ी थी, वही राम की रानी है।
सबक सिखाती आज सभी को, अनुपम राम कहानी है॥३

हम भी गावें तुम भी गाओ, गाओ सब मिल नर नारी।
राम लखनसे भाई होवें, सीता सी पतिव्रता नारी॥
भारत में फिर स्वर्ग बने तब, रामराज्य का सुख पावें।
लोक और परलोक सुधारें, शिव पदवी तक पा जावें॥
बहे प्रेम की गंगा जग में, दूध दही ज्यों पानी है।
सबक सिखाती आज सभी को, अनुपम राम कहानी है॥४

❀ ॐ ❀

श्री पद्मप्रभु स्तोत्र

[कीर्तन के समय नीचे लिखा प्रत्येक छन्द का चौथा चरण सबको मिलकर एक साथ बोलना चाहिये]

वे प्रभु पद्म हरें दुख मेरे,
विघन हरण मंगल करतार ॥

[छन्द ३१ मात्रा]

दीनबन्धु हैं, दयासिन्धु हैं, त्रिभुवन पति है जगदाधार।
वीतराग सर्वज्ञ देव हैं, ब्रह्मा विष्णु महेश अपार ॥
निर्बल के बल, निर्धन के धन, दीन हीन के प्राणाधार।
वे प्रभु पद्म हरें दुख मेरे, विघन हरण मंगल करतार ॥ १ ॥

माया झूठी काया झूठी, झूठा सब परिजन परिवार।
समय पडे पर काम न आता, पडता है जब उन पर भार ॥
सब अनाथ के नाथ दयानिधि, देकर साथ लगाते पार ॥२ वे प्रभु०

क्षण भंगुर है त्रण अंकुर सम, जीवन धन यौवन व्यापार।
चपला चमके नभ में जैसे, इन्द्र धनुष का हो आकार ॥
किन्तु नित्य हैं अजर अमर हैं, अज अविनाशी हैं अविकार ॥३वेप्रभु०

मूक वेदना है तन मन मे, देख जगत का मायाचार।
जहाँ देखता वहीं निराशा, आशा का टूटा पतवार ॥
अब तो शरणागत हूँ उनके, जो अशरण के शरण अपार ॥४वेप्रभु०

हों असाध्य भी साध्य रोग सब, वात पित्त कफ कुष्ट अपार।
विषम व्याल विकराल काल तो, हो जाता है क्षण में क्षार॥
ऐसा जिनका विजय मंत्र है, वन्दों उनको बारम्बार॥ ५वेप्रभु०

निशा घोर है दिशा न दिखती, बरस रहा जल मूसल धार।
नदी पूर में अन्ध खिवैया, नैया पड़ी बीच मझधार॥
अब तो बल है केवल उनका, जो करते भव सागर पार॥६वेप्रभु०

बादल दल का पटल फाड़कर, अटल सूर्य दिखता साकार।
फणि से मणि बाहर आता है, छिपी राख से ज्यों अंगार॥
त्यों निर्मल हैं परम ज्योतिमय, परम निरंजन परमाकार॥७वेप्रभु०

लगने पर दावाग्नि विपिन में, होते भस्म शेर तरु स्यार।
वड़वानल से जल जाते हैं, ज्यों जलनिधि के जीव अपार॥
त्यों जिनके प्रिय नाम मंत्र से, कर्म कटक हो जाता क्षार॥८वेपभु०

पाप ताप सब आतप मन के, रोग शोक सब विविध प्रकार।
क्षण में क्षय हो जाते जिससे, है वह औषधि दिव्य अपार॥
बलशाली है राम बाण है, महामंत्र जिनका नवकार॥९वेप्रभु०

चमक हीन यदि चिन्तामणि हो, हो अशोक तरु शोकागार।
पारस मणि निज पौरुष छोड़े, छोड़े सीमा जलधि अपार॥
किन्तु विपर्यय कभी न होगा, जिनका धर्म अहिंसा सार॥१०वेप्रभु०

नीर मीन को उबलटे मोर को, पथिकों को तरु छायादार।
देता है विश्राम लोक में, तब त्रिभुवन के सुख दातार॥
क्यों न करेंगे तृप्त भक्त को, जो कहलाते करुणागार॥११वेप्रभु०

हमने लेखा करके देखा, तो पाया झूठा संसार।
स्वारथ के सब संगी साथी, माता पिता पुत्र परिवार॥
एक सहारा सत्य उन्हीं का, जो सुनते निस्वार्थ पुकार॥१२वेप्रभु

नीर क्षीर को बिलगा देना, हंस वंश का है व्यापार।

कवियों की ये झूठ कल्पना, मोती चुगना भी निस्सार ॥
किन्तु सार है अटल सत्य है, न्यायपूर्ण जिनका अधिकार ॥१३वेप्रभु
वसुधा सुधा क्षीर सागर तो, रखते हैं परिमित आकार।
किन्तु लोक औ तीन काल में, होगा हुआ न है विस्तार ॥
ऐसी शक्ति अपरिमित वाले, जो अजेय वल के आगार ॥१४वेप्रभु०

रैवत गिरि पर संशयमति से, वाद हुआ जब विविध प्रकार।
तब प्रभावना पूरी करके, मिथ्यामत को दिया पछार ॥
कुन्दकुन्द स्वामी को जिनने, नामी दिया विजय का हार ॥१५वेप्रभु०

बुद्ध शिष्य से युद्ध छिड़ा जब, तब कुबुद्धि को दिया सुधार।
पट को फाड फोड कर घट को, तारा मद का कर संहार ॥
श्री अकलंक देव को जिनने, वीर बनाया वारम्वार ॥१६वेप्रभु०

श्रीमद कुमुदचन्द्र मुनिवर को, जाना पडा राजदरवार।
विधि विधान का खेल समझ कर, तभी हुए वह ध्यानाकार ॥
काटी विपति विपतिभजन ने, जो हैं विपति विदारन हार ॥१७वेप्रभु०

घोर विपिन में तप करते थे, ध्यान लगाकर जब सुकुमार।
काट रहा था तब वह तन को, पूर्व जन्म का वैरी स्यार ॥
उनके इस उपसर्ग वर्ग का, दूर किया था जिनने भार ॥१८वेप्रभु०

नृप ने मुनि को हुक्म दिया जब, दिखलाओ कुछ भारी कार।
अतिशय करो करो अन्यथा, मेरे मत को अंगीकार ॥
अभय किया तब अभय सूर्य को, दिल्लीपति के मदको मार ॥१९वेप्रभु०

लता बाज से सर्प मोर से, डरता चकवा चन्द्र निहार।
अनिल आप ही बुझ जाती है, पाकर पानी का आधार ॥
त्यों अघ-तम का क्षय हो जाता, जिन रवि को लख पूर्ण प्रकार ॥२०वे०
कपटी क्रूर कलंकी जग में, मिथ्यामत का करें प्रचार।

उन मतवाले मस्त गजों का, मस्तक देते आप विदार ॥
ऐसे नेता वीर विजेता, जिनवाणी के सिरजन हार ॥२१वेप्रभु०

कमल कीच से कनक खानि से, फणि से मणि मिलता निरसार।
गज मुक्ता भी रक्त सना है, उपमा योग न ये उपहार ॥
जिनकी अनुपम छवि के आगे, कोटि काम होते वेकार ॥२२वेप्रभु०

कामधेनु सुर कल्पवृक्ष सव, याचक जन के करुणागार।
देकर दान बने हैं दानी, कहलाते जो परम उदार ॥
उनके दाता दान शिरोमणि, अभिमत फल के जो दातार ॥२३वेप्रभु०

एक एक अंगों को छूकर, अंधे कहते गज आकार।
उनकी भूल बताकर जिनने, किया जगत का है उपकार ॥
ऐसे सम्यक धर्म प्रचारक, स्यादवाद नय के भण्डार ॥२४वेप्रभु०

पूर्ण प्रभाकर सूर्य कान्तमणि, जो मणियों का है सरदार।
और विश्व की सव आभा मिल, दिखती जुगनू के आकार ॥
ऐसे जिनके ज्ञानसूर्य का, तीन लोक में है विस्तार ॥२५वेप्रभु०

सुर सुरेन्द्र के इन्द्र लोक का, लेकर सुख सम्पत्ति भण्डार।
लोकसहित सव रखो तुला पर, किन्तु न होगा कुछ भी भार ॥
ऐसा जिनका सुख अनन्त है, अनुभव गम्य रम्य अविकार॥२६वेप्रभु०

विद्या वुद्धि ज्ञान तप वल है, दानमान आदिक आचार।
एक एक बलको पाकर के, बल वीरों की है भरमार ॥
किन्तु नमों मैं उन्हें विनय से, जो अनन्त वल के आधार ॥२७वेप्रभु०

ऊर्ध्व मध्य औ अधोलोक का, सव समेटकर सुषमासार।
सुई की नोंक वरावर भी हो, तो समझो कुछ कृपा किनार ॥
ऐसी जिनकी सुन्दरता है, भव्य मनोहर जन मन हार ॥२८वेप्रभु०

पन्नगारि से पन्नग जैसे, तेज तपाकर से तमकार।

छिन्न भिन्न हो जाता जड से, ज्यों तरुवर पर पडे तुषार ॥
त्यों जिनको लख मानी मन से, मिथ्या मद हो जाता छार ॥२९वेप्रभु०

रक रमापति हो जाता है, तिनका बढकर गिरि आकार।
पापी बनता पुन्यात्मा है, मिथ्याती सम्यक्त विचार ॥
जिनका अतिशय ही ऐसा है, स्वयमुसिद्ध अति सुखदातार ॥३०वेप्रभु०

खिलें फूल नभ मे अति चाहे, चाहे अचला चले अपार।
उलट फेर चाहे जितना हो, चाहे रुके गङ्ग की धार ॥
किन्तु रुकेगी धार न उसकी, कर्म मार जिनकी तलवार ॥३१वेप्रभु०

हो जावे विकराल व्याल यदि, मजु मनोहर मुक्ता हार।
अनिल शीत सम शीतल हो तो, इसमे क्या आश्चर्य अपार ॥
जिनकी कृपा कोर से होता, कठिन कुलिश पानी की धार ॥३२वेप्रभु०

चन्द्र सूर्य तारों की चाहे, चाल बदल जावे इकबार।
पृथ्वी पवन अनिल जल मिलकर, उलट पुलट करदें ससार ॥
किन्तु न मिथ्या होगें जिनके, सरल सत्य सन्देश विचार ॥३३वेप्रभु०

सुधा सुधाकर को तज देवे, सुमन माल होवे तलवार।
अमृत छोडे अमरपने को, गरल मौत को देवे मार ॥
किन्तु रहेगा सदा एक रस, जिनका शासन अमित अपार ॥३४वेप्रभु०

रत्नाकर मे रत्न नहीं हैं, तारों का पा सकते पार।
गिरि सुमेरुकी सम्पति कितनी, जो समता का करे विचार ॥
जिनका आगम अगम अगोचर, और अलौकिक अपरपार ॥३५वेप्रभु०

ज्ञान उजागर हैं नयनागर, शिव सुख सागर करुणागार।
अनेकान्त मय धर्म प्रवर्तक, और अहिंसा के अवतार ॥
छोटेलाल नमों उन ही को, जो अनादि अज ईश अपार ॥३६वेप्रभु०

अतिशय सहित रहित सब दूषण, भव्योंके भूषण उर हार।

धीर वीर गंभीर धनी हैं, ज्ञान आदि गुण के आगार ॥
जय जय जय त्रिभुवनके स्वामी, मुक्ति रमा के जो भरतार ॥३७वेप्रभु०
सुरपति नरपति और नागपति,दिशिपति आदि सभी संसार।
कल्याणक पाँचों में आकर, पद पूजा करते मनुहार ॥
धन्य २ निज भाग्यसमझते, जिनकी अनुपम कान्ति निहार॥३८वेप्रभु०
तृणवत बंधन तोड़ चुके जो, काम क्रोध मद लोभ अपार।
अक्षय पद को प्राप्त किया है, परम दिगम्बर हैं अविकार॥
सर्व श्रेष्ठ सिरताज शिरोमणि, सदा सहायक जगदाधार॥३९वेप्रभु०
समोशरण की रचना सुन्दर, सुर समूह कृत विविध प्रकार।
चार जाति के जीव वहाँ पर, बैठें तज कर वैर विकार॥
जिनकी वाणी सुन हितकारी, जीव जलधि से जाते पार ॥४०वेप्रभु०

श्री पद्मप्रभु-चालीसा

श्रीधर पिता सुसीमा माता, लिया कुसाम्बी में अवतार।
छोड़ा वैभव राज पाट सब, है अनित्य जाना संसार॥
अष्ट घातिया कर्म नष्ट कर, सिद्ध शिला पाई सुखकार।
वे प्रभुपद्म हरें दुख मेरे, विघन हरण मंगल करतार॥१वे प्रभु०
मानतुंग मुनिवर पर नृप ने, क्रोधित होकर किया प्रहार।
बन्दी ग्रह में डाल दिया था, बन्द किये अड़तालीस द्वार॥
तब सब ताले तोड़ दिये थे, सुनकर उनकी करुण पुकार॥२ वेप्रभु०
समन्तभद्र स्वामी को भस्मक, रोग हुआ था भूख अपार।
शिव का भोग स्वयं खाते थे, आपद धर्म समझ संसार॥
तब पिंडी फट प्रतिमा प्रगटी, प्रभा पूर्ण प्रिय चन्द्राकार॥३वेप्रभु०

वादिराज मुनिराज तपस्वी, धर्म धुरन्धर परम उदार।
कर्म योग से उन्हें हुआ था, कुष्ट रोग निकृष्ट अपार॥
तव कचन सम काया करके, किया नृपति को था लाचार॥४वेप्रभु०

दुष्ट दुशासन ने द्रौपति को, लाकर के अपने दरबार।
करना चाहा नग्न दिगम्बर, होकर मद मे चूर अपार॥
लाज रखी तब उसकी स्वामी, चीर बढ़ाकर अपरम्पार॥५वेप्रभु०

किया रामने प्रिय पत्नी को, घर से बाहर लगा कलक।
शील शिरोमणि सीता ने तब, अग्नि परीक्षा दी निश्शक॥
पावक हुआ नीर निर्मल सम, रचा सिंहासन पद्माकार॥६वेप्रभु०

सकट मोचन नाम तुम्हारा, भव सागर से करता पार।
है अमोघ गुरुमत्र महौषधि, जीवन मूर महा दातार॥
क्या समताकर सकता कोई, जिनकी महिमा अमित अपार॥७वेप्रभु०

केहरि तो वन पशु कहलाता, यद्यपि देता गज को मार।
सूर्य किरण भी तुच्छ मलिन है, जो तमको करदेती क्षार॥
जिनकी ज्ञान-ज्योति के आगे, सभी निछावर है ससार॥८वेप्रभु०

लोहा स्वय चला जाता है, पाकर चुम्बक का आधार।
लेता खींच जहर मुहरा है, ज्यों विषधर के विषका भार॥
त्यों पिशाचनी भूत डाकिनी, भगतीं सुनकर नाम्मोचार॥९वेप्रभु०

अजन चोर अजना नारी, मैंना सुन्दर अति सुकुमार।
मेढक नाग नकुल गज गणिका,सब पतितोंको दिया उबार॥
छोटेलाल नमों उन ही को, जो अनन्त गुण के भण्डार॥१०वेप्रभु०

श्री महावीर-चालीसा

[दोहा]

भक्ति भाव से ध्यान धर, महावीर गुणधाम ।
नमूँ सिद्ध परमातमा, सिद्ध करो सब काम ।।

[छन्द ३० मात्रा]

पाप निकन्दन भव भयभंजन, मनरंजन त्रिशला नन्दन ।
श्रीमन् महावीर स्वामी की, करूँ वन्दना मन वच तन ।।
हे अनाथ के नाथ खबर लो, सुन कर दुखिया का क्रन्दन ।
रक्षा करो हरो दुख मेरा, प्रणतिपाल हो तुम भगवन ।। २ ।।

अधम मीन सम दीन प्रभो मैं, बिन पानी के तड़प रहा ।
दीनबन्धु हो दयासिन्धु तुम, लो उबार कर दया महा ।।
पतित बहुत से तार दिये हैं, तारण तरण प्रभो तुमने ।
शरणागत प्रतिपाल कहाते, शरण गही इससे हमने ।। ३ ।।

अशरण शरण दयाल जगत के, दुख हरता हो सुख करता ।
रोग शोक सब दूर भगाओ, ध्यान तुम्हारा हूं धरता ।।
बार बार विनती करता हूँ, एक मात्र तुम ही अवलम्ब ।
डूब रही इस नैया को अब, पार लगाओ प्रभु अविलम्ब ।।४।।

पाया वैभव जग का सारा, छका न फिर भी तिलभर मन ।
पाप किया परिजन को पाला, भूल गया निज अतुलित धन ।।
टेर सुनो हे जग के स्वामी, मिले तुम्हारा वह अंजन ।
फेर मिटे माया का जिससे, होवे मेरा दुख भंजन ।। ५ ।।

मिथ्या माया तृष्णा के बस, पाप किये मैंने भारी ।
अब समझा तब बिलख रहा हूँ, स्वारथ की दुनिया सारी ।।

भूला भटका पथिक जान के, पथ दिखला दो हे स्वामी।
रुली बहुत कॉटों से काया, करो पुष्ट अन्तर्यामी ॥ ६ ॥

तबतक भजन न होता मन से, जबतक शक्ति न हो तन मे।
निर्बल कैसे जीत सकेगा, रिपुगण को भीषण रण मे॥
इसी हेतु बल प्रभो दीजिये, कर्मो को को काटूँ क्षण मे।
है वह शक्ति अनन्त वीर प्रभु, तेरे पद रज के कण मे ॥७॥

विदित जगत मे बात यही है, सकट हरण तुमी भगवन।
जब जब भीर पडी भक्तों पर, बचालिया उनको तत्क्षण।
मेरी बार लगी क्यों देरी, सङ्कट हरो शीघ्र स्वामिन।
जिससे निर्भय होकर मनसे, करूँ ध्यान तेरा निशिदिन ॥८

क्या से क्या हो जाता स्वामी, जो अनुकम्पा हो तेरी।
तिल का ताड रक का राजा, बनते लगे न कुछ देरी॥
रोगी पुष्ट निरोगी होता, भोगी होता है योगी।
छोटेलाल नमन करता है, हम पर भी करुणा होगी॥ ६ ॥

[दोहा]

करे पाठ चालीस दिन, जो जन धरके ध्यान।
सफल करें सब कामना, महावीर भगवान॥

मेरी भावना

जिसने राग-द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया॥
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसीमे लीन रहो ॥१॥

विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं।
निज पर के हित साधन मे जो निशदिन तत्पर रहते हैं॥

स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं ॥२॥

रहे सदा सत्संग उन्हीं का ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन ही जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे ॥
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ।
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ ॥३॥

अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ ॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ ॥४॥

मैत्रीभाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्रोत बहे ॥
दुर्जन क्रूर कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्यभाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परणति हो जावे ॥५॥

गुणी जनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ॥
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ॥६॥

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ, या मृत्यु आज ही आ जावे ॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥७॥

होकर सुख में मग्न न फूले, दुःख में कभी न घबरावे।
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहिं भयखावे ॥

रहे अडोल अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग मे, सहनशीलता दिखलावे ॥८॥

सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
वैर भाव अभिमान छोड जग, नित्य नये मगल गावे॥
घर घर चर्चा रहे धर्म की दुष्कृत दुस्कर हों जावें।
ज्ञानचरित उन्नतकर अपना मनुज जन्म सब फल पावें॥६

ईति भीति व्यापे नहिं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्म निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे॥
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा धर्म जगत् मे, फैल सर्वहित किया करे॥१०॥

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहि, कोई मुख से कहा करे॥
बन कर सब युगवीर हृदय से, धर्मोन्नति रत रहा करें।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुःख सकट सहा करें॥११

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

हे पार्श्वनाथ, परमेश, महोपदेशी,
हे अश्वसेन सुत, श्यामल शालिदेह।
धामागजात, करुणाकर लोकबन्धो,
तेरे सदाचरण ही मम आसरा है ॥१॥

ससार का तारण तरण तू कहाया,
तेरा किये स्मरण हर्ष न कौन पाया।
पाया सुभक्ति तव जो वह मोक्ष पाया,
तेरे सदाचरण ही मम आसरा है ॥२॥

विजितः । स्फुरन्नित्यानंदप्रशमपदराज्याय स जिनः महावीर ॥७॥ महामोहातंकप्रशमनपराकस्मिकभिषङ् निरापेक्षो बंधुर्विदितमहिमा मंगलकरः । शरण्यः साधूनां भवभयभृतामुत्तमगुणो महावीर० ॥८॥

महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्त्या भागेंदुना कृत । यः पठेच्छृणुयाच्चापि स याति परमां गतिं ॥६॥

अकलंकस्तुति

शार्दूलविक्रीडितछन्दः

त्रैलोक्यं सकलं त्रिकालविषयं सालोकमालोकितं साक्षाद्येन यथा स्वयं करतले रेखात्रयं सांगुलि । रागद्वेषभयामयांतकजरालोलत्वलोभादयो नालं यत्पदलंघनाय स महादेवो मया वंद्यते ॥ १ ॥ दग्धं येन पुरत्रयं शरभवा तीव्रार्चिषा वह्निना, यो वा नृत्यति मत्तवत्पितृवने यस्यात्मजो वा गुहः । सोयं किं मम शंकरो भयतृषारोषार्तिमोहक्षयं कृत्वा यः स तु सर्ववित्तनुभृतां क्षेमंकरः शंकरः ॥ २ ॥ यत्नाद्येन विदारितं कररुहैर्दैत्येंद्रवक्षःस्थलं सारथ्येन धनंजयस्य समरे योऽमारयत्कौरवान् । नासौ विष्णुरनेककालविषयं यज्ज्ञानमव्याहतं विश्वं व्याप्य विजृंभते स तु महाविष्णुः सदेष्टो मम ॥ ३ ॥ उर्वश्यामुदपादि रागबहुलं चेतो यदीयं पुनः पात्रीदंडकमंडलुप्रभृतयो यस्याकृतार्थस्थितिं । आविर्भावयितुं भवंति स कथं ब्रह्माभवेन्मादृशां क्षुत्तृष्णाश्रमरागरोषरहितो ब्रह्माकृतार्थोस्तु नः ॥ ४ ॥ यो जग्ध्वा पिशितं समत्स्यकवलं जीवं च शून्यं वदन्, कर्ता कर्मफलं न भुंक्त इति यो वक्ता स बुद्धः कथं । यज्ज्ञानं क्षणवर्तिवस्तुसकलं ज्ञातुं न शक्तं सदा यो जानन्युगपज्जगत्त्रयमिदं साक्षात्सबुद्धो मम ॥ ५ ॥

—: इति शुभम् :—

सरस्वती प्रेस, जोगीवाड़ा नईसड़क देहली ।



श्री पद्म प्रभु भजनमाला

आरती नं० १

यह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परम पद सुख लीजे।
प्रथम आरति श्री जिनराजा, भवदधि पार उतार जिहाजा॥
दूजी आरति सिद्धन केरी, सुमरन करत मिटे भव फेरी।
तीजी आरति सूर मुनिन्दा, जनम मरण दुख दूर करिन्दा॥
चौथी आरति श्री उवझाया, दर्शन देखत पाप पलाया।
पाचवीआरति साधु तुम्हारी,कुमति विनाशन शिवअधिकारी॥
छटी ग्याह प्रतिमाधारी, श्रावक वंदौ आनन्द कारी।
सातवीं आरति श्रीजिनवाणी,'धानत'स्वर्ग मुक्ति सुखदानी॥
स.ध्या करके आरती कीजे, नर भव आज सुफल करलीजे।
जो कोई आरती पढ़े पढ़ावे, सो नर नार अमर पद पावें॥

कीर्तन नं० २

जय पद्म प्रभो जिनचंद प्रभो,जय जय सुसीमा के नंद प्रभो।
रिपु कर्म हरे दुख द्वन्द हरे, जय जय भगवन भव फंद हरे॥
जय विघ्न विकार निकंद प्रभो, जय ज्ञान सुदीप्त दिनंद प्रभो।
शिवपति दायक आनन्द प्रभो, जय जय श्रीपद्म जिनंद प्रभो॥
सुख सौरभ गुण मकरंद हरे, भज भगवत अब मतिमंद प्रभो।
जय जय जिन परमानंद प्रभो, जय पद्म प्रभो जिनचंद प्रभो॥

तर्ज [छोटी बड़ी सुइयां रे] नं० ३

पद्म प्रभु भगवान, दुखियों के दुख को काटना।
एक दुख पायो मैंने मिथ्यात में फंस कर॥
भ्रमण किया जग मांहि, कहीं न सुख दिखावना॥ टेक
भाग्य उदय अब हमरे आये, पद्मप्रभु के दर्शन पाये।
हो गई नैया पार, प्रभु के गुण गावना॥ टेक
फैली प्रभुकी महिमा भारी, देश-देशमें चरचा जारी।
आवत हैं नर नार, प्रभु के दर्शन पावना॥ टेक
पद्मपुरी में अतिशय भारी, आवत हैं नित नर और नारी।
शरण गहे की लाज प्रभु जी मुझको तारना॥ टेक
अन्धे आते लूले आते गूंगे आते पागल आते।
हम को लगाओ प्रभु पार यही है मेरी धारणा॥ टेक
भूत-भूतनी जिनको आते, उसका सब तुम दुख मिटाते।
छाड़ूं प्रभु मिथ्यात, प्रभु जी मोह उधारना॥ टेक

फूलचन्द एक दास तुम्हारा, सच्चे हृदय से तुम्हें पुकारा।
करो मेरा उद्धार यही है मेरी भावना ॥ टेक

भजन नं० ४

(तर्ज—जब तुमही ने स्वामी हम से किया किनारा—रतन फिल्म)

दुखियों के जीवन धार, श्री महाराज, हो पद्म प्यारा,
अब तुम बिन कौन हमारा।
जब तुम नहिं सुध मोरी लेवोगे, फिर किसको जाके सुनायेंगे
जब तुम्हीं ने स्वामी नहीं सुनी, मो पुकारा,
अब तुम बिन कौन हमारा ॥ दुखियों०
दुःखों के बादल छाये है, जहा भूत प्रेत सब आये हैं,
अब तुम्ही ने स्वामी, इनसे किया छुटकारा,
अब तुम बिन कौन हमारा ॥ दुखियों०
तुम बाडा ग्राम मे प्रगटे हो, हाथों मूला के निकले हो।
फिर सब दुखियों को तुमने दिया सहारा॥
अब तुम बिन कौन हमारा ॥ दुखियों०
यह अतिशय तुमरा निराला है, दुनिया मे शोर मचाया है
फिर सब दुखियों का तुमने किया निस्तारा॥
अब तुम बिन कौन हमारा ॥ दुखियों०
मै दुनिया मे फिर आया हूं, जब शरण तिहारी आया हूं।
इस दास 'फूल' का, तुम्हीं करो निस्तारा॥
अब तुम बिन कौन हमारा ॥ दुखियों०

भजन नं० ८

(तर्ज—न छेड़ो हमें हम सताये हुए हैं)

शरण पद्म तेरी हम आये हुए हैं।
तेरे चरणों में सर झुकाये हुए हैं॥ टेक

कहीं भी जगत में न सुख हमने पाया।
करम वैरी के हम सताये हुए हैं॥ १

मरे जन्म धर धर बहुत बार जग में।
रहट की तरह से भ्रमाये हुए हैं॥ २

तेरे नाम नामी को सुनकर के स्वामी।
हम अर्जी को अपनी ये लाये हुए हैं॥ ३

हे शिवा पद हमारा सो मिल जाय हमको।
इसीवर की आशा लगाये हुए हैं॥ ४

भजन नं० ९

म्हें आया छां २ पद्म प्रभु जी का दर्शन करवा।
बाड़ा मांही आया छां॥

म्हे ल्याया छां २ रतन जडित सिंहासन लेकर।
प्रभु जी के चरण चढ़ावा ल्याया छां॥

म्हे ल्याया छां २ स्वर्ण मई कलश भरवा कर।
नवन करावा ल्याया छां॥

म्हे ल्याया छां २ अष्ट द्रव्य से थाल सजाकर।
पूजा भाव रचाया छां॥

म्हे ल्याया छा २ अंधा लूला आंख्या लेवा।
पद्म के दर पर आया छां ॥
म्हे जावा छां २ सारा रोग मिटा कर।
म्हे तो वापिस जावां छां ॥

भजन न० १०

पद्म प्रभु दुख हरता हो, मेरा न साथी कोय,
जिसको कहता हूं मे अपना, वह है मनका सुलम सपना।
धरे रहेंगे सभी जगत मे, साथ न देगा कोय ॥ पद्म प्रभु०
पिता पुत्र प्रिय साजन नारी, सब रखते मतलब की यारी।
प्राण जायगें निकल देह से, देह न संगी होय ॥ पद्म प्रभु
कर्म शत्रु जिन पीछे लागे, जिनसे फिरते हैं भव २ भागे।
चर्तुगती के फंदो से अब, कौन छुडावे मोय ॥ पद्म प्रभु
तत्त्व ज्ञान हमने नहीं जाना, धर्म अधर्म नहीं पहचाना।
सप्त भंगि का भाव हुऐ विन, मोह न जीते कोय ॥ पदम
रहे भावना यह ही मेरी, पावन भक्ती मिले प्रभु तेरी।
होय मिलाय सभी भव ऐसो, जब लग मोक्ष न होय ॥ पद्म

कीर्तन न० ११

प्रभु पद्म भजो प्रभु पद्म भजो।
ये नाम वडा अनमोला है जिसमें नहीं लगता धेला है
ये जीते का मेला है—प्रभु पद्म
घर में जो माल खजाना है सब यहीं पडा रह जाना है

एक धेला संग नहीं जाना है–प्रभु पद्म
तज प्राण देह जब जाते हैं, सब देखते ही रह जाते हैं
तब पद्म ही काम में आते हैं–प्रभु पद्म
तज काम क्रोध मद मोह सदा, चरणों में पद्म के ध्यान लगा
तू पदम के नाम की रट्ट लगा–प्रभु पद्म
जो पद्म को फूल बिसारोगे, तो जीती बाजी हारोगे
सब अपना काम बिगाड़ोगे–प्रभु पदम

भजन नं० १२

तर्ज—जिन धर्म का डंका आलम में बजादिया वीर जिनेश्वर ने।

इस जीवन के आधार हो तुम, प्रभु पद्म तुम्हारी जय होये।
हम भक्तोंके प्रति पालक तुम, प्रभु पद्म तुमारी जय होवे।१।
तुम को देखा मैंने भगवन, पाया आंखों के तारों में।
सब जैन अजैनोंके नाथहो तुम, प्रभु पद्म तुम्मारी जयहोवे।२।
इस बाड़ा ग्राम में ही भगवन, छवि आपकी ही दिखलातीहै
दुखियों के दुःख मिटाते तुम, प्रभु पद्म तुम्हारी जयहोये।३।
मजधार में मोरी नैया है, इसका नहीं कोई खिवैया है।
इस नैया को पार लगाओ तुम, प्रभु पद्म तुम्हारी जयहोवे।४।
यह 'फूल' तुम्हारे चरणों में, यह शीश झुकाता जाता है।
इस दीन अनाथके प्राणहो तुम, प्रभु पद्म तुम्हारी जयहोवे।५।

भजन नं० १३

मेला पद्मपुरी को जाऊं, चँदवा झालरदार लईयो।

झालरदार लईयो, तुम गोटादार लईयो ॥ मेला ॥
तुम जयपुर शहर को जईयो, तुम मनोज्ञ प्रतिमा लईयो।
पधरैयो अपने हाथ, चॅंदवा झालरदार लईयो ॥ मेला ॥
तुम मशहूर बनारस जईयो, अच्छो सो चॅंदवा लईयो।
बंधवईयो अपने हाथ, चॅंदवा झालरदार लईयो ॥ मेला ॥
तुम मकराने को जईयो, मिंगमरमर अच्छो लईयो।
बंधवईयो छत्री हाल, चॅंदवा झालरदार लईयो ॥

भजन नं० १४

(तर्ज-पहनो देशी देश सुधार करो भारत का बेड़ा पार करो)

श्रीपद्म प्रभु उद्धार करो, भव सागर से मोह पार करो।
तुम दीनबन्धु कहलाते हो, दीनो का कष्ट मिटाते हो ॥
फिर क्यों नहीं दर्श दिखातेहो, दर्शदो मती अबार करो श्री०
श्रीपद्म को तुमने तारा है, अंजनमा अधम उतारा है।
हमको भी तेरा सहारा है, कर पार नाथ उपकार करो श्री०
द्रोपतीका चीर बढाया था, सीता प्रति कमल रचायाथा।
शूलीसे सेठ बचाया था, तुम सबका प्रभु कल्याण करो श्री०
जब घड़े मे विषधर डालाथा, ओ सतीने उसे निकालाथा।
बनगया फूलकी माला था, अपने भक्तो पर प्यारकरो श्री०
जिसने प्रभु तुमको ध्याया है, उसका सब कष्ट मिटायाहै।
इस दिलमें तूही समाया है, जीवन का नाथ सुधार करो श्री०

कुछ दया दृष्टि भगवान करो, है कठिन मार्ग आसान करो।
इस प्रेमका नाथ विचार करो, दुखियोंका अब कल्याण करोश्री०

भजन नं० १५

मैंने छोड़ दिया घर बार, पद्म तेरे लिये।
तेरी प्रीत प्रतीत लिये हूं, सबसे मन को अलग किये हूं ॥
तब चरणों में चित्त दिये हूं, रूठ रहा संसार ॥ पद्म ॥
मुझको धनसे काम नहीं है, योवन का अभिमान नहींहै।
यश अपयश का ध्यान नहींहै सब कुछ तू दिलदार ॥पद्म॥
देखा अतिशय तब प्रभुताई, समझ शरीर दया विसराई।
पद्म न सकैं पद्म गुणगाई, लीला अमित अपार ॥ पद्म ॥
सजल नयन पुलकित कर जोडूं, तुमसे मुखड़ा कभी न मोडूं।
तेरी भक्ती कभी न छोडूं जीवन प्राणाधार ॥ पद्म० ॥

भजन नं० १६

रात दिन जपते रहो माला, पद्म प्रभु के नाम की।
मन के मन्दिर में बिठालो, मूरती सुख धाम की ॥
भक्ति करने के बिना, जीना है क्या नर नार का।
दिल में गर मिथ्यात हो, वह जिन्दगी किस कामकी ॥
अर्ज करने पर प्रभु सुनता है सब की टेर को।
मेट कर दुखड़ा करे है, जिन्दगी आराम की ॥
काम आता है अगर आता है बस जिन राज ही।
तुम सुमत इसके सिवा, बातें करो किस काम की ॥

भजन न० १७

तुम पद्म प्रभु प्रगट जो बाड़े मे न होते।
दुखियों का दर्द सब का भला कौन मिटाते॥
विथा किसको सुनाते॥ टेक॥
मुद्दत से भटकते हैं दुखी दर्द कहाते।
मिथ्यात में पड होगये बरबाद बिचारे॥
गर पद्म दया करके जो मिथ्यात न हटाते॥ दुखियो॥
महिमा तुम्हारी अय प्रभु, फैली जहान में।
सुनकर के लोग आते हैं बाडा ग्राम में,
पाकर के दर्श प्रभु के वह पाप नशाते॥ टेक
मिथ्यात मे फँसे थे प्रभु उनको उभारे।
भूतों को पलीतों को प्रभु तुमने भगाया,
जिन धर्म का ठंडा प्रभु, बाड़े मे बजाये॥ टेक
सुनते हैं अन्धों को भी तुम रोशनी देते।
प्रभु के दर्श पाकर वह हर्ष मनाते।
इस फूल की नैया को प्रभु पार लगाते॥ टेक
दुखियों का दर्द सब भला कौन मिटाते,
हां विथा किस को सुनाते॥ टेक

प्रेमपुजारी न० १८

पद्म तुम्हारे कई उपासक, रंग ढंग से आते हैं।
सेवा में बहु मूल्य वस्तुयें, रंग बिरंगी लाते हैं॥

धूमधाम से सजा के, मन्दिर में वह आते हैं।
मुक्ता मणि बहु मूल्य वस्तु, तुम्हें चढ़ाने लाते हैं॥
हूं गरीब मैं ऐसा कुछ भी, संग अपने नहीं लाया।
फिर भी साहस कर मन्दिर में पूजा करनेको आया॥
धूप दीप नैवेद्य नहीं है, पूजा का सामान नहीं है।
हाय नव्हन करने के लिये भो, दूधदही घृत नहीं लाया॥
विन्ती करूं तुम्हारी कैसे, है स्वर में माधुर्य नहीं।
मन का भाव प्रगट करने को, वाणी चातुर्य नहीं॥
नहीं दान है नहीं दक्षणा, खाली हाथ चला आया।
पूजाकी विध नहीं जानता, फिरभी नाथ चला आया॥
पूजा और पुजापा प्रभुवर, इसी पूजारी को समझो।
दान दक्षिणा और निछावर,इसी भिखारी को समझो॥
हूं में प्रेम मंत्र का लोभी, हृदय दिखाने आया हूं।
चरणों में सर अर्पण है ये, चाहो सो स्वीकार करो॥
खड़ा सुमत में दास आपका, ठुकरा दो या प्यार करो।

भजननं० १६

पद्मप्रभु नाम सुमर सुख धाम,जगत में जीवन दो दिनका।
जीवन दो दिन का जगत, में जीवन दो दिन का॥ टेक
पाप कपट कर माया जोड़ी, गर्व करे धन का।
सभी छोड़ कर चला मुसाफिर, बास हुआ वनका॥ १
सुन्दर काया देख लुभाया, लाड़ करे तनका।

छूटा स्वास बिखर गई देही, जो माथा मसंका ॥ २
संपत सारी लागे प्यारी, मोज करे मनका ।
काल बली का लगे तमाचा, भूल जाय सबका ॥ ३
यह संसार स्वप्न की माया, मेला पन छिनका ।
"द्यानत" प्रभु भजन कर बन्दे, श्री पद जिनवरका ॥ ४

तर्ज—राम दङ्गल नं० २०

नाथ हम सब आज आये, हैं तुम्हारे सामने ।
हैं भले अथवा बुरे ? जो भी तुम्हारे सामने ॥ टेक
अज्ञानतम छाया हुआ है, पथ नहीं दिखता प्रभो ?
ज्ञान-ज्योति दीजिये पथ हो हमारे सामने ॥ १
हर घडी माया सताती, हे प्रभो आकर हमे ।
शक्ति दो नहीं टिक सके, माया हमारे सामने ॥ २
विश्व के इस क्षणिक सुख में, मन सदा रहता फँसा ।
नाथ ! अब चिर शान्ति को, रखना हमारे सामने ॥ ३
सद् बुद्धि दीजिये, सद्-भावना जगती रहे ।
सत्य अहिंसा का सदा ही, प्रश्न होवे सामने ॥ ४
करके दया हे पद्म प्रभु ! वरदान ऐसा दीजिये ।
प्रत्येक पल मूर्ति तुम्हारी, हो 'हृदय' के सामने ॥ ५

भजन नं० २१

जय जय पद्म प्रभु करतार, तुम्हारी महिमा अपरम्पार ॥टेक
जो सब तज कर तुमको भजता ।

मोक्ष सुलभ कर दुःख को तजता।
न आता जग में बारम्बार ॥ १ ॥

जब हिंसा पशु बल था छाया।
दुष्टों ने सन्तों को सताया।
तब आये लेकर अवतार ॥ २ ॥

सत्य अहिंसा गूंजी गहरी।
पाप वृत्तियां तनक न ठहरी।
हुआ सुख-संयुत सब सँसार ॥ ३ ॥

ज्ञानामृत की वर्षा कीनी।
दुःख दावानल ठंडी कीनी।
वही फिर जग में शान्ति बयार ॥ ४ ॥

दशा शोक प्रद हुई हमारी।
है आवश्यक्ता प्रभु तुम्हारी।
व्यथित की सुन लो नाथ पुकार ॥ ५ ॥

भजन २२

(तर्ज—सन्ध्या की घड़ी आई रे आओ दीपक जलायें)

आज घड़ी शुभ आईरे जय बोलो प्रभुकी बोलो प्रभुकी बोलो
वैशाख सुदी पंचम तिथी आई, प्रगटे त्रिभुवन राईरे।जय।
रत्नों का सिंहासन सोहे, जहां पर आप विराजारे ॥जय॥
तीन छत्र थांका सिर पर सोहै, चौसठ चँवर ढुरायारे।जय।
आठ द्रव्यसे पूजा रचावां, जामन मरण मिटाओरे ॥जय॥

मा सती ने तुमको ध्याया, नाग का हार बनायारे ॥जय॥
ता सती ने तुमको ध्याया, आगका नीर बनायारे ॥जय॥
ती द्रोपदी ने तुमको ध्याया, उनका चीर बढ़ायारे ॥जय॥
ना सती ने तुम को ध्याया, पति का कुष्ट मिटायारे ॥जय॥
ागर से कोटी भट को उबारा, रैन मंजूसा दुःख टारारे ।जय।
ानतु ंगने तुमको ध्याया, झर पडी तुरन्त जंजीररे ॥जय॥
ुनीराज ने तुम को ध्याया, प्रगट भये चन्द्रवीररे ॥जय॥
बाडा ग्राम मे जो कोई आया, उसका दुःख छुडायारे ॥जय॥
अन्धा लूला शरण आया, लाठी उसकी पकाईरे ॥ जय ॥
लाखों जैनाजैनी भाई, भर भर दीप जलायेरे ॥ जय ॥
लाखों जाट पालती आते, जय जय शब्द उचारेरे ॥जय॥
भूत भूतनी जिनके आते, उनसे साथ छुडायारे ॥ जय ॥
कुदेव देव हमने बहु, सेये मिथ्यात्व बढ़ायारे ॥ जय ॥
सेवक है तेरा जाट का लडका, जमीसे खोद निकालारे ॥
मिनटामपुरा से तीन मील पर, बाढा ग्राम मन भायारे ॥
हर माह की सुदी पंचमी, मेला होता भारीरे ॥ जय ॥
तभीसे आते नित नर नारी, बाढा की शोभा बढाईरे ॥जय॥
जो कोई प्रभुकी पूजा रचे है महा मोक्ष फल पायेरे ॥जय॥
"फूलचन्द" है शरणे आया, जामण मरण मिटाओ ॥जय॥

भजन नं० २३

(तर्ज—जिन धर्म का डङ्का भारत में बजश।)

हम भक्त हैं तेरे पद्म प्रभु।
तुझे ढूंढ़ ही लेंगे कहीं न कहीं॥
तू दुखियों का दुःख हरता है।
अन्धों को रोशनी देता है॥
हम दीवाने हैं तेरे प्रभु।
तुझे ढूंढ़ ही लेंगे कहीं न कहीं॥
तुम मात सुसीमा के प्यारे हो।
धारण की आंखों के तारे हो॥
सब दास तुम्हारे पद्म प्रभु।
तुझे ढूंढ़ ही लेंगे कहीं न कहीं॥
तुम कोशाम्बी में जन्म लिये।
फिर बाड़ा ग्राम में प्रगट भये॥
एक मूलादास को दर्श दिये।
तुझे पाया नीऊ खोदत में यहीं॥
ये फूल तेरे चरणों में पड़ा।
दो इसका आवागमन मिटा॥
इस भव सागर से पार लगा।
तुझे ढूंढ़ ही लेंगे वहीं हां वहीं॥



द्वितीय अध्याय

[लाखों प्रणाम] भजन नं० २४

पदुमपुरी के बाबा तुमको लाखों प्रणाम।
बाडा ग्राम के तारे तुमको लाखों प्रणाम॥
भक्तों के तुम हो रखवारे।
मूला जाट एक दास तुम्हारा, खोदत खोदत दर्शन पाया
प्रगट भये जग दाता तुम को लाखों प्रणाम॥ पद्मपुरी०
जय प्रभु बाडा ग्राम मे आये, चमत्कार दुनियाँ को दिखाये
जैन अजैनों के दुःख मिटाये, भूतों को भगाने वाले
तुमको लाखों प्रणाम॥ पद्मपुरी०
जो कोई स्वामी शरण मे आया, उसका स्वामी कष्ट मिटाया
रोता आया हंसता जाता, दुखियों के तुम दाता,
तुमको लाखों प्रणाम॥ पद्मपुरी०

अन्धे आते लूले आते, गूंगे आते पागल आते,
भूत प्रेत के रोगी ध्याते, मन वाँछित फल पाते,
तुमको लाखों प्रणाम ॥ पद्मपुरी०
शरणागत हम नाथ तिहारी, रक्षा कीजे नाथ हमारी
तुम नैनों के तारे, तुमको लाखों प्रणाम ॥ पद्मपुरी०
पद्मप्रभु तुम दया के सागर, दीनबन्धु तुम सब गुण आगर
जग से तारन हारे, तुम को लाखों प्रणाम ॥पद्मपुरी०
"फूल" पड़ी नैया मजधारा, हमें तुम्हारा नाथ सहारा
जल्दी करो किनारे, तुमको लाखों प्रणाम ॥ पद्मपुरी०

भजन नं० २५

म्हारा पद्म प्रभुजी की सुन्दर मूरत म्हारे मन भाई जी।
वैशाख शुक्ल पंचम तिथि आई प्रगटे त्रिभुवन राईजी ॥१
रतन जड़ित सिंहासन सोहे, जहां पर आप विराजोजी ॥२
तीन छत्र थांका सिर पर सोहे चौसठ चँवर ढुरायाजी ॥३
अष्ट द्रव्य से थाल सजा कर पूजाभाव रचाया जी ॥४
सोमासती ने तुमको ध्याया नाग का हार बनायाजी ॥५
मैनासती ने तुमको ध्याया श्री पति कुष्ट मिटाया जी ॥६
सीता सती ने तुमको ध्याया अगनी का नीर बनायाजी ॥७
जो कोई अन्धा लूला आया उसका रोग मिटाया जी ॥८
सभी शरण में जो कोई आया उसका परण निभायाजी ॥९
जिनके भूत डाकिनी आते उनका साथ छुड़ाया जी ॥१०

लाखों जैनी अजैनी भाई—जय जय शब्द उचारे जी ॥११
लाखों जाट पालतो आते भर भर दीप जलाया जी ॥१२
आनदेव बहुतेरे सेये तुम मिथ्यात्व छुडाया जी ॥१३
निकलेगी प्रतिमा श्री प्रभु की भैरव ने बतलाया जी ॥१४
मूल्या जाट के बैठे घट में नींव खोदने आया जी ॥१५
फैली प्रभु की महिमा भारी आते नित नर नारी जी ॥१६
उनो सेवक अर्ज करे छे–आवागमन मिटाओ जी ॥१७
म्हारा दर्शक अर्ज करे छे–जामन-मरन मिटाओ जी ॥१८

भजन नं० २६

(तर्ज—सुनाई सुनाई कृष्णा)

पद्मा प्रभु पद्मा प्रभु कहो मन में,
जब तक प्राण रहे तन में ॥ टेक
नीम की छाया प्रभु के मन भाई,
पद्मपुरी की शोभा छाई।
आकर दर्शन दिये छन मे ॥ पद्मा०
मूला जाट के घट में आये,
नीऊ खोदने मूला जाये ।
प्रगटे प्रभुजी एक छन मे ॥ पद्मा०
भूत डाकिनी जिनको आते,
प्रभु डिग आकर शीस नवाते।
पिट कर भागत है छन मे ॥ पद्मा०

नाम सुनत आते नर नारी,
महिमा प्रभु जी की अति भारी।
सुन्दर मूरत छाई मन में ॥ पद्मा०
अन्धे लंगड़े सब आते हैं,
अच्छे होकर घर जाते हैं।
प्रभु के गुण गाते मन में ॥ पद्मा०
नाम स्टेशन श्योदासपुरी है,
जग में विख्यात पद्मपुरी है।
रोशन हुए प्रभु एक छन में ॥ पद्मा०
जो कोई तुमको मन से ध्याता,
मन वांछित फल तुरत ही पाता।
सन्मुख आकर देखो छन में ॥ पद्म०
'दासफूल' है नितप्रति गाते सागर जिलेके रहने वाले
पड़े प्रभु के चरणों में ॥ पद्मा०

भजन नं० २७

अब तो बँधा दो मोरी धीर-हो पद्मा स्वामी।
कब का खड़ा हूं तोरे तीर हो पद्मा स्वामी ॥
सागर से श्री पाल उबारा, रेन मञ्जूषा का दुःख टाला।
आके हरी सब पीर ॥ हो पद्मा०
सीताजी की अग्नि परीक्षा, करी आन देवों ने रक्षा।
पावक से हुआ नीर ॥ हो पद्मा०

राजा ने जब सेठ सतायो, शूली पर जब उसे चढ़ायो।
तुमने हरी दुःख पीर ॥ हो पद्मा०
मानतुंग श्री मुनि को राजा, तालों में जब बंद कराया।
झड पडी तुरत जंजीर ॥ हो पद्मा०
पिंडी फटने के अवसर पर, तुमको ही ध्याया था मुनिवर।
प्रगट हुए चन्द्र वर वीर ॥ हो पद्मा०
जिस जिसने प्रभु तुमको चितारा, उसहो का दुख तुमने निवारा
ज्ञान हुआ है धीर ॥ हो पद्मा०

भजन नं० २८

पद्म के दर को छोड कर, किस दर जाऊं मैं।
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊं मैं ॥
जब से नाम भुलायो पद्मा, लाखों कष्ट उठाये हैं।
न जाने इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमाये हैं ॥
मेरे दुष्ट कर्म ही मुझको, तुम से न मिलने देते हैं।
जब मैं चाहूं दर्शन पाना, रोक जबही वह लेते हैं ॥
छींटा दो प्रभु ज्ञान का, शरण में आऊं मैं ॥पदम०
मोह मिथ्या में पड कर स्वामी; नाम तिहारा भूला था।
जिसको समझा था सुख मैंने, दुख का गोरखधन्धा था ॥
मोह माया को छोड कर शरण खडा हूं मैं ॥पदम०
बीत चुकी सो बीत चुकी अब, शरण तिहारी आया हूं।
दर्शन भिक्षा पाने को, दो नैन कटोरे लाया हूं।

मन में अपने ज्ञान का दीप चढ़ाऊं मैं ।
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊं मैं ॥ पद्म०

भजन नं० २९

तुम हो पद्म प्रभु महाराज थारी महिमा अपरम्पार ।
दुखिया आते तेरे द्वार, करदो पार, पार, पार ॥ टेक ॥
तुमने कुगुरू कुदेव छुड़ाया, तुमने जैन धर्म वतलाया ।
तुमने रख लई इसकी लाज, प्रभु तार, तार, तार ॥टेक॥
पंचम कालमें प्रभुजी प्रगटे, तुम दुखियोंके दुखको हरते ।
सुन लई 'फूल'दास की टेर, रखियो पास पास पास ॥टेक॥

कीर्तन नं० ३०

जय वीर कहो प्रभु पद्म कहो, त्रिशला सुसीमा अति वीरकहो
हर सांस यही झनकार उठे, सब बाड़ा ग्राम गुंजार उठे ।
दुखियों का प्राण पुकार उठे, जय वीर कहो प्रभु पद्म कहो॥
यह दुनियां एक कहानी है, दरिया का वहता पानी है ।
बस दोदिन की जिन्दगानीहै, जय वीर कहो प्रभु पद्म कहो
है तीन भुवन का सार यही, जीवों का सुख दातार यही ।
सब लगातार अवतार यही, जय वीर कहो प्रभुपद्म कहो ॥
ये संकट मोचन हारा है, भक्तों को तन से प्यारा है ।
सिद्धि जिन राज सहाराहै, जय वीर कहो प्रभु पद्म कहो ॥

भजन नं० ३१

(तर्ज—मुनिबावा पलकियां खोल रस की बूंदें परी)
मुझ दुखिया की सुनले पुकार, भगवन पद्म प्रभु ।

दीनों के हो तुम प्रतिपालक, धर्म मार्ग के हो संचालक ॥
किये अनेकों सुधार भगवन पद्म प्रभु ॥ मुझ ॥१॥
चारों गतिमें दुख बहु पाया, काल अनादि दुःखमें गंमाया।
आया तोरे दरबार, भगवन पद्म प्रभु ॥ मुझ ॥ २ ॥
नरक गतीकी करुण वेदना, जन्म मरण कर्मन संग कीना।
भोगे मैं दुःख अपार, भगवन पद्म प्रभु ॥ मुझ ॥ ३ ॥
सदुपदेश दे लाखों तारे, अंजन जैसे अधम उबारे।
अब मोरी ओर निहार, भगवन् पद्म प्रभो ॥मुझ० ॥४॥
बीच भँवर में फँसरही नैया, पदम प्रभू हो तुम्ही खिवैया।
कीजे इसकी पार, भगवन् पदम प्रभो ॥ मुझ० ५ ॥
सेवक शान्ति शरणे आया, दर्शन करके पाप नशाया।
जीवन के आधार भगवन् पदम प्रभू ॥ मुझ० ॥ ६ ॥

भजन न० ३२

(तर्ज—देखो देखो जी बदरिया आये जियरा डराये।)

पाये २ जी हा पाये २ जी पदम के दर्शन जिया हरषाये।
सब टलें हमारे पातक पुन्य कमाये ॥ टेक ॥
भूले भूले अबलों भटके अब न भटका जाये।
शिव सुख दानी तुमको पाकर, कैसे भूला जाये ॥ पाये ॥
भव दधि तारन तरन जिनेश्वर, सब ग्रन्थन में गाये।
फिर भक्तों की नाव भँवर बिच, कैसे गोता खाये ॥पाये॥

विघ्न निहारो संकट टारो, राखो चरण निभाये ।
सुख सौभाग्य बढ़े भारत का घर घर मंगल गाये ॥गाये॥

भजन नं० ३३

हे पद्म तुम्हारे द्वारे पर, एक दर्श भिखारी आया है ।
प्रभु दर्शन भिक्षा पाने को, दो नैन कटोरे लाया है ॥१॥
नहीं दुनियां में कोई मेरा है, आफत ने मुझको घेरा है ।
अब एक सहारा तेरा है, जगने मुझको ठुकराया है ॥२॥
धन दौलत की कुछ चाह नहीं, घरबार छुटे परवाह नहीं ।
मेरी इच्छाहै प्रभुके दर्श करूं, दुनियांसे जी घबरायाहै॥३
मेरी बीच भँवर में नैया है, प्रभु तूही एक खिवैया है ।
लाखों के कष्ट हरे तुमने, भव सिन्धसे पार लगायाहै ॥४॥
आपसमें प्रेम और प्रीत नहीं, प्रभु तुम बिन हमको चैननहीं
अबही तुम आकर दर्शन दो, मैं दास शरण में आया है ।५।

भजन नं० ३४

तारो तारो जिनवर मुझको तुम बिन तारे कोय ॥ टेर ॥
नैया भव सागर में डूब रही
जाको खेवन हारा कोई नहीं ॥
तुम्ही खेवन हारे भगवन पार लगादो मोय ॥ तारो०
आठों कर्म लगे कोई क्या जाने ।
इनके फन्दों को कोई क्या जाने ॥
घट घट की प्रभु तुम्ही जानो, और न जाने कोय ॥तारो०

तेरी शान्ति छवि मेरे मन को भावे ।
दर्शन करने को चित चावे ॥
दर्शन अपतो देदो भगवन करदो बेडा पार ॥ तारो०
मद मस्त होय मल्हा गावे ।
नैया जिस से गोता खावे ॥
बालक की एक आस बिहारी, और न दूजा कोय ॥तारो०

भजन न० ३५
(श्री पद्मप्रभु झण्डा अभिवादन)

पदम प्रभु का नाम है प्यारा ।
बाढ़ा ग्राम मे झण्डा फहराया ॥
इस झण्डे के नीचे आओ ।
जैन अजैनी मंगल गाओ ॥
सुख जीवन का तुम पा जाओ ।
चमकाओ जिन धर्म सितारा ।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा ॥टेर॥
पूर्ण अहिंसा इसका प्रण है ।
पदम प्रभु का आन्दोलन है ॥
जगह जगह का होता मिलन है ।
मिटता द्वेष पाप अंधियारा ।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा ॥टेर॥

पदम प्रभु सब जग का दाता।
दुखियों का वह दुःख मिटाता॥
जैन अजैनी शीश झुकाता।
बतलाता कर्तव्य हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥टेर॥

विश्व विभूति पदम जिनवर ने।
एक उमंग विश्व में भरने॥
फहराया सब जग हित करने।
मिटे जगत का संकट सारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥ टेर॥

कैसा चमत्कार है सारा।
पदम प्रभु के दर्शन पाया।
फूल पदम के शरणें आया।
बोलो सब मिल जय २ कारा॥ टेर॥

भजन नं० ३६

आज मैं आया पदम के, सच्चे ही दरबार में।
कब सुनाई होगी मेरी, आपकी सरकार में॥ टेर॥
तेरी शरण में आये स्वामी, लाखों दुखिया तरगये।
क्यों नहीं मेरी खबर लेते, मैं हूँ मझधार में॥ टेर॥
काट दो कर्मों को मेरे, है यह इतनी आरजू।
होरहा बरबाद मैं, दुनियां के मिथ्याचार में॥ टेर॥

आपका सुमरण किया जब, मानतुंगाचार्य ने।
खुल गई थी बेडियां, झट उन की कारागार में॥ टेर॥
बन गया शूली से सिंहासन, सुदर्शन के लिये।
होरहा गुण गान है, उस सेठ का संसार मे॥ टेर॥
मुश्किलें आसान करदो, अपने भक्तों की प्रभू।
यह अरज पंकज की है, अब सच्चे ही दरबार मे॥टेर॥

झूला न० ३७

मणियों के पालने मे स्वामी पद्मा प्रभु झूलें।
मोतियों के पालने में स्वामी पद्मा प्रभु झूलें॥ टेक
रेशम की डोरी पडी, मोतियो में गुथवा डाली।
माता सुसीमा देवी, देख कर हृदय में फूली॥ टेक
चुटकी बजाय रही, हँस हँस खिलाय रही।
राजा धरणी-धर, मगन होय राज पाट भूलें॥ टेक
कौशाम्बी वाले, सब मिलकर के जय जय कार बोलें।
दर्शन कर प्रेम-से महाराज के चरणो को छूलें॥ टेक
इन्द्रादि देव आवें शीस चरणो में झुकावें।
किशना के हृदय की मटकने लगी सारी चूलें॥ टेक

भजन न० ३८

प्रभु पद्म वन्दे प्रभु पद्म वन्दे।
उठो पद्म भक्तों न जीवन गमाओ,

अभय होके कर्तव्य अपना निभाओ।
महा मन्त्र ये विश्व भर में गुंजाओ। प्रभु पद्म ॥
दुबारा अखर ज्योति, इसकी प्रगट हो,
इसी का हृदय में बसा चित्रपट हो।
की हर जीव धारी की बस एक रट हो ॥प्रभु पद्म॥
लुटी जा रही लाज थी जब सती की,
कि खतरे में थी आबरू द्रोपदी की।
पुकारा न इमदाद थी जब किसी की ॥ प्रभु पद्म ॥
सुदर्शन भी था एक इस ही का बन्दा,
फना हो गया जिसकी फांसी का फन्दा।
लगाया ये नारा जभी दुख निकन्दा ॥ प्रभु पद्म ॥

कीर्तन न० ३६

पद्म प्रभु स्वामी, हो अन्तरयामी।
हो सुशीमा नन्दन; काटो भव फंदन।
दर्शन दिखाना, भूल न जाना।
महिमा तुम्हारी, होगई जग में सारी।
सुध लो हमारी, हो व्रत धारी।
बन खण्ड में तप करने वाले।
स्वामी मोक्ष को जाने वाले।
सच्चा ज्ञान सिखाने वाले।
हो उपदेश सिखाने वाले।

भक्तों के दुःख हरने वाले ।
भूत भूतनी जिनको आते ।
दर्शन पाते वह भग जाते ।
उनका स्वामी कष्ट मिटाते ।
प्रभु के शरण में ध्यान लगाते ।
महिमा पद्म प्रभु की गाते ।
रोते आते हँसते जाते ।
मात शुसीमा के हो दुलारे ।
धारण की आंखों के तारे ।
जैन अजैनी करता वन्दन ।
"फूल" सौंपता तुम को तन मन ।

भजन नं० ४०

भगवान श्रीपद्मप्रभु के चरणों में श्रद्धा के फूलः-

इक प्रेम पुजारी आया है चरणों में ध्यान लगाने को ।
भगवान्! तुम्हारी मूरत पर श्रद्धा के फूल चढाने को ॥१
तव भक्ति का तूफा दिलमे उठा जो वर्णन में नहीं आ सकता ।
प्रेमाश्रु नयन मे उमड़े है भक्ति का भाव जताने को ॥२
तुम "बाडा" ग्राम के तारे हो; दुखियों के नाथ सहारे हो ।
तुम चमत्कार दर्शाते हो, पाखण्ड का नाश कराने को ॥
आँखो से खून टपकता है, सीने पे है खंजर चलता ।
श्रीपद्म प्रभु जल्दी सुध लो दीनो की जानबचाने को ॥४

भजन नं० ४१

प्रेमामृत की वर्षा करने हे वीर प्रभु ! आना होगा।
सदियों से सोई जैन-जाति इसको जागृत करना होगा ॥१
कर्म पथ हम बिसर गये विषयों के फन्दे में आकर।
अन्धकार में भटक रहे हैं अब ज्ञान भानु प्रगटाना होगा ॥
हम में ऐसी शक्ति भर दो, काम क्रोध की व्याधि हरदो।
निर्मल सबकी बुद्धि करदो शान्ति का पाठ पढ़ाना होगा ॥३
सदा से है काम तुम्हारा, गिरे हुए को देते सहारा।
अब पल में दुःख मिट जाय हमारा ऐसा उपाय रचना होगा।
कर्मवीर हम सब बन जावें, विपदाओं से ना घबरावें।
अहिंसा के प्रेमी बन जावें ऐसा ज्ञान सिखाना होगा ॥५

भजन नं० ४२

महावीर भगवान् हमारी नैया पार लगाओ।
पड़े हुए हैं तव चरणों में जल्दी आय उठाओ ॥ १
भव-भय-भञ्जन, भक्त-मन रञ्जन, ज्ञान सिन्धु अब आओ।
सुखकर, दुःखहर, प्रणतपाल प्रभु हमें न आप भुलाओ ॥२
घट घट वासी, हे अविनाशी ! पाप से शीघ्र बचाओ।
प्रेम-पाठ सबको सिखलाकर प्रेम की सरिता बहाओ ॥ ३
अलख-निरञ्जन, सब अघ-भञ्जन, विपति-निवारण आओ।
अविचल, अविरल भक्ति हमें दो सब अज्ञान मिटाओ ॥४
दया सिन्धु अघहारक स्वामी भवनिधि पार लगाओ।
'वेणी प्रसाद' खड़ा प्रभु द्वारे आशा पूर्ण कराओ ॥ ५

भजन नं० ४३

दयामय दृष्टि करुणा की अगर करदो तो क्या होगा।
भक्त सब आ गये दर पर विपद हर लो तो क्या होगा।
आपका नाम दुनिया में पतित पावन सुना सच्चा।
उसे अब फिर से हे भगवन्! याद करलो तो क्या होगा?
सहारा छोड कर सब का लगाई आश अब तुमसे।
आपका कुछ न खरचा हो भला कर दो तो क्या होगा?
पुरानी नाव है भगवन्! भरी पापों से है भारी।
बही जाती है धारा में, पार लगादो तो क्या होगा?
नहीं सत्संग की अब तक शुद्ध सरिता में तन धोया।
शरण में आ पडा तेरी दुःख हर लो तो क्या होगा?
कृपा की दृष्टि हम सब पर करो महावीर स्वामी जी।
कहे कर जोड "फूलचन्द" विनय सुन लो तो क्या होगा॥

भजन नं० ४४

जय जय पद्म प्रभु भगवान् जगत् को आप तिरानेवाले ॥टेक
आपकी माया अपरम्पार।
सृष्टि में कोई न पावे पार।
गए इन्द्रादिक भी सब हार।
माया में सब को भुलाने वाले॥ १॥
जगत में सब के तुम आधार।
भक्तों की सुध लेते हर वार।
दीनों के हे सच्चे रखवार।

भक्त का मान बढ़ाने वाले ॥ २ ॥
कोई आता शरण तिहारी।
हो पूरी कामना सारी।
हैं आप अनन्त सुख कारी।
सच्चा ज्ञान सिखाने वाले ॥ ३ ॥
प्रगटे सिद्धक्षेत्र में आय।
जो पद्मपुरी कहलाय।
दिया स्वप्न महा सुखदाय।
'बाड़े' का नाम बढ़ाने वाले ॥ ४ ॥
यात्री दूर दूर से आवें।
दर्शन कर अति हर्षावें।
सब अपने पाप नशावें।
सच सौख्य दिखाने वाले ॥ ५ ॥
चलती शीतल मन्द बयार।
शुभ मिश्रित गन्ध अपार।
बना सुख शांति का भण्डार।
प्राकृतिक दृश्य दिखाने वाले ॥ ६ ॥
यह स्थान बड़ा सुखदाई।
भव-व्याधि सारी नशाई।
कुछ शोभा वरणि न जाई।
'फूल' का हर्ष बढ़ाने वाले ॥ ७ ॥



तृतीय अध्याय

प्रार्थना नं० ४५

सब मिल के आज जय कहो, श्री वीर प्रभु की।
मस्तक झुका के जय कहो, श्री वीर प्रभु की ॥१॥
विघ्नों का नाश होता है, लेने से नाम के।
माला सदा जपते रहो, श्री वीर प्रभु की ॥ २ ॥
ज्ञानी बनो दानो बनो, बलवान भी बनो।
अकलंक सम बनकर करो, जय वीर प्रभु की ॥३॥
होकर स्वतन्त्र धर्म की, रक्षा सदा करो।
निर्भय बनो और जय कहो, श्री वीर प्रभु की ॥४॥
तुमको भी अगर मोक्ष की, इच्छा हुई ऐ दास।
उस वाणी पै श्रद्धा करो, श्री वीर प्रभु की ॥५॥

पद नं० ४६

कर्म बडा बलवीर, सब मे कर्म बडा बलवीर ;
राजा राणा इन्द्र सुरासुर, कर्म बँधे जञ्जीर।
कर्मों ही से सुख-दुख होवे, कर्म हरे सब पीर ;

कर्म उठाय धरे दुर्गति में, चले न कोई तदवीर ;
कर्म उड़ाये शाल-दुशाला, कर्म उड़ाये चीर ;
कर्म बनाये शाह जगत का, दर दर फिरे फकीर ।
कोई समय पर काम न आये, क्या बेटा क्या वीर ;
धन दौलत कुछ साथ न जाये, खाली हाथ अखीर ।
मोहमें इनके अब क्यों फँसकर और होता दिलगीर ;
नष्ट कर इनको रण थल में, चलले करमें तप-तीर।
जैसी करनी वैसी भरनी, येही भाषी वीर ;
पारस जग में फिर न भटको, ऐसी कर तदवीर ।

भजन नं० ४७

[तर्ज—रङ्गो वाजी हमारी गली अइयो] फिल्म परदेशी ।

प्रभु नैया हमारी तिरैयो, शरण हम हैं आप की ॥टेक॥
चौरासी भटकते फिरे हैं, दुख दर्द अनेक सहे हैं ।
नाथ नैया हमारी तिरैया, शरण हम हैं आप की ॥
नर-नारी दुखी हैं विचारे, सारे शरणे आये हैं तिहारे ।
कुछ इनपै भी करुणा करैयो, शरण हम हैं आपकी ॥
जौहरीलाल अरजयूं गुजारे, आप छोड़ाहे मुझको किनारे
मेरी नैया को पार लगैयो, शरण हम हैं आप की ॥

भजन नं० ४८

[तर्ज—आज हिमालय की चोटी से- फिर हमने]

आज अहिंसाका झण्डा फिर, दुनिया में लहराना है ।
जागउठो जागउठो ऐ भारत वीरो भारत आज जगानाहै॥

जिस झण्डेको वीर प्रभुने, दुनिया में लहराया था।
जैनधर्म का डंका बजाकर, सब का जैनी बनाना है ॥१॥
समन्तभद्र अकलङ्क देव ने, जिसका मान बढाया था।
अमृतचन्द और कुन्दकुन्द ने, सच्चा धर्म बताया था ॥२॥
उनका यह आदेश हमें फिर, घर घर मे पहुंचाना है।
जागउठो जागउठो ये भारत वीरो, भारत आज जगाना है।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई जर्मन हो या जापानी।
रूमी चीनी फ्रेन्च इटैली ब्रिटेन या हिन्दुस्थानी॥
नाहक खून बहाना प्यारो, भारी पाप कमाना है ॥३॥
खुद जाग्रो जीनेदो सब-को फर्ज यही है-इन्सानी।
दोनों के अधिकार दबाना हैवानी है शैतानी।
तन मन धन को अर्पण करके अत्याचार हटाना है ॥४॥
वेद पुराण कुरान बाईबिल धर्म दया बतलाते हैं।
सुन्दर सुख का मूल अहिंसा गाधा जी फरमाते हैं।
डंका फिरसे आज अहिंसा का शिवराम बजाना है ॥५॥

—भजन न० ४६—

[तर्ज—अखियां मिलाके जिया भरमा के] फिल्म रतन।

पदम प्रभु आये, जिया तरसाये, दुखको मिटाये, हा दुख०
ये बाडा ग्राम मे प्रगटे हैं, और दुख सबका भी हरते हैं।
कईयोंके प्रेत निकारे, ऐसा हम कहीं न पाया ॥ १ ॥
कईयों के दुख को मिटाया, मेरे भी दुख को मिटाना।

दुखों से घबरा के, अब तेरी शरण में आया ॥२॥
मैं कण्ठों तक भर आया, अब तेरी शरण में आया।
जो एल के दुख का अब तुम्हीं करो निस्तारा ॥ ३ ॥

भजन नं० ५०

क्योंकर बने परमात्मा बतला दिया कि यूं ;
अविनाश करके पार्श्व ने दिखला दिया कि यूं ॥टेक॥
रक्षा धरम की होती है, विपदा में किस तरह ;
निकलङ्क ने कुर्बान हो, दिखला दिया कि यूं ॥
दे इम्तिहान शील का किस तौर से कोई ;
सीता ने पड़ के आग में, दिखला दिया कि यूं ।
दुनियां से जुल्म कैसे हटाये भला कोई ;
महावीर ने घर त्याग कर बतला दिया कि यूं
विपदा में मदद कोई किसी से करें क्योंकर ;
भामाने जर निसार के दिखला दिया कि यूं ॥
भाई की मदद भाई भला किस तरह करे ;
लक्ष्मण ने शक्तिबाण, खा जतला दिया कि यूं ॥

भजन नं० ५१

बाड़ा के पद्म जिनेश हमारी पीर हरो ॥ टेक
जयपुर राज्य ग्राम बाड़ा है शहर चाटसू का थाना है।
करते विनती हमेश हमारी पीर हरो ॥ १
वैसाख सुदी पंचम तिथि आई तहां प्रगटे प्रभु त्रिभुवनराई

धरें दिगम्बर भेष हमारी पीर हरो ॥ २
फैली प्रभु की महिमा भारी, लाखों आते नित नर नारी।
मजमा रहे हमेश हमारी पीर हरो ॥ ३
जैना जैनी दर्शन को आते, मन वाञ्छित फल को हैं पाते।
भागें सारे क्लेश हमारी पीर हरो ॥ ४
अष्ट दरब से थाल सजाते, पूजन कर वाञ्छित फल पाते।
रहे हमेशा भीड़ हमारी पीर हरो ॥ ५

भजन नं० ५२

(तर्ज—उठ सजनी खोल किवाड़ें तेरे साजन आये द्वारे) फिल्म औरत

दुख मेटो पद्म हमारे, हम आये द्वार तुम्हारे ॥ टेक
नहीं और कोई चित आता तुमही हो स्वामी हमारे॥दुख...
तुम पद्म प्रभु कहलाये तज राज पाट वन धाये।
हिंसा को मिटाने वाले लाखों जीवों को तारे जी ॥दुख...
दरबार में तेरे आकर खाली नहीं जाता चाकर।
पंकज की झोली भरदे मैं पूजूं चरण तिहारे जी ॥ दुख...

भजन नं० ५३

चांदनगांव के महावीर स्वामी की स्तुति

भाइयो चलो सभी मिल महावीरजी के दर्शन-करने को ॥टेक
अतिशय क्षेत्र जगत् विख्यात चमत्कार तत्काल दिखाता।
ऋद्धि सिद्धि नव हाय पुण्य भण्डारा भरने को ॥भाइयो...

जयपुर राज्य जिला हिन्डोला चांदनगांव वीर जिनभौना
तीर नदी गंभीर पटौदा रेल उतरने को ॥ भाइयो…
बनी धर्मशाला चहुं ओरा बीच बनो मन्दिर चौकोरा।
उन्नत शिखर विशाल, मानौ स्वर्ग पकरने को ॥भाइयो…
चरण पादुका बनी पिछारी नसियां कहैं सकल नर नारी।
इसी जगह निकली थी प्रतिमा,जग अघ हरनेको ॥भाइयो…
छत्र चढ़ावें चमर ढुरावें घृत के भरि भरि दीप जलावें।
पूजन पाठ भजन विनतीजै रकार उचारने को ॥ भाइयो…
चैत सुदी में होता मेला लाखों गूजर मैना हों भेला।
जुरैं हजारों जैनी जन भवसागर तरने को ॥ भाइयो…
एकम बदी बैसाख हमेशा रथ निकले श्री वीर जिनेशा।
मक्खन भी वहां जाय प्रभु का नाम सुमरने को ॥भाइयो…

भजन नं० ५४

कैसे कटै दिन रैन दरस बिन। कैसे० ॥ टेक
जो पल घटिका तुम बिन बीतत,
सो ही लगे दुख-देन । दरश०
दर्शन-कारण सुरपति रचिये,
सहस नयन ही लीन ॥ दरश०
ज्यों रवि दर्शन चक्रवाक युग,
चाहत नित प्रति सैन ॥ दरश०
तुम दर्शन तैं भव-भव सुखिया,

होत सदा रवि मैन ॥ दरश०
तुमरो सेवक लखि है जिन बुध,
महाचन्द्र को चैन ॥ दरश०

भजन न० ५५

भजोरे भैया श्रीजिनभाव धरी, श्रीजिनभाव धरी। भजोरे। टेक
पैसा न लागे, रुपया न लागे, न लागे दमडी ॥ भजोरे०
ना घर जावे ना दुःख आवे, खरचत ना गठरी ॥ भजोरे०
जन्म-जन्म का पाप कटेगा, सुमरत एक घडी ॥ भजोरे०
कहत हिराचन्द भजन ना जाके सो मुख धूल पडी ॥ भजोरे०

भजन न० ५६

[तर्ज —काहे को गर मचाई—फिल्म लगन]

सुनना हो पद्म हमारी, रखियेगा लाज हमारी ॥ टेक
तुम्हें छोड कित जाऊं, किसको हाल सुनाऊं।
अपनों ने ममता तजि है बन कर कपटचारी ॥ १
जग मे कौन हमारा, किसका करें किनारा।
साथी तक भी निठुर गये हैं, तुम्हीं हो टीले धारी ॥ २
मन चंचल इटलावे, कांटों में उलझा जावे।
इन्द्रियों सब बिखर गई प्रभु, समझ सुमन क्यारी ॥ ३
माया ने आ घेरा, लग गया तेरा मेरा।
कब यह बीतेगी प्रभुजी, मोह निशा अंधियारी ॥ ४
चिड़िया रैन बसेरा, होना अन्त सवेरा।
प्राण पखेरू उड चले हैं ध्यान युगलधारी ॥ ५

भजन नं० ५७

दुख हर सुख दातार, तू ही है पद्मा प्यारा रे।
निर्बल को बलकार, तू ही है एक सहारा रे। दुखहर ।टेक
कमठ मान-गिरिचूल गिराया, अग्नि जलते नाग बचाया।
हरी भीड़ में पड़ी भक्तजिन चित्त में धारा रे॥ दुखहर०
आज अमोलक अवसर आया, रोम-रोम में हरष समाया।
तुम पद पंकज पूज रचाकर पुन्य पसारे रे॥ दुखहर०
वस्तु स्वरूप समझ अब आया, चेतन भिन्न जुदी है काया।
निर्मल ज्योति जगी चांद सी चमका तारा रे॥ दुखहर०
जिसने तुझसे प्रेम बढ़ाया, अमर शान्ति युत भाग्य दिपाया
बना केसरी कर्म जीत जय नारा सारे रे॥ दुखहर०
बढ़े जाति सौभाग्य निरंतर, मंगल गावे जग जन घर घर।
खिले मनोहर छटा देख मन फूल हजारा रे॥ दुखहर०

भजन नं० ५८

[तर्ज—दुनिया रंग रंगीली बाबा]

नैया तुमरी निराली प्रभु जी, नैया तुमरी निराली,
इस नैया में धर्म की कुटिया शोभा जिसकी न्यारी है।
हर कौने में ज्ञाननिधि है हर छत सम्यक् वाली है,
अद्भुत खिड़की दशों दिशा में हैं दश लक्षण वाली ।प्रभु०
कदम कदम पर ज्योति तुम्हारी, अपनी छटा दिखाती है।
अन्धकार विनसाती है बिछुड़ों को राह लगाती है।

इसकी चमक सूर्य से ज्यादा, करती मन उजियाली ॥ २
भव की नदिया इस नैया से, लाखों भविजन पार लगे,
ओ नया के खेने वाले मुझको भी कुछ देवो जगह ।
पार बसत है मुक्ति तुम्हारी कठिन "वृद्धि" पथ वाली ॥३

भजन ५६

[तर्ज—उड़ी हवा मे जाती है गाती चिड़िया ये राग—अछूत कन्या]

वही नाव ये जाती है, भवसागर मे भगवान ।
आवो भगवन शीघ्र बचाओ आवो दयानिधान ॥ टेर ॥
जीर्ण शीर्ण मेरी ये नैया तुम बिन इसका कौन खिवैया ।
मुझ अशरणको शरण तुम्हारा, भव भंजन भगवान ॥१॥
मोह भँवर मे आन फँसी है, द्वेष मत्स्य ने इसे ग्रसी है ।
आवो अब नहीं देर लगाओ, हो रहा मैं हैरान ॥ २
अनन्त ज्ञान से तुम सब जाना, इतनी मेरी विनती मानो ।
जौहरी को आधार तुम्हारा, दे दो अभय का दान ।

भजन नं० ६०

(तर्ज—तुम बिन हमरी कौन खबर ले गोवरधन गिरधारी—पुकार)

तुम बिन मेरा कौन सहाई श्री जिनवर हितकारी,
श्री जिनवर उपकारी ॥ तुम०
सेठ सुदर्शन के संकट मे कौन तुम्हीं तो आये थे;
सूली से सिंहासन कीना, उनके प्राण बचाये थे ।
सीताजी की अग्नि परीक्षा तुमने पार उतारी ॥ श्री०

भविष्य दत्त पर भीड़ पड़ी जब, तुमको हृदय बिठाया था,
आफत मेटी सारी उसकी सानन्द घर पहुंचाया था।
द्रौपदी के चीर हरण की तुमने विपदा टारी ॥ श्री०
इस विधि संकट के अवसर पर जिसने तुमको ध्याया था,
दुःख मिटा सुख 'वृद्धि' कीनी, भव से पार लगाया था,
मेरे भी दुःख दूर करो प्रभु आया शरण तुम्हारी ॥ श्री०

भजन नं० ६१

निज धर्म का डंका आलम में,बजवा दिया पद्म जिनेश्वर ने
सुख शांतिसे रहना दुनियाको,सिखला दिया पद्म जिनेश्वरने
अपना गौरव अपना जलवा, दिखला दिया पद्म जिनेश्वर ने
हां मृग केहरि को एक जगह, बिठला दिया पद्म जिनेश्वर ने
यज्ञों में गूंगे मूक पशु, जब लाखों मारे जाते थे।
हिंसा से बढ़कर पाप नहीं, फर्मा दिया पद्म जिनेश्वर ने।३
जब जीव हुए थे धर्म-भ्रष्ट, तब पापों की बन आई थी।
चुंगल से इनके जीवों को, छुड़वा दिया पद्म जिनेश्वर ने।४
मिथ्यातका खण्डन कर डाला, अभिमानका मर्दनकर डाला
गौतम जैसे गण धर को, परचा लिया पद्म जिनेश्वर ने ॥५
हृदय में जिसके राग द्वेष की, अग्नि सदा ही जलती थी।
जब तजो द्वेष तब मोक्ष मिले, फर्मा दिया पद्म जिनेश्वर ने
पैदास हकीकत दुनियाकी,दमभरमें,दमभरमें हुईसब हमको अयां
जो राज था आंखों आंखोंमें,समझा दिया पद्म जिनेश्वर ने॥७

राजुल के मनोविचार

भजन नं० ६२

चाल [प्रेम नगर में बनाऊंगी घर में तज के सब घर बार

आज सखी मैं जाऊंगी वन में तज कर सब परिवार ॥ टेक
शोरपुरी से आये ब्याहन स्वामी नेम कुमार;
तोरन से रथ फेर सिधारे, सुन कर पशू पुकार ॥ १
मोड़ मुकुट कर कंगन तोड़ा, तोड़े मोतियन हार;
पंच महाव्रत धर कर स्वामी, जाय चढ़े गिरनार ॥ २
और न वर की चर्चा छेड़ो, शील को लागे गार;
अन्य पुरुष सब भाई मेरे, नेमीश्वर भरतार ॥ ३
नेम ही तन-मन नेम ही जीवन, नेम ही प्राणाधार;
नेम पिया बिन ऐरी सखी अब सूना सब संसार ॥ ४
नेम पिया ने मोहे बिसारा, प्यारी लगी शिव नार;
मैं भी उन संग जोग धरूंगी, करूंगी आत्म सुधार ॥ ५

भजन नं० ६३

वीर उपदेश

जिन धर्म का डंका पृथ्वी पर, बजवा दिया वीर जिनेश्वर ने।
झण्डा चौतर्फ अहिंसा का फहरा दिया वीर जिनेश्वर ने॥ टेक
होते थे लाखों यज्ञ जिन्हीं में, निर्दयता से पशुओं की।
होती थी होम धड़ाधड़ वो सब, दूर की वीर जिनेश्वर ने॥

काटे जाते थे जीव कई, देवों पर धर्म को कह कह कर।
बचवा दी जान दया करके, उनको भी वीर जिनेश्वर ने॥
रच कर खोटे शास्त्र जगत को, पाखण्डी बहकाते थे।
खण्डन करके दूर किया, पाखण्ड को वीर जिनेश्वर ने॥
जग जीव कुगुरु की संगति से, भव-दधि में गोते खाते थे।
देकर सत उपदेश उन्हों को, तारे वीर जिनेश्वर ने॥
हो कल्याण जगत का आगे, सुनने और सुनाने से।
पावन जग में वो जिनवाणी, छोड़ी वीर जिनेश्वरने॥

भजन नं० ६४

असि आउसा तू रटा कर रटा कर।
महा मंत्र है यह जपा कर जपा कर॥ टेक
तुरिय काल ने आके जब जग पसारा।
मिटा कल्प वृक्षों का आनन्द सारा॥
ऋषभ ने बनाया प्रजा को बुलाकर। असि०।
धरम नाम पर जब कि हिंसा मचाई।
सभी जीवों ने की थी हा त्राहि-त्राहि॥
बचाया उन्हें वीर ने यों सिखाकर। असि०।
बलि ने मुनि गण को जब था सताया।
तो विष्णु ने आकर उन्हें था बचाया॥
हुआ पार अंजन वहीं मंत्र पा कर। असि०।

भजन नं० ६५

दुनिया मे देखो सैकड़ो आये चले गये।
सब अपनी करामात दिखाये चले गये ॥
अर्जुन रहा न भीम न रावण-महाबली,
इस काल बली से सभी हारे चले गये।
क्या निर्धनों धनवन्त और मूर्खों गुणवन्त,
सब अन्त समय हाथ पसारे चले गये।
सब जन्त्र-मन्त्र रह गये कोई बचा नहीं,
एक वे बचे जो कर्म को मारे चले गये।
सम्यक्त धार 'न्यामत' यही दिल मे समझ ले,
पछतायगा जो प्राण तुम्हारे चले गये।

भजन नं० ६६

[तर्ज—किस्मत जुदा जुदा है]

दो फूल साथ फले, किस्मत जुदा जुदा है;
नोशे के एक सर पर, एक क़ब्र पर चढा है ॥ टेक
दो भाइयो को देखो, आपस मे है हकीकी;
एक शाहे नाम वर है, दर दर का एक गदा है।
निकले सदफ से मोती दो एक साथ ऐसे;
एक पिस रहा खरल मे, एक ताज मे टका है।
एक ही शजर की डाली, दो एक साथ काटी;
एक आग मे जलाई, एक का बना असा है।

दो मुर्ग असीर आये, देखो नसीब उनको;
सदके से एक छूटा, एक जिबह हो रहा है।

भजन नं० ६७

सुना जा सुना जा सुना जा महावीर,
हितकारी वाणी सुना जा महावीर ॥ टेक
विषयन चाह अगिन को दाह,
मिटा जा २ मिटा जा महावीर
ये भव पीर मिटा जा महावीर ॥१॥
भटक रहयो चहुं गति के मांहि,
दिखा जा दिखा जा दिखा जा महावीर
अब भव तीर दिखजा महावीर ॥ २
पर में रच निज रूप भुलाई, बताजा बताजा बताजा महावीर
आतम रूप बता जा महावीर ॥ ३
आतम ही परमातम होई, बनाजा बनाजा बनाजा महावीर
आप समान बना जा महावीर ॥ ३

भजन नं० ६८

बिना मुहूर्त की डोली।

जब तेरी डोली निकाली जायगी, बिन महूर्त के उठाली जायगी
उनहकीमोंसे यूं कहदो बोलकर, करतेथे दावाजो किताबें खोलकर
यह दवा हरगिज न खाली जायगी ॥ १ ॥
क्यों गुलोंपरहोरहीबुलबुल निसार, है खड़ापीछेशिकारीखबरदार

मार कर गोली गिराली दी जायगी ॥ २ ॥
जर सिकंदरका यहींपर रहगया, मरतेदमलुकमानभी यूं कहगया
यह घडी हरगिज न टाली जायगी ॥ ३ ॥
ये मुसाफिर, क्योंपसरताहैयहा, यह किराये पर मिला तुझकोमकाँ
कोठरी खाली कराली जायगी ॥ ४ ॥
चेतकर ऐ भाई तुम प्रभुको भजो, मोह-रूपी नींदसे जल्दीजगो
आत्मा परमात्मा हो जायगी ॥ ५ ॥

भजन नं० ६९
(तर्ज—नजरिया लाग रही किस ओर)

नजरिया लाग रही प्रभु ओर ।
दीनबन्धु वहहैं जग नायक, दीनन के ये हैं सुख दायक ;
उनकी अनुपम कोर नजरिया ।
नाम निरंजन, सब सुख कंजन, श्री जिनराज सर्व दुख-भंजन
लगी उन्हीं से डोर । नजरिया ।
उनकी छवि देख हर्षाते, इन्द्रादिक भी पार न पाते ;
प्रेम जगत में शोर । नजरिया ।

भजन नं० ७०

चार शरण

[तर्ज—न छेड़ा हमें हम सताये हुए हैं]

शरण वीर तेरी हम आये हुए हैं ।
शीश तेरे चरणों में नाये हुए हैं ॥टेक॥

कहीं भी जगत में न सुख हमने पाया ।
करम बैरी के हम सताये हुए हैं ॥१॥
नहीं परको जाना, न आपा पिछाना ।
नशा मोह अनादि पिलाये हुए हैं ॥२॥
तेरे नाम नामी को सुनकर के स्वामी ।
हम अर्जी को अपनी ये लाये हुए हैं ॥३॥
है शिवपद हमारा सो मिलजाय हमको,
इस वर की आसा लगाये हुए हैं ॥ ४ ॥

भजन नं० ७१

[तर्ज—रखियां बंधाओ भैया]

व्रत को लेलो भैया बुढ़ापो आयो रे ॥ टेक ॥
मोह की गठरी, सब जग रुलाती ;
प्यारे हमारे भैया, जगको है झूठो रोग । व्रतको ॥
महावीर सरीखे, तुम भी हो जावो वैसे ;
तोरी लगेगी नैया, इस उससे पार । व्रत को ॥
प्रेम नैया है मझधार, व्रत लेके लगाओ पार ।
प्यारे चलेगी भैया, महाव्रत को ले लो , व्रत को ॥

भजन नं० ७२

[तर्ज—प्रेम बिन कोई नहीं अपना]

धर्म बिन कोई नहीं अपना ॥ टेक ॥
विकल प्राण जब निकल जांयगे सब सम्पत सपना ।

झूठा तन धन झूठा यौवन, झूठी जग की रचना ॥
झूठ–झूठ अरु क्यो न तजेरे, झूठ नहीं अपना ।
धर्म ध्यान धर धर्म गान कर, धर्म सदा करना ।
धर्म तुम्हारी आत्म वस्तु है, धर्म ही चित मे रखना ।
धर्म मोक्ष का द्वार जगत में, कोई नहीं अपना ॥

भजन न० ७३

विरहिणी राजुल

सखी री मै तो नेम पिया संग जाती ।
जिनके पिया परदेश बसत हैं, लिख लिख भेजत पाती;
मेरे पिया गिरनार बसत है, नासत कर्म अघाती ।
दधि कत तप की अग्नि धुरन्धर, कर्म जले दिन राती;
नेम प्रभु की मे मद पीऊं, थकी फिरूं दिन-राती ।
जूनागढ न वहां द्वारका, मैं तो नेमि पिया से राती;
नथिया नित प्रति भक्ति भाव धर, जिनवर के गुण गाती;
सखी री मै तो नेम पिया संग जाती ॥

भजन न० ७४

स्वारथ को संसार जगत मे, स्वारथ को संसार ॥ टेक
बिन स्वारथ कोई बात न पूछे, देखो खूब विचार ॥जगत०
पिता कहे मेरा पुत्र सुपुत्र, अक्लवन्त होशियार ॥ जगतमें०
सुन्दर नारी वस्त्र-अभूषण, मागत बारम्बार ॥ जगतमें०

फिर करदो शुरू अब जपन धीरे धीरे ॥४

मिटादो बुरे भाव अब दिल से भगवत,
धारो सदा दिल शुभ भाव भगवत।
बनोगे तभी शिवरमन धीरे धीरे ॥ ५

भजन नं० ७८

जय जिन पद्म पद्म स्वामी,
तुम बिन जग में कौन खिवैया, मात पिता न कोई भैया।
पार करो दुखियों की नैया, जय जिन पद्म पद्म स्वामी ।१।
अन्धे लगड़े लूले आते, तुमही उनका कष्ट मिटाते।
खुश होकर प्रभु मंगल गाते, तुमही उनका बंध छुड़ाते।
रोते आते हंसते जाते जय जिन पद्म पद्म जिन स्वामी ।३।
भूल चूक जो हमसे होवे क्षमा करे पद्मा प्रभु मोहे।
मैं आया तेरी शरणमें, जय जिन पद्म पद्म जिन स्वामी।४।

भजन नं० ७६

मुसाफिर क्योंपड़ा सोता, भरोसा है न एक पलका।
दमादम बजरहा डंका, तमाशा है चलाचल का ॥ टेक ॥
शुबह जो तख्त शाहीपर बड़े सज धजके बैठे थे ;
दुपहरे वक्त में उनका हुआ है बास जंगल का ॥ १ ॥
कहां हैं राम ओ लक्ष्मण, कहां रावण से बलधारी।
कहां हनुमन्त से जोधा, पता जिनके न था बल का ॥२॥
उन्हों को काल ने खाया, तुझे भी काल खायेगा ;

सफर सामान उठकर तू बनाले बोझ को हल्का ॥३॥
जरासी जिन्दगानी पर, न इतना मान कर मूरख ;
यह बीते जिन्दगी पलमें, कि जैसे बुलबुला जल का ॥४॥
नसीहत मानले ज्योती उमर पल पल मे कम होती ;
जपन कर आज जिनवरका,भरोसा कुछ न कर कल का ॥५॥

भजन नं० ८०

चेतवानी ।

करो कल्याण आतम का, भरोसा है नहीं दम का ॥टेक॥
बनी ये काच की शीशी, क्यों फूले देख कर इसको ;
छिनक मे फूट जायेगी, बबूला जैसे शबनम का ॥ १ ॥
ये धन-दौलत मका-मन्दिर, जो तू अपने बताता है;
नहीं हर्गिज कभी तेरे, यह सब जंजाल है गम का ॥ २
सुजन सुत नार पितु मादर, सभी परिवार और ब्रादर;
खड़े सब देखते रहेंगे, कूच होगा जभी दम का ॥ ३
बडी अटवी ये जग रूपी, फसे मत जान कर इसमें;
कहे "चुन्नी" समझ दिल मे, सितारा ज्ञान का चमका ॥४

भजन नं० ८१

तर्ज (छोटी बडी सुइया रे)

व्यसन दुख कारी रे, सातों मे कोई सार ना ॥ टेक
एक दुख देखो मैने जुआ के खेल में, जुआ के खेल मे
पाण्डव से राजा रे, रानी का अपनी हारना । व्यसन

एक दुख देखो मैंने, चोरी के जाल में चोरी के जाल में
शिवदत्त पापी रे, नरकों का पट उघारना। व्यसन
एक दुख देखो मैंने वैश्या की प्रीति में वैश्या की प्रीति में
चारुदत्त श्रेष्ठी रे, दुख पायो है शुमार ना। व्यसन

भजन नं० ८२

तर्ज—[हम तो मक्के को जायगें झूम झूम कर]

हम तो दर्शन को जायेंगे झूम झूम कर
पुन्य बांधेंगे नाचेंगे घूम घूम कर ॥ १
देखो कैसो मनोहर प्रतिमा प्रभू
गुण गायेंगे आयेंगे घूम घूम कर ॥ २
वीत रागी झलक कैसी आभा कार
हम तो देखेगें हर्षेगें झूम झूम कर ॥ ३
काटे कुमरेश अपने करम दर्श कर
हम तो चरणों को आयेंगे चूम चूम कर ॥ ४

भजन नं० ८३

पद्म पद्म पुकारू मैं बन में, पद्म आकर बसो मोरे मन में।
पद्म इतना न हमको रिझाओ, अपने सेवक पर रहम खाओ।
कहां जाऊं ढूढ़न को बन में ॥ पद्म आकर०
आके वैठो हमारे तन में, मुझको चैन नहीं पल छिन में।
मन लगाऊं ऐसी लगन में ॥ पद्म आकर०
आके जाट के बैठो हो घट में, प्रतिमा खोद निकाली झपट मे

वह चाह लगी मेरे तन में ॥ पद्म आकर०
मन ही ध्यावत है अपने मन में, सुन्दर आया है शरण में
मेरी नाव पड़ी भंवर में ॥ पद्म आकर ''

भजन न० ८४
बधाई (तर्ज—फिल्म झूला)

देखो त्रिशला माताके आज बधाई है ।
बोलो बधाई है, बधाई है, बधाई है ॥
राजा के महल पै नौबत बाजे, घरघर में शहनाई है॥ देखो
देखदेख बालकके लक्षण लासानो, फूलेरराजा हैं फूलोररानो
शुभ दिन शुभ घडी आई है ॥ देखो ''
जगके कुमारोंसे बिलकुल निराले, दयावो हितैषी क्षमा धर्म वाले
लेकिन कर्मों से इनकी लड़ाई है ॥ देखो ''
महावीर हमको भूल न जइयो, नइया सुमत की भी
किश्ती सुमत की भी, नौका सुमत की भी पार लगैयो
बडी बडी आशा लगाई है ॥ देखो ''

भजन न० ८५

कह रहा है आसमा, यह सब समां कुछ भी नहीं ।
यह चमन धोके को रही, के सिवा कुछ भी नहीं ॥
जिनके महलों में हजारों रंग के फानूस थे ।
झाड उनके कब्र पर है औ निशा कुछ भी नहीं ॥
तग्न वालों का पता देते हैं तग्ने गौर के ।

खोज लगता है यहीं तक बाद जां कुछ भी नहीं ॥
उड़ गये तख्ते सुलेमा कट गये परियों के पर ।
गर किसी ने चार दिन बाँधी हवा कुछ भी नहीं ॥
कहते हैं दुनियां में होता दुःख हर इक का इलाज ।
है वए दरदे जुदाई की दवा कुछ भी नहीं ॥
जिनके उके की सदा से गूंजते थे आस्मां ।
मकबरे में खुद व खुद है 'हूं' 'न हां' कुछ भी नहीं ॥

भजन नं० ८६

जैन धर्म अनमोला मेरा जैन धर्म अनमोला ॥ टेक
इसी धर्म में वीर जिनेश्वर मुक्ति का पंथ टटोला ॥ १
इसी धर्म में कुन्द कुन्द मुनि शुद्धा तम रसघोला ॥ मेरा०
इसी धर्म में उमा स्वामी ने तत्वारथ को तोला ॥ मेरा०
इसी धर्म में श्री अकलंक देवने बोद्धोंको झकझोला ॥ मेरा०
इसी धर्म में मान तुंग मुनि जेलका फाटक खोला ॥ मेरा०
इसी धर्म पर टोडरमल ने प्राण तजे बनि भोला ॥ मेरा०
ऐसे उत्तम धर्म में पाया 'मक्खन' ने ये चोला ॥ मेरा०

भजन नं० ८७

तर्ज [दिवाली फिर आ गई सजनी]

शरण में हम आ गये भगवन हां भव से पार लगादो ।टेक
अष्ट कर्म ने प्रभु जी मुझको भव भव माहि रुलाये ।
आखिर अब हम तंगी पाकर शरण तुम्हारी आये ॥शरण०

अंजन जैसे चोरों को प्रभु आप हीने उवारे।
सीता जैसी महा सती के आपने कष्ट निवारे।
अब मुझको भी क्यों विसराओ अपना विरद दिखादो ॥श०
आके प्रभु जी अब तो सुनलो विनती मेरी सारी।
सुरपुर की इच्छा नहीं मुझको मुक्ति पर हूं वारी।
अब बालक की विनती सुनलो मोक्ष का मार्ग बता दो ॥श०

भजन नं० ८८

तर्ज [वाना मन की आखें खोल]

रे मन पद्म की जय बोल ॥ टेक

यह दुनिया है एक तमाशा, इसकी क्या करता है आशा।
अगर चाहता है सुखमग तो अपनी गाठ टटोल।
रे मन पद्म की जय बोल ॥
दुर्लभ ये मानुष की काया, लूट रहा क्यों अनुपम माया।
बदले में क्यों हँस हँस लेता कुटिल वासना मोल।
रे मन पद्म की जय बोल ॥
करना है जो उसको करले है अवसर भव सागर तरले।
ज्ञानमयी अपने अन्तर में प्रेम भावना घोल ॥ रेमन०
विश्व गुलामी, है नादानी, आई यह स्वतन्त्रता रानी।
स्वागत कर 'भगवत' अब उसका अपने घटपट खोल।रे०

पद्म नाथ स्वामी मै क्या चाहता हूं।
कि कर्मों से होना जुदा चाहता हूं ॥ टेक

मिली तुमको पदवी जो निर्वाण पदकी ।
कि तुम जैसा मैं भी हुआ चाहता हूं ॥ १
फँसा हूं मैं चक्कर में आवागमन के ।
कि अब इनसे होना रिहा चाहता हूं ॥ २
कृपा कर कृपा कर तू मुझपे दयालू ।
क्षमा चाहता हूं क्षमा चाहता हूं ॥ ३

भजन नं० ८६

प्रेमी बन कर प्रेम से, पद्म के गुण गाया कर ।
मन मन्दिर में गाफिले झाड़ू रोज लगाया कर ॥ टेर ॥
सोने मे तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा ।
इसी तरह बर्बाद तू बन्दे, करता अपने आप रहा ।
प्रातःकाल उठ प्रेम से, सत्संगत में आया कर ॥मन०॥
नर तन के चोले का, पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं ।
जन्म जन्म के शुभ कर्मोंका, जब तक मिलता मेल नहीं ।
नर तन पाने के लिये, उत्तम कर्म कमाया कर ॥ मन०॥
भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी, तैने रोटी खाई क्या ।
दुखिया पास पड़ा है तेरे; तैने मौज उड़ाई क्या ॥
सबसे पहिले पूछकर भोजन, तू फिर खाया कर ॥मन०॥
देख दया उस पद्म प्रभु की, जैन शास्त्र का ज्ञान दिया ।
जरा सोचले अपने मनमें कितनों का कल्याण किया ।
सब कर्मों को छोड़कर इनको ही तू ध्याया कर ॥मन०॥

भजन नं० ६०

(तर्ज—पायल की गति घायल जाने)

प्रभु तुम्हीं दुख हरता हो, मेरा और न साथी कोय।
जिसको मैं कहता हूं अपना।
वह है मन का सूक्ष्म सपना॥
धरे रहेंगे सभी जगत मे साथ न देगा कोय ॥ १ ॥
पिता पुत्र प्रिय साजन नारी।
सब रखते मतलब की यारी॥
प्राण जायगे निकल देह से, देह न संगी होय ॥ २ ॥
कर्म शत्रु जिन पीछे लागे ।
जिनसे फिरते भव भव भागे ॥
चतुर्गति के फन्दों से अब, कौन छुडाये मोय ॥ ३ ॥
तत्व ज्ञान हमने नहीं जाना।
धर्म अधर्म नहीं पहिचाना ॥
सप्त भंगिका भाव हुए बिन, मोह न जीते कोय ॥४॥
रहे भावना यहही मेरी ।
पावन भक्ति मिले प्रभु तेरी॥
होय मिलाप सभी भव ऐसो, जब लग मोक्ष न होय ।५॥

भजन नं० ८१

[तर्ज—राम राज्य की बिजरी से]

सुशीमा के दुलारे की हम कथा सुनाते हैं।
कोशाम्बी के उजियारे की हम कथा सुनाते हैं॥ टेर

बढ़ गया पाप जब भारी, हुए दुःखी सभी नर नारी,
धरणी नृप के घर में जन्मे पद्म प्रभु अवतारी।
महिमा जिनकी सदा सकल जन गाते हैं ॥ हम०
यज्ञ पशूवध हटे, सभी दुःख कटे,
दया में डटे गुणी सुख पाये।
ज्ञानी ध्यानी बने, कर्म सब हने,
दुःखों में छने, नहीं घबराते हैं ॥ हम०
पद्म प्रभु कहलाये, परम पद पाये,
जगत में नामी सभी को पाये।
ज्ञान दान बहु दिया जगतहित किया,
त्याग के भेद सभी समझाते हैं ॥ हम०
जिस लिये लिया मोक्ष महा सुखकारी,
देव नागेन्द्र मिल सभी करें जय जय कारी ॥ हम०

भजन नं० ६२

क्यों न ध्यान लगाये, पद्म से बावरिया।
जाना देश पराये, झमेला दो दिन का ॥ टेक
जीवन तेरा है इक सपना, इस दुनिया में कोई न अपना।
हंस अकेला जाय रे पंछी बावरिया ॥ क्यों न०...
माता बहिना चाची ताई, पिता पुत्र अरु भाई जँवाई।
मतलब से प्रीति लगाये रे पंछी बावरिया ॥ क्यों न०...
जो हैं तुझको सब से प्यारे, मृत्यु देख होवेंगे न्यारे।

संग न कोई जाय, रे पंछी बावरिया ॥ क्यों न ··
जिस तन को तू रोज सजाये, आखिर मिट्टी मे मिलजाये।
फिर पीछे पछताये रे पंछी बावरिया ॥ क्यों न ··
जिस माया पर तू इतराये, आखिर मे कुछ काम न आये।
यहीं पडी रह जाय रे पछी बावरिया ॥ क्यों न ··
आखिर धर्म ही काम मे आवे, हरदम तेरा साथ निभाये,
त्रिलोकी नाथ समझाय, रे पंछी बावरिया ॥ क्यों न ··

भजन न० ६३

अब तेरे सिवा प्रभु मेरा कौन खिवैया।
भगवान किनारे से लगादे मेरी नैंया ॥
मेरी खुशी की दुनिया कर्मों ने छीन ली।
मेरे सुखों की कलियां आकर के बीन ली ॥
अब तू ही बचा मुझको प्रभु लाज रखैया।
भगवान किनारे से लगा दे मोरी नैया ॥

भजन न० ६४

हे प्रभु करुणा जनक मेरा रुदन सुन लीजिये।
द्वार पर ठाडा हूँ मैं इक दृष्टि मुझ पर कीजिये ॥
गति चार में भ्रमता फिरा शरणा कहीं पाया नहीं।
विख्यात जग में नाम तेरा सुन यहां आया सही ॥
आनन्द दायक दर्श तेरा कर पवित्र हुआ यदा।
छवि वीत राग निहार तेरी दुख गये तन ही तदा ॥

नहिं जानता था हे प्रभु ! जब मैं तुम्हारे नाम को।
तेरे कृतघ्नी चोर का ही नाम जपता घाय को॥
हुई ऐसी दशा मेरी प्रभु पंचाग्नि तप मैंने किया।
कल्याण कारो धर्म तेरा ध्यान उस पर नहिं दिया॥
जो भव्य आत्म धर्म तेरा मैं सदा ही पालता।
तो शीघ्र ही भरतार होकर मुक्ति सुख को चाखता॥
पतित आतम हुई मेरी शुद्ध-आतम कर प्रभु।
नष्ट कर दुर्ध्यान को शुभ ज्ञान तू अब दे प्रभु॥
प्रार्थना जिनराज मेरी शीघ्र ही सुन लीजिये।
जान करके भक्त प्रम को मुक्ति नारी दीजिये॥

भजन नं॰ ६५

(तर्ज—गाली की)

सुनज्यो पद्म प्रभु भगवान हेलो दीन को जी ॥ टेर ॥
मैं जो दीन दुखी हूं भारी।
म्हारी सम्पति लुटगई सारी॥
पकड़ो मोह कर्म को जब से म्हारी सुघ ल्योजी ॥सुनज्यो॥
घर का मतलब का छै साथी।
वे तो हो छै उलटा घाती॥
सारी आफत मोपर आती भुगतूं एकलोजी ॥ सुनज्यो ॥
बन रह्यो जाल कर्म को भारी।
ईमें फंस रही अक्कल म्हारी॥

मिट जाय सब का क्लेश हमारी पीर हरो—हमारी ।
प्रत्येक मास की पंचम तिथि को ।
मेला भरता शुक्ल पक्ष को ॥
घटे बढ़े ना लेश हमारी पीर हरो—हमारी ।
राज प्रभु दर्शन को आओ ।
पूजा रचावो पुन्य बढ़ाओ ॥
मिटे अशेष क्लेश हमारी पीर हरो—हमारी ।

भजन नं० ६७

पद्मा की जय २ बोल भविकजन पद्म की जय बोल ।
सच्चे दिलसे बोल भविकजन पद्म की जय बोल ॥
श्रीपाल को पार लगाया, सती अंजना बन्ध छुड़ाया ।
तुम्हीं तारण हारे भविकजन, पद्म की जय बोल ॥टेक॥
सेठ सुदर्शन तुमने तारा, सोमा सतीं का दोष निवारा ।
नाग का हार बनाया भविकजन, पद्म की जय बोल ।टेक।
सीता प्रति तुम कमल रचाया, अग्निकुण्डका नीर बनाया
बहती सुन्दर धार भविकजन पद्म की जय बोल ॥ टेक ॥
सती द्रोपदी तुमको ध्याई, भरी सभा में लाज बचाई ।
बोली जय २ कार भविकजन, पद्म की जय बोल ॥टेक॥
दूर २ के नर और नारी, मेटो प्रभुजी पीर हमारी ।
हम दुखिया संसारी, भविकजन पद्म की जय बोल ।टेक।

* ओ३म् *

चतुर्थ अध्याय

[तर्ज—ओ सलोने साजना कैसे छिपोगे]

कैसे मिलोगे अब तुम कैसे मिलोगे।

राजुल के प्राण प्यारे, नाथ कैसे मिलोगे ॥ टेक

अबला को नाथ किस लिये तुम छोड चले हो।

ऐ प्राण प्यारे किस लिये मुखमोड चले हो।

ढूंढूंगी पहाड झाडी मे तुम कैसे छिपोगे ॥ १

सखियों के साथ राजुल गिरनार चली है।

यादव के नन्द लाल से जाकर के मिली है।

'वल्लभ कुंवर' की नैया नाथ पार करोगे ॥ २

भजन नं० ६६ वीर पात

महावीर वन्दे, महावीर वन्दे !

उठो वीर भक्तों ! न जीवन गवाओ।

अभय होके कर्तव्य अपना निभाओ ॥

महा मंत्र ये विश्व-भर मे गुंजाओ। महावीर वन्दे ॥ १

दुबारा अखर ज्योति इस की प्रगट हो।

इसी का हृदय मे बना चित्रपट हो ॥

कि हर जीव धारीकी बस,एक रट हो। महावीर वन्दे ॥ २

लुटी जा रही लाज थी जब सती की।

कि खतरे मे थी आबरू द्रोपदी की ॥

पुकारा न इमदाद थी जब किसीकी। महावीर वन्दे ॥ ३

सुदर्शन भी था एक इनका ही वन्दा।
फना हो गया जिसकी फांसी का फन्दा ॥
लगाया ये नारा जभी दुख निकन्दा। महावीर वन्दे ॥ ४
ये वह मंत्र है जो हृदय को जगाता।
पतित, दीनको, पूज्य, पावन वनाता ॥
कि 'भगवत' ये फिकरा है आनन्द दाता।महावीर वन्दे ॥ ५

भजन नं० १००

तर्ज [मेरे विछुड़े हुए साथी तेरी याद सताये]

मेरे पद्म प्रभु प्यारे तेरी याद सताये ॥ टेक
दिन प्रति दिन मोहे करम सताये, भव भव मांहि रुलाये
तुम तो हम से दूर वसे हो, इनसे कौन छुड़ाये ॥ १
विषयों ने मुझ को है लुभाया, नरक वेदना में जकड़ाया
तुम बिन कौन हमारा वेड़ा भगवान पार लगाये ॥ २
चुन चुन सुमन ये थाल सजाये पूजन को दिल हमरा चाहे
मैंने तेरा ध्यान लगाया चिदानन्द सुख पाये ॥ ३
बार २ तेरी सुध आये दर्शन को नित जी ललचाये
कर कर बद्ध देवालय टाड़े चरणन शीश झुकाये ॥ ४

भजन न० १०१

वीरा २ मैं पुकारूं तेरे दर के सामने ॥ टेक
दिल तो मेरा हर लिया महावीर जी भगवान ने
दो मुझे शक्ति प्रभु जो बुद्धि मेरी हो चपल

तेरी चर्चा हम करेंगे हर बसर के सामने ॥ १
सुना है तोपके गोले से तूने था बचाया है प्रभु
द्रोपदी की लाज रखी कौरव दल के सामने ॥ २
मेरी ख्वाहिश है फकत महावीर के दीदार की
इस लिये धूनी रमाई तेरे दर के सामने ॥ ३
महावीर जी इस दास दर्शन को दिखादो आन के
हम तुम्हारे सामने हैं तुम हमारे सामने ॥ ४

भजन नं० १०२

[चाल—प्रेम नगर में बनाऊंगी घर में]

सोच समझ कर देख ए चेतन यह ससार असार ।
झूठा तन धन झूठा जोवन, झूठा है घर बार ॥ टेक ॥
मरना सबको इक दिन निश्चय, चेतन चित्त चितार ।
दल बल देवी देव जगत मे, कोई न राखन हार ॥
क्या निर्धन धन वन्तु गुणी क्या, सभी दुखी संसार ।
नहीं नही सुख जग के भीतर देखो दृष्टि पसार ॥
स्वार्थ के सब सगे संगाती, स्वार्थ का परिवार ।
स्वार्थ लाग करें सब प्रीति, मात पिता सुत नार ॥
जीव अकेला भिन्न सभी से, तन है अशुचि अगार ।
शुद्ध रूप शिवराम निहारो, करम कलंक निवार ॥

भजन नं० १०३ (कीर्तन ध्वनि

(१)—प्रेम से बोलो जिन चन्द बोलो ?

जगपति त्रिसला नन्द बोलो ?
दिन प्रति आनन्द कन्द बोलो ?
(२) सन्मति, सन्मति, श्री जिनचन्द ?
दया-प्रवर्तक त्रिसला-नन्द ??
(३) त्रिशला-नन्दन, जय अति वीर ?
(४) महावीर जय जय ?
(५) महावीर, महावीर, महावीर, वीर ?
वर्द्धमान, वर्द्धमान, मेटो भव-पीर ??
(६) ॐ जय ॐ जय ॐ ॐ जय जय ??

भजन नं० १०४

[तर्ज—जिन्दगी है प्यार से प्यार से बिताये जा]

धर्म के प्रचार में जीवन को बिताए जा।
जाति के सुधार में तन मन को लगाये जा।
—दौलत को लुटाए जा॥ टेक

है अविद्या का प्रचार, छा रहा है अन्धकार।
ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान को हटाए जा।
—रोशनी दिखाए जा॥ १

प्रेम का प्रचार हो, द्वेष का संहार हो।
संगठन बनाय अपनी, शक्ति को बढ़ाये जा।
—फूट को मिटाए जा॥ २

भजन नं० १०५

[तर्ज—तू कौन सी नगरी में, मेरे चाद है आजा]

कौन से जा देश बसा वीर है आजा।
लागी है मेरी दिल से लगन दर्श दिखाजा ॥ टेक
दिल टूट रहा है कि मेरा वीर कहा है।
आके इक देके दरश तृषा मिटाजा ॥ १ ॥
अब धर्म अहिंसा वो तेरा भूल रहे हैं।
वानी वो मधुर ज्ञान भरी फिर से सुनाजा ॥२॥
बिन तेरे हुआ देश दुखी आज सभी है।
कृपा की नजर कर के प्रभो कष्ट मिटाजा ॥३॥
जो दर्श की शिवराम तेरे चाह लगी है।
खुद को समझ वीर जरा खुद में समा जा ॥४॥

भजन नं० १०६

(तर्ज—या इलाही मिट न जावे दर्दे दिल)

धूम वाड़ा ग्राम मे क्या आज है।
पद्म की जय पद्म की आवाज है ॥ टेक ॥
पद्म ध्वनि बोलें सभी जोर से।
दे रही जय ध्वनि सुनाई आज है ॥१॥
धन्य है तेरे पिता अरु मात को।
दर्द जिन से मिट गया सब आज है ॥२॥
नाम लेकर पद्म प्रभु भगवान का।
विश्व सारा मगन पूरा आज है ॥ ३ ॥

भजन नं० १०७

(तर्ज—दीवाली फिर आगई सजनी)

शरणमें हम आगये भगवन हां हां भवसे पार लगादो ॥टेर॥
अष्ट कर्म ने प्रभुजी मुझको भव भव मांहि रुलाये।
आखिर अब हम तंगी पाकर शरण तिहारी आये ॥शरण०
अंजन जैसे चोरों को प्रभु आपही ने उबारे।
सोमा जैसी महा सती के आपने कष्ट निवारे॥
अब मुझकोभी क्यों बिसराओ, अपना विरद दिखादो ॥शरण
आके प्रभु जी अब तो सुनलो विनती मेरी सारी।
सुरपुर की इच्छा नहीं मुझ को मुक्ति पर हूँ वारी॥
अब बालक की विनती सुनलो मोक्ष का मार्ग बतादो ॥शर॥

भजन नं० १०८

तूही तूही याद मोहे, आवेजी दरद में ॥ टेक
सुख सम्पतिमें सब कोई साथी, भीर पड़े भगजाये दरदमें ॥१
भाई बन्धु और कुटुम कबीला, तासंग मन ललचावे दरदमें२
प्रेम दिवानाहै मस्ताना, सदा जिनंद गुण गाये ॥दरमें ॥३॥

भजन १०९

तेरे दर्शन से भगवान हुआ मुझको आनन्द महान ॥टेक॥
जिसने तेरा ध्यान लगाया, उसने मोक्ष पदारथ पाया॥
कर लिया आतम कल्याण ॥ १ हुआ०
मुझ को शान्ति छवि दिखलाई है, भगवन यह मेरे मन भाई
तेरा दर्शन सुख की खान ॥ २ हुआ०

तुम हो दीना नाथ दयाल, करते हो सब का प्रति पाल ।
जग मे हो तेरा गुण गान ॥ ३ हुआ०
यह प्रेम शरण मे आया, अग फूला न समाया ।
देख कर तेरी निराली शान ॥ ४ हुआ०

भजन न० ११०

जय पारस जै पारस जै पारस देवा
माता तेरी वामा देवी पिता अश्व देवा
काशी जी मे जन्म लिया था हो देवो के देवा
आप हो तेईसवें तीर्थंकर भक्तो को सुख देवा
पाचो पाप मिटा कर हमरे, शरण देवो जिन देवा
बीच भॅवर मे नाव हमारी पार करो जिन देवा
दूजा और न कोऊ दीखे जो पार लगावे खेवा
नव युवक मडल बना रहे जो करे आप की सेवा

भजन न० १११

कि मेला होय रहा पद्म पुरी दरम्यान ॥ टेक
आ रहे श्रावक दूर दूर से, ला रहे दीपक पूर २ के।
गायन होय रहा ॥ पद्म पुरी दरम्यान ॥ १
अक्षत चन्दन पुष्प व जल से दीप धूप नैवेद्य व फल से ।
पूजन होय रहा ॥ पद्म पुरी दरम्यान ॥ २
जो मन्दिर पर ध्वजा फहरावे, मन के मन मे हर्ष बढ़ावे ।
कि घन्टा बोल रहा ॥ पद्म पुरी दरम्यान ॥ ३

मूर्ति विशाल प्रभुको लख कर, पद्म प्रभु के चरण सुमरकर
सुमत चितडोल रहा ॥ पद्म पुरी दरम्यान ॥ ४

भजन नं० ११२

तर्ज [मोरी हूंडी चुकाओ महाराज रे, नरसी भक्त] ।

मेरे भव भव के दुखों को मेटोंरे,ये मोरे महावीरा ॥ टेक
भरी सभामें द्रोपदी सुता का तुमने चीर वढ़ाया ॥ ये मोरे०
श्रीपाल को तुमने उधारा, अंजन से हैं तारे रे ॥ ये मोरे०
भूले थे जो मार्ग कभी से, उनको राह लगाया रे ॥ ये मोरे०
जो कोई तेरा नाम सुमरले,भव सागर तर जायरे ॥ ये मोरे०
गम्भीरको कोईशरणनहींहै,तेरे चरणों काआधाररे॥ ये मोरे०

भजन नं० ११३

जपूँ महावीरा, जपूँ महावीरा,
जपूँ महावीरा जपूँ महावीरा ॥

भजननं० ११४

मेरा पद्मा ने दुखड़ा मिटायारे ऐ भैया जी ।
मेरा मुरझा कमल दिल खिलाया रे ऐ भैया जी ॥ टेक
घर से यहांपर आया जिस बेला,देख२ पद्म पुरी का मेला
मेरा दुखिया जिया हर्षायारे ऐ भैया जी ॥ मेरा०
भैयाजी बातें येसच्ची हैं मोरी,गुपचुप मोरी यहां होगईचोरी
मेरा पद्मा ने मनुआ चुरायारे ऐ भैया जी ॥ मेरा०
हर दम दया दयालू रखना मुझ पर तुम दरतार ।

आशा सिद्ध लगी है मुझ से कर दो बेडा पार ॥
मैंने अब तक बडा दुख उठायारे ये भैया जी ॥ मेरा०

भजन नं० ११५

नैया डूबी जाती है, भव सागर का नही पार ।
आवो (भगवन) पार लगाओ तुम्ही हो खेवन हार ॥
सुख दुख कर्मों के संग खेले बाधे फंदा डार ।
हम हत भागी सब खो बैठे, आतम बुद्धि विसार ॥
इत उत हम गोते खावत है, ओडी मगकी धार ।
अब तो भगवन वेग बचाओ, अनुपम सुख करतार ॥

आरती नं० ११६

ॐ जय पद्म प्रभु देवा, ॐ जय पद्म प्रभु देवा ।
तुम बिन कौन जगत मे मेरा पार करे खेवा ॥ ॐ
तुम हो अगम अगोचर स्वामी, मै हूं अज्ञानी प्रभु मैं हूं०
अरम्पार तुम्हारी महिमा, काहू न जानी ॥ ओम
संकट तारो कष्ट निवारो, आया मे शरणा ॥ प्रभु आया
कुमति हठा सुमतिवर दीजे,कर जोर पडूं चरणा ॥ ओम
पाप पड़े को पारलगाया, सुख मम्पत्ति दीना ॥ प्रभु सुख
श्रीपालका कष्ट हटा कर, सुवरन तन कीना ॥ ओम
मात पिता तुम सबके स्वामी रक्षक हो मेरे ॥ प्रभु रक्षक
पद्म पुरी मे आकर स्वामी, द्वार खडा तेरे ॥ ओम
सीता सतीके अग्नि कुण्डको,शीतल कर दीना ॥ प्रभु शीतल

बचा सभा में लाज द्रोपदी, चीर बढ़ा दीना ॥ ओम
जो कोई शरण तुम्हारी आवे, भव सागरपारतरे ॥प्रभु भव०
छज्जन चरणों में आया है,प्रभु पद्मा पारकरो ॥ ओम

भजन नं० ११७

तर्ज (बतादो राम गये किस ओर (भरत मिलाप)

बतादो नेमि गये किस ओर ॥ टेक
उन बिन मोहे कल न परत है दुख का नाहीं छोर ॥ बता०
नव भव की मोरी प्रीति लगी है, हमको गयेहैं छोड़ ॥बतादो०
पापी पपीहा पिउ पिउ बोले, काहे मचावत शोर ॥ बतादो०
ब्याहन को जब आये प्रभुजी, बिलखत राजुल छोड़ ॥बतादो०
मैंने सुना प्रभु गिर को गये हैं, जाऊंगी उस ओर ॥बतादो०
गम्भीर तो अब ध्यान लगाये, प्रभु चरणों की ओर ॥बतादो०

वीर कीर्तन नं० ११८

जय वीर कहो, जय वीर कहो !
त्रिसला-नन्दन, अति वीर कहो !!
हर सांस यही झनकार उठे !
धरती नभ, सब गुंजार उठे !!
प्रेमी का प्राण पुकार उठे !
जय वीर कहो० !! १
यह दुनिया एक कहानी है !
दरिया का बहता पानी है !!

बस दो दिन की मिजमानी है।
जय वीर कहो० ॥ २

नर जीवन का सार यही।
सुख के पथ का आधार यही॥
बस लगातार तू तार यही।
जय वीर कहो० ॥ ३

यह सङ्कट भजन हारा है।
भक्तों का तन से प्यारा है॥
भगवत यह नाम सहारा है।
जय वीर कहो० ॥ ४

सन्ध्या गायन नं० ११६

वीर! हमें बलवीर बनाओ, शरण पड़े हैं भूल न जाओ!
दिन भर के अपराध हमारे, क्षमा करो भवि वृन्द दुलारे,
हर दो दोष,लेश दुख सारे, नस-नसमें नव जीवन लाओ॥
जगने के हित हम जो जाएँ, किन्तु न अपना ज्ञान भुलायें,
जगमें आतम ज्योति चमकायें, ऐसा बल हममें विकसाओ॥
कैसा ही अँधियारा छाए? अंतर ज्योति न बुझने पावे,
अभय रूप हो पथ दिखलावे, दृढ़ता का उपदेश सुनाओ॥
एक मात्र अवलम्ब तुम्हारा, करो अबाहित-जीवन-धारा,
दे भविकों को सब सहारा, अपना सा 'भगवत' बनाओ॥

महावीर कीर्तन नं० १२०

त्रिशला के नन्दन ! काटो भव बन्धन !!
दुःख के सताये ! शरण में आये !!
प्रभु चित लाओ ! कष्ट मिटाओ !!
जन मन रञ्जन ! काटो भव बन्धन !!
तुम अविकारी ! भव-ताप हारी !!
महिमा तुम्हारी ! जन हितकारी !!
तारे खल-अञ्जन ! काटो भव-बन्धन !!
शिवपुर वासी ! ऋद्धि सिद्धि-नासी !!
नस दो निराशा ! पूरो अभिलाषा !!
भव भय भञ्जन ! त्रिसला के अन्दन !!
मोक्षमार्ग बतलाने वाले ! परम ज्ञान सिखलानेवाले !!
दया अवतारी सुध लो हमारी !!
ज्ञान भगवत दो, दुख दल हत हो !!
करें अभिनन्दन ! काटो भव बन्धन !!

झण्डा गायन नं० १२१

स्वास्तिक-मय केसरिया प्यारा, झण्डा ऊंचारहे हमारा ?
इस झण्डे के नीचे आओ, आत्म शक्ति जग को दिखलाओ
सुख-स्वतन्त्रता का पाजाओ ?
चमकाओ निज ज्ञान-सितारा, झण्डा ऊंचा रहे हमारा ?१
पूर्ण अहिंसा इसका प्रण है, शांति क्रांति का आन्दोलन है
प्रेम-क्षमा का मधुर मिलन है ?

मिटता द्वेष मोह अंधियारा, झण्डा ऊंचा
स्वास्तिक चिन्ह विजय का दाता, अखिल
गुण गाता जिसे विदेशी शीश झुकाते
बतलाता आदर्श हमारा, झण्डा ऊंचा रहे हमारा। ॥ ३
विश्व-विभूति-वीर जिनवर ने, एक उमंग विश्व में भरने।
फहराया जग-जनहित करने !
मिट जावे भव संकट सारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥ ४
शक्ति मार्ग दरशाने वाला, ज्ञान–सुधा बरसाने वाला।
वीरों को हरसाने वाला !
मंगल मय सुर सर की धारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥ ५
सूरि समन्त भद्र से ज्ञायक, श्री अकंलक देव से नायक।
इसके रहे सदा अभिभावक !
ज्योति जगाई इसके द्वारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥ ६
इसकी सेवा मे तन मन धन, कर दो हर्ष भाव से अर्पण।
होगा पूर्ण तभी यह द्रढ़ प्रण !
यह उद्देश्य सभी से न्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥ ७
लेकर इसे अभय द्रढ कर मे, आओ बढ कर अमर समर मे।
दया भाव भरदो घर घर मे !
गूँज उठे इसका जयकारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥ ८
उठो ? वीर सन्तानो ? आओ, 'भगवत' का संदेश सुनाओ।

हो निर्भय झंडा फहराओ !

त्रिश हो प्रणाम शतवार, झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥ ६
दुः
ः

त्रिशला नन्दन कीर्तन १२२

जपा कर जपा कर, जपा कर जपा कर !
महावीर का नाम प्रति दिन जपा कर !!
यही मंत्र दुनियां के मंत्रों से आला !
इसी ने अनेकों के संकट को टाला !!
हां जिस दिल में फैला है इसका उजाला !
वही सुख शिविर पर विराजेगा जाकर ॥ जपा
सुदर्शन का संकट मिटाया था इसने !
जनक नन्दनी को बचाया था इसने !!
कि अंजन सा पापी जगाया था इसने !
ये दुख तम के हरने को चमका प्रभाकर ॥ जपा
न गफलत में रह, क्यों कि इन्सान तू है !
यहां चार दिन का ही मिहमान तू है !!
क्यों 'भगवत' के कदमों में कुर्बान तू है !
जो करना है करले ये नर जन्म पाकर ॥ जपा

स्वतन्त्रता का स्वप्ना १२३

ये दिल त्रिशला के नन्दन में अगर आबाद हो जाये !
तो दुनियां की गुलामी से बसर आजाद हो जाये !!
रिहा हो जाय झगडों से बहायें फिर नहीं आंसू—

सबक आजाद रहने का इसे भी याद हो जाये !!
लगे उस आग मे भी आग, जो इसको बलाती है–
इसे बर्बाद करता है, वो खुद बर्बाद हो जाये !!
रहम दिलका बने मालिक, दुआएँ ले गरीबों की—
गरीबी दूर हो दिल की जो कुछ इमदाद हो जावे !!
नहीं 'भगवत' मे कोई फर्क दिखलाएगा भगवत से–
अगर ये बे-असर से बा-असर, फरियाद हो जाये !!

वन्दना नं० १२४

तेरी महिमा को भगवान, नहीं गा सकता है इन्सान।
तूने रागद्वेष को टाला जिससे मिला तुझे उजियाला॥
तब तू बना पवित्र महान, नहीं गा सकता है इन्सान।
झण्डा अखिल लोक का लेकर दुर्लभ ज्ञान सुधारस देकर
कितना किया विश्व कल्याण, नहीं गासकता है इन्सान॥
तू है भव-दुखियों का त्राता, आत्मिक सुखमय, जीवन दाता
तेरा जगमें व्यापक ज्ञान, नहीं गा सकता है इन्सान॥
करदे उर का दूर अन्धेरा, तुझको नमस्कार है मेरा।
भगवत कर यह कृपा प्रदान, नहीं गासकता है इन्सान॥

भजन नं० १२५

वीर भक्तों से।

हम वीर की सन्तान हैं, दुनिया को बतादो।
कहने का जमाना गया, कुछ करके दिखादो॥
सोतों को जगादो ॥ १ ॥

तुम कौम की आशा हो, दशा अपनी सुधारो।
फिर विश्व भलाई के भले काम विचारो॥
तन, धन का इसी राह में; जीवन को लगादो।
हम वीर की सन्तान हैं॥ २॥

मजहब के दिल में, मुहब्बत की हो थिरता।
निकलंक की तरह से तुम में भी हो निडरता॥
तलवारों तले वा खुशी, गर्दन को झुकादो।
हम वीर की सन्तान हैं॥ ३॥

मिट जांय जुल्म और जमाने से तवाही।
फैलावें शान्ति क्रान्ति अहिंसा के सिपाही॥
घर घर में प्रेम भाव की धाराएं वहादो।
हम वीर की सन्तान हैं॥४॥

जो बढ़ चुका कदम उसे पीछे न हटाओ।
तकलीफें परेशानियां, हँस हँस के उठाओ॥
पर दर्दमन्द लोगों के दुख दर्द मिटाओ।
हम वीर की सन्तान हैं॥५॥

मजबूरियों के सामने हिम्मत से काम लो।
कमजोरी दिलको छोड़ के, भगवत का नाम लो॥
भूले सबक को फिर से, हमें याद करादो।
हम वीर की सन्तान हैं॥६॥



पंचम अध्याय

भजन नं० १२६

जग जाल से नाथ निकालो हमें ।
हम आपके दास संभालो हमें ॥
दुनिया मे दयालू कहाते हो तुम ।
सुख राह पै विश्व को लाते हो तुम ॥
अखिलेश हो तुम मत टालो हमें ॥ हम० ॥
हमे ज्ञान वा ध्यान का होश नहीं ।
गफलत का जरा अफसोस नहीं ॥
हम डूब रहे है बचालो हमे ॥ हमें० ॥
तुम बन्धु हो मित्र, सखा हो तुम्हीं ।
भगवत हो तुम्हीं, सुखदा हो तुम्हीं ॥
हम दुष्ट है किन्तु निभालो हमें ॥ हम० ॥

भजन नं० १२७

जय बोलो जय बोलो श्री वीर प्रभु की जय बोलो ॥ टेक
जब दुनिया मे जुल्म बढ़ा था, हिंसा का यहा जोर बडा था
आप लिया अवतार प्रभु की जय बोलो ॥१॥

तुम कौम की आशा हो, दशा अपनी सुधारो।
फिर विश्व भलाई के भले काम विचारो॥
तन, धन का इसी राह में; जीवन को लगादो।
हम वीर की सन्तान हैं॥ २॥

मजहब के दिल में, मुहब्बत की हो थिरता।
निकलंक की तरह से तुम में भी हो निडरता॥
तलवारों तले वा खुशी, गर्दन को झुकादो।
हम वीर की सन्तान हैं॥ ३॥

मिट जांय जुल्म और जमाने से तबाही।
फैलावें शान्ति क्रान्ति अहिंसा के सिपाही॥
घर घर में प्रेम भाव की धाराऐं बहादो।
हम वीर की सन्तान हैं॥४॥

जो बढ़ चुका कदम उसे पीछे न हटाओ।
तकलीफें परेशानियां, हँस हँस के उठाओ॥
पर दर्दमन्द लोगों के दुख दर्द मिटाओ।
हम वीर की सन्तान हैं॥५॥

मजबूरियों के सामने हिम्मत से काम लो।
कमजोरी दिलको छोड़ के, भगवत का नाम लो॥
भूले सबक को फिर से, हमें याद करादो।
हम वीर की सन्तान हैं॥६॥



पंचम अध्याय

भजन न० १२६

जग जाल से नाथ निकालो हमें ।
हम आपके दास संभालो हमें ॥
दुनिया मे दयालू कहाते हो तुम ।
सुख राह पै विश्व को लाते हो तुम ॥
अखिलेश हो तुम मत टालो हमें ॥ हम० ॥
हमे ज्ञान का ध्यान का होश नहीं ।
गफलत का जरा अफसोस नहीं ॥
हम डूब रहे हैं बचालो हमे ॥ हमें० ॥
तुम बन्धु हो मित्र, सखा हो तुम्हीं ।
भगवत हो तुम्हीं, सुखदा हो तुम्हीं ॥
हम दुष्ट हैं किन्तु निभालो हमे ॥ हम० ॥

भजन न० १२७

जय बोलो जय बोलो श्री वीर प्रभु की जय बोलो ॥ टेक
जब दुनिया में जुल्म बढ़ा था, हिंसा का यहा जोर बढ़ा था
आप लिया अवतार प्रभु की जय बोलो ॥१॥

पुन्य उदय भारत का आया, कुण्डलपुर में आनन्द छाया।
हो रही जय जयकार प्रभु की जय बोलो ॥२॥
राय सिद्धारथ राज दुलारे, त्रिशला की आँखों के तारे।
तीन लोक मनहार प्रभु की जय बोलो ॥३॥
भर यौवन में दीक्षा धारी, राजपाट को ठोकर मारी।
करी तपस्या सार प्रभु की जय बोलो ॥४॥
तप कर केवलज्ञान उपाया, जगका सब अन्धेर मिटाया।
कीना धर्म प्रचार प्रभु की जय बोलो ॥५॥
पशु हिंसा को दूर हटाया, सब का शिव मारग दर्शाया।
किया जगत उद्धार प्रभु की जय बोलो ॥६॥

भजन नं० १२८

वीरा वीरा मैं पुकारूं तेरे दर के सामने।
मन तो मेरा हर लिया महावीर जी भगवान ने।
(त्रिसलावती के लाल ने)
मोहनी छवि को दिखादो अय मेरे भगवन मुझे।
तेरी चर्चा हम करेंगे हर बसर के सामने ॥ वीरा वीरा०
डूबते श्रीपाल को तुमने बचाया है प्रभो।
द्रौपदी की लाज राखी, कौरव दलके सामने ॥ वीरा वीरा०
हार का बन सर्प जब खा लिया उस सेठ को।
सोमा ने सुमरण किया महावीरजी के नाम को ॥वीरावीरा०
चित्त हम सब का भटकता वीर के दीदार को।
कर जोड़कर देखा करूं मैं तेरे दर के सामने। वीरावीरा०

भजन नं० १२६

[तर्ज—दिल साफ तेरा है कि नहीं पूछले जी से]

भगवान महावीर जो सत्पथ न दिखाते,
तो हम सभी पग पग पर यहा ठोकरें खाते, महा कष्ट उठाते
छाया हुआ था विश्व में अज्ञान अन्धेरा,
चारो तरफ से था हमें विपदाओं ने घेरा।
जो वीर न आकर के हमें धैर्य बँधाते,
तो हम सभी पगपग पर यहा ठोकरें खाते,महाकष्ट उठाते। भ०
लाखों पशु यज्ञ में जला करते विचारे,
उनके गलों पर हाय चला करते थे आरे।
इस राक्षसी प्रथा को न जो वीर हटाते, तो हम सभी॥भग०
भगवान महावीर ने पाखण्ड हटाया।
दुनिया को बिना भेद के सद्ज्ञान सिखाया।
सत धर्म का डंका न जो भारतमें बजाते, तो हम सभी ॥भग०
वीर प्रभु ने सुख शान्ति का सन्देश सुनाया।
भव कूप में गिरते हुओं को आके बचाया।
सब जगको अहिंसा का न जो पाठ पढ़ाते, तो हम० ॥ भग०
वह शान्ति के थे पुंज अहिंसा के प्रचारक।
वीरों में वे वीर थे वह सच्चे प्रचारक ॥
हम जगमे कुमद ऐसे जो नेता को न पाते, तो हम ॥ भग०

भजन नं० १३०

[तर्ज—नदी किनारे बैठ के आओ]

आओ मित्रो सब मिल जुल के पद्म के गुण गावें।
ज्ञान भानु का सुमिरन करके, हृदय कमल विकसावें ॥टेक
दीन दयाल दयासिन्धु के, पद सेवक कहलावें।
जग उद्धारक जगनायक, श्री पद्म को शीश नवावें ॥
रख विश्वास सुदर्शन सा दृढ़, पद्म से ध्यान लगावें।
प्रभो खिवैया बन कर जीवन, नैया पार लगावें ॥
क्षमा, दया, तप धैर्य धीरता, पद्म से ध्यान लगावें।
बने मित्र संसार हमारा, हम सब के बनजावें ॥
दुख मोचन का जाप किये, अजर अमर पद पावें।
शिव विद्यार्थी पद्म कृपा से, विद्या गुण नित पावें।।

भजन नं० १३१

[तर्ज—सावन के नजारे हैं]

पद्म पधारे हैं जय हो जय हो।
कौशाम्बी की गलियों में स्वर्गों के नजारे हैं ॥ टेक ॥
उस देश चलो सजनी जहां पद्म जन्म लीनो।
सुसोमा के दुलारे हैं। पद्म पधारे हैं ॥ १ ॥
वह देश अति प्यारा, कौशाम्बी सबसे न्यारा।
खुशियों के नजारे हैं। पद्म पधारे हैं ॥ २ ॥
"रत्न" पर दया कीजे चरणों में जगह दीजे।
हम तेरे सहारे हैं । पद्म पधारे हैं ॥ ४ ॥

भजन नं० १३२

पद्म तेरी धुनि में आनन्द आरहा है, आनन्द आरहा है।
तेरी तो धुन हम सुन कर आये है तेरे दर पर।
आदरस हमको दीजे पद्म मन मन्दिर मे ॥ टेर ॥
लाखों की विगडी बनाई अब मेरी भी बना देना।
अरदास कर रहा हूं पद्म की गलियन मे ॥आनन्द०॥
नैया पडी भॅवर मे तुम पार तो लगाना।
पुकार मे रहाहूं पद्म को मन मन्दिर में ॥ आनन्द० ॥
आकर सताता हमको तूफान ये कर्मों का।
पद्मा ये कर्म जाले हटाना ही पडेगा ॥
उदय की अर्जी पूरी हे नाथ तुम्ही करना।
सेवक की अर्जी पूरी हे नाथ तुम्ही करना ॥
मस्तक झुका रहा हूं पद्म के चरणों मे ॥ आनन्द० ॥

भजन नं० १३३

कंचन के पालने में स्वामी पद्मा झूलें ॥ टेक ॥
सोने की डोर पडी साकल मे गुथवा डाली।
माता सुसीमा जी देख के हृदय मे फूली ॥
कंचन के पालने मे० ॥ १
हम हंस खिलाय रही ताली बजाय रही।
धरणी नृप मगन हो राज पाट भूले ॥ २
कौशाम्बी वाले सब मिलकर जय जयकार बोले।
चरणों मे खडा तेरा दास हो चरणों मे लीजे ॥ ३

भजन नं० १३४

तर्ज [तागे वाले रे तागे का घोड़ा मोड़ दे]

स्वामी मेरे रे कर्मों के बन्धन तोड़ दे ॥ टेक
ध्यान की कमानी तीर ज्ञान का बनाय कर ।
मोह वैरी को निशाना करके फोड़ दे ॥ १
हिंसा झूठ चोरी व्यभिचार परिग्रह पांच ।
दुःख दाई रे पापों का मुंह मोड़ दे ॥ २
सुमति विवेक लज्जा दया क्षमा शील व्रत ।
जप तप रे संयम से नाता जोड़ दे ॥ ३
मक्खन अपार भव सिन्धु से उतार पार ।
सुखमई रे मुक्ती में जाके छोड़ दे ॥ ४

भजन नं० १३५

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, मुझे नहीं चैन पड़ती है ।
छबि वैराग्य तेरी सामने, आंखों के फिरती है ॥ टेक
निरा भूषण विगत दूषण, पद्म आसन मधुर भाषण ।
नजर नेनों की नाशा की, अनी पर से गुजरती है ॥ १
मिले गर स्वर्ग की सम्पति, अचम्भा कौन है इसमें ।
तुम्हें जो नैन भर देखे, गति दुर्गत का टरती है ॥ २
हजारों मूरतें हमने, बहुत सी गौर कर देखीं ।
शान्ति मूरत तुम्हारी सी, नहीं नजरों में चढ़ती है ॥ ३
नहीं कर्मों का डर हमको, है जब लग ध्यान चरणों में ।

तेरे दर्शन से सुनते हैं करम रेखा बदलती है ॥ ४
जगत सरताज हे जिनराज, न्यामत को दरश दीजे।
तुम्हारा क्या विगडता है, मेरी .विगडी सुधारती है ॥ ५

जैनियों की वीरता

(तर्ज—मन साफ है तेरा) न० १३६

जैनी नही डरते थे जमाने में किसी से,
क्योंकि थे अहिंसाके पुजारी ये सदासे सब कहदो यह दिलसे०
जब जैन का निग्रंथ साधू बन मे विचरता,
शुभ ध्यान मे ही लीन चिदानन्द मे रमता।
जगल का क्रूर शेरभी आ चरणों में गिरता,
हँस हँस के वो मरते थे नहीं डरते किसी से ॥ क्योंकि थे०
सम्राट चन्द्रगुप्त ने वो तेग चलाई,
राजा सहस्ती पाल अशोक वीर थे भाई।
रण भूमि मे ऐसे डटे नहीं पीठ दिखाई,
थर्राती थी दुनियां सभी जैनो के तेज से ॥ क्योंकि थे०
सुकुमाल से ध्यानी थे समन्तभद्र से ज्ञानी,
शास्त्रार्थ मे रखते थे नहीं अपना सा सानी।
सच्चा यकीं क्या चीज है बतलानेको ठानी;
छिडो फटी आनन्द हुआ चन्द्र दरश से ॥ क्योंकि थे०

भजन नं० १३७

ईश्वर कैसा होना चाहिये ।

न रागी हो न द्वेषी हो, सदानन्द वीत रागी हो ।
वह सब विषयोंका त्यागी होजो ईश्वर होतो ऐसाहो ॥टेक
न खुद घटघट में जाता हो,मगर घटघटका ज्ञाताहो ।
वह सत उपदेश दाता हो, जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ १
न करता हो न हरता हो, नहीं औतार धरता हो ।
मारता हो न मरता हो, जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ २
ज्ञान के नूर से पुर नूर, हो जिसका नहीं सानी ।
सरासर नूर नूरानी, जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ३
वह जाते पाक हो दुनियां के झगड़ों से मुबर्रा हो ।
आली मुलगैब हो वे ऐब, जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥४॥
दयामय हो शान्त रस हो, परम वैराग्य मुद्राहो ।
न जाहिर हो न काहिरहो, जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥५॥
निरंजन निर्विकारी हो, निजानन्द रस विहारी हो ।
सदा कल्याणकारी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ६ ॥
न जग जंजाल रचता हो, करम फलका न दाता हो ।
वह सब बातों का ज्ञाताहो,जो ईश्वर होतो ऐसा हो॥ ७ ॥
वह सच्चदानन्द रूपी हो, ज्ञानमय शिव स्वरूपी हो ।
आप कल्याण रूपी हो, जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ८ ॥

जिस ईश्वर के ध्यान से, बने ईश्वर कहे न्यामत।
वही ईश्वर हमारा है, जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ६ ॥

भजन न० १३८

कायाका पिंजरा डोलेरे, एक सास का पंछी बोलेरे ॥टेक॥
तन नगरी मन है मन्दिर, परमात्मा है जिसके अन्दर।
दो नैन है पाक समुन्दर, तू पापी पाप को धोले रे ॥ १ ॥
मा बाप सुता पत्नी का, झगड़ा है जीते जी का।
तू भज ले नाम प्रभु का, नाहक क्यों भ्रमता डोले रे ॥ २
आने की शहादत जाना, जाने से क्या घबडाना।
दुनिया है मुसाफिर खाना, तू भेद भरम खोले रे ॥ ३

भजन न० १३६

तर्ज (सितमगर हमीं थे सताने के काबिल)

मुझे है प्रभु सहारा तुम्हारा।
कि दरकार है, इक इशारा तुम्हारा ॥ टेक
अहिंसा परम धर्म संसार में हो,
यह उपदेश है प्यारा प्यारा तुम्हारा ॥ मुझे०
चमत्कार फैला है जोजैनमत का,
चमकता है गोया सितारा तुम्हारा ॥ मुझे०
यह मन्दिरके दर्शनसे मतलब है मेरा
मुझे चाहिये इक इशारा तुम्हारा ॥ मुझे०
जो चलते है सत पै वो है स्याद वादी
कि है फलसफा इकन्यारा तुम्हारा ॥ मुझे०

जिसे धर्म शंका हो बेखौफ आयें,
खुला है सभीको द्वारा तुम्हारा ॥ मुझे० ॥५॥
मैं भूला हुआ राह तुम राहवर हो,
यह सम्बन्ध है बस हमारा तुम्हारा ॥ मुझे० ॥६॥
जो पूछे कोई नाज है दास किसका,
जो कहदूं तुम्हारा तुम्हारा ॥ मुझे० ॥ ७ ॥

भजन नं० १४०

किस्मत जुदा जुदा है।

दो फूल साथ फूले, किस्मत जुदा जुदा है।
नौशे के एक सिर पर, एक कब्र पर चढ़ा है ॥ टेक ॥
दो भाइयों को देखो, आपस में हैं हकीकी।
एक शाहे नामवर है, दर दर का एक गदा है ॥१॥
निकले शदफ से मोती, दो एक साथ ऐसे।
एक पिसरहा खरल में, एक ताज में टका है ॥ २ ॥
एक ही शजर की डाली, दो एक साथ काटीं।
एक आग में जलाई, एक का बना असा है ॥ ३ ॥
दो मुर्ग असीर आये, देखो नसीब उनका।
सदके से एक छूटा, एक जिबह होरहा है ॥ ४ ॥

भजन नंबर १४१

[तर्ज—आंखो में समा जाओ परदो में रहा करना]

ऐसी दशा हो भगवन; जब प्राण तन से निकले।
हो सिद्ध सिद्ध लबपै जब प्राण तन से निकले ॥टेक॥

काया मे शान्ति होवे मन में भी क्रान्ति होवे।
हो आदि तीर्थंकर जब प्राण तन से निकले ॥ऐसी०॥१
करताहूं निर्जरा में कर्मों को ला उदय में।
आश्रव नहो होसंवर जब प्राण तन से निकले ॥ऐसी०॥२
गति बन्ध हो चले जो बस कर्म काटने को।
हो सर तुम्हारे दरपै जब प्राण तन से निकले ॥ऐसी०॥३
मेरा ज्ञान मे ही मन हो, मेरा ध्यान में लगन हो।
हो मैल कुछ न दिलपै,जब प्राण तन से निकले ॥ऐसी०॥४
जाऊं न मोक्ष मन्दिर तब तक रहूं दिगम्बर।
हर बार जैन मतर जब प्राण तन से निकले ॥ऐसी०॥५

भजन नम्बर १८२

(तर्ज—पुजारी मोरे मन्दर मे आवो)

प्रभुजी मन मन्दिर मे आवो प्रभूजी।
नाथ पुजारी हूं में तेरा, सेवक का अपनाओ ॥प्रभूजी॥१
शुद्ध हृदय से करूं बीनती, आतमज्ञान सिखाओ।
पर परणतितज निज परणतिका सच्चा भानकराओ॥प्रभू॥२
मैं तो भूल गया था तुमको, तुम ना मुझे भुलाओ।
जीवन धन्य बनाऊं अपना, ऐसी राह सुझाओ ॥ ३
कर्म जटिल है संग न छोड़ें, इनसे मुझे बचाओ।
करके दया वृद्धि सेवक पर आवागमन मिटाओ ॥ ४

भजन नं० १४३

तुम्हींने सबको ज्ञान सिखाया, भूलों हुओंकोराह लगाया।
एक नया उत्साह जगाया, प्रेम बढ़ाया द्वेष मिटाया।
तुम्हीं हो सुख दातार, स्वामी तुम्हीं हो सुख दातार॥ १
बेड़ा बीच भंवर जब आया, हाथ बढ़ाया पार लगाया।
तुम्हीं हो खेवन हार स्वामी, तुम्हीं हो खेवन हार॥ २
तुम्हीं को हृदय बीच बिठाऊं वृद्धि पाऊं हर्ष मनाऊं।
तुम्हीं हो जगदाधार स्वामी, तुम्हीं हो जगदा धार॥ ३

भजन नं० १४४

तर्ज (पिया मिलन को जाना हा हा हा हां)

हां २ वीर शरण में आया, हां २ वीर शरण में आया।
जग के नाथ, पकड़ों हाथ, कर्मों ने है सताया आ॥
क्या मैं प्रयत्न करूं, कैसे मैं भवसे तिरूं नाव नहीं ठांवनहीं
माया ने भरमाया॥ १
विषयन के जाल ने कीना बे हाल है, धीरे कभी, जल्दी कभी
भव भव में है डुलाया॥ २
पूरी करो मेरी आश कर्मों काकरो विनाश, कैसेनहीं वृद्धिप्रकाश
जब तुम को मन में बिठाया॥ ३

भजन नं० १४५

जब हंस तेरे तन का कहीं उड़ के जायगा;
ये दिल बता दो किससे तू नाता रखायगा।

यह भाई बन्धु जो तुझे करते है आज प्यार;
जब आन बने कोई नहीं काम आयगा।
यह याद रख कि सब है तेरे जीते जी के यार;
आखिर तू अकेला ही मरण दुख उठायगा।
सब मिल के जला देगें तुझे जाके आग मे;
एक छिन की छिन मे तेरा पता भी ना पायगा।
कर घात आठ कर्मों का निज शत्रु जान कर;
वे नाश किये इनसे तू मुक्ती न पायगा।
अवसर यही है जो तुझे करना है आज कर;
फिर क्या करेगा काल जो मुंह बाके आयेगा।
अय न्यामत उठ चेत क्यो मिथ्यात में पडा;
जिनधर्म तेरे हाथ यह मुश्किल से आयगा।

कीर्तन न० १८६

महावीर स्वामीहो अंतरयामी हो, त्रिशलानंदन काटोभवफंदन
वालेही पनमें तप कीनो वनमे, दर्शन दिखाना भूलन जाना
पार लगाना कृपानिधाना, महिमा तुम्हारी है जगमे न्यारी ॥
सुधलो हमारी हो व्रतके धारी।
वनखण्ड में तप करने वाले, केवलज्ञान के पाने वाले।
हो उपदेश सुनाने वाले, हिंसा पाप मिटाने वाले ॥
हो तुम कष्ट मिटाने वाले, पशुगन बन्ध छुड़ाने वाले।
स्वामी प्रेम बढ़ाने वाले, हो तुम नियम सिखाने वाले ॥

पूरण तपके करने वाले, भक्तों के दुख हरने वाले।
पावापुर में आने वाले, स्वामी मोक्ष के जाने वाले ॥३

भजन नंबर १४७

तर्ज—घर घर में दिवाली है मेरे घर में अंधेरा।

ए कर्म बता हमने बिगाड़ा है क्या तेरा।
हा घर से निकाला किया वन बीच बसेरा॥
पहिले तो शादी होते ही पाया दुहाग था।
बारह बरस में मिला इक दिन सुहाग था॥
हुई गर्भवती फिरसे मुसीबत ने है घेरा॥ १
बालम तो युद्ध के लिये तबही चले गये।
आने की निशानी को अंगूठी ये दे गये॥
अफ़सोस किया सास ने विश्वास न मेरा ॥ २
घर से ससुर व सासने मुझको निकाल दी।
पूछी न बात तात ने कुछ मेरे हाल की।
माता की चली न कुछ किया रुदन घनेरा॥ ३
पहिले जन्म में अंजना ने पाप थे किये।
आयेगा कौन फल भला शिवराम भोगने।
समता से सहो होय जो संकट का निवेरा॥ ४

परमेष्ठी महामंत्र नं० १४८

जैन सम्प्रदाय में परमेष्ठी महामंत्र के समान एक भी मंत्र नहीं है। उभयलोक में सिद्धि देने वाला यह महामंत्र

है इसकीमहिमा अगम और अपार है। ॐकार में पाच परमेष्ठी है अर्थात इसी में अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय और साधु हैं। इस मंत्र का जप-ध्यान करने से नमस्कार मंत्र का जप करने जितना ही फल होता है तथा इस गीत से मन सदा सर्वदा आनन्द से नृत्य करता रहता है।

[१]

ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम्
ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम्
ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम्
ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम्

[२]

जय श्री अर्हन् ,सिद्ध अधिकार; जय गणी वाचक;जयअनगार

[३]

देव हमारा श्री अरिहंत, गुरु हमारा त्यागी सन्त।
अधम उद्धारण श्री अरिहन्त,
पतित पावन भज भगवन्त।
सब से बढ़ कर है नवकार, करता है भवसागर पार।
चौदह पूरब का यह सार।
बारम्बार जपो नव कार॥

भजन नं० १५२

गाते सब तेरा यश गान, पधारो पद्‌म प्रभू भगवान।
जो तेरी शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया॥
तुम हो दयानिधे भगवान, पधारो पद्म प्रभू भगवान।
भक्त जनों के कष्ट निवारे, आप तरे हमको भी तारे॥
कीजे हम को आप समान, पधारो पद्म प्रभू भगवान।
आये हैं अब शरण तिहारी, पूजा हो स्वीकार हमारी॥
तुम हो करुणा दया निधान, पधारो पद्‌म प्रभू भगवान।
रोम रोम में तेज तुम्हारा, भूमण्डल तुमसे उजियारा॥
रवि 'शशि' तुमसे ज्योतिर्मान, पधारो पद्‌म प्रभू भगवान।

भजन नं० १५३

दुखियों का कष्ट निवारण हो, श्री पद्म प्रभो ? श्री पद्मप्रभो!
तुमहो तो अधम उधारणहो, श्री पद्म प्रभो ? श्री पद्म प्रभो !!
दुखियों क्लेश विनायक हो, निर्बल के आप सहायक हो।
आनन्द घटाओं के घन हो, श्री पद्म प्रभो ? श्री पद्म प्रभो॥१
द्रोपदि का संकट दूर किया, सीता को भी मशहूर किया !
जीवों के तुम जीवन धनहो, श्री पद्म प्रभो ? श्रीपद्म प्रभो!!
पशु पत्ती अ‌ुत तुम-नाम तरे, 'भगवत' क्यों आज हमें बिसरे!
हम सेवक हैं, तुम भगवनहो; श्री पद्म प्रभो ? श्रीपद्मप्रभो !!
दो शक्ति हमें शुभ भाव धरें, दुनियां में ज्ञान प्रचार करें !
हर बार तुम्हारा सुमरण हो, श्री पद्म प्रभो ? श्रीपद्म प्रभो!!





अध्याय छटवां

भजन नं० १५४

जय जय प्रभो जय पद्म प्रभो।
जय जय सुसीमा नन्द प्रभो॥
रिपु कर्म हरे दुख द्वन्द हरे।
जय जय भगवन भव फन्द हरे ॥ १ ॥
जय विघ्न विकार निकन्द प्रभो।
जय ज्ञान सुदीप्त दिनन्द प्रभो॥
शिवपति दायक आनन्द प्रभो॥ २ ॥
सुख सौरभ गुण मकरन्द भरे।
जय पद्म प्रभु अघ-वृन्द हरे॥
भज भगवत अव मति मन्द प्रभो।
जय जय जिन परमानन्द प्रभो ।

पद्म प्रभु कीर्तन नं० १५५

हमें नाथ जग में तुम्हारा सहारा,
हरोगे हमारा तुम्ही कष्ट सारा।
तुम्ही पद्म भगवन हो संकट निवारण,
श्रीपाल सागर से तुमने निकारा ॥ १ ॥
धरणीधर पिता की सुयश कीर्ति को,
जनम तुमने सुसीमावती के धारा।
दिखाकर कलाऐं अजब पद्मपुर में,
किया तुम छबीने छवीवान वारो ॥ २ ॥
बनाने को तुमने जगत वीतरागी,
किया बालेपन में जगत से किनारा।
ये तन मन धन है तुम पर निछावर,
नहीं और दूजा कोई हमको प्यारा ॥३॥

भजन नं० १५६

(तर्ज—घटा घन घोर घोर)

घटा घन घोर २ मोर मचावे शोर मोरे सजन आजा।
आजा मोरे सजन आजा ॥
एक झलक दे नेमी प्रीतम इत आये उत धाये।
काली २ छाई बदली बिजली कड़क डराये ॥
बड़ा दुख देवे जिया, माने न हाय पिया।

इसे समझाजा, आजा मोरे सजन आजा ॥ घटा घन०
सावन पवन चले पुरवैया लहराये हरयाली।
जिसके तुम मतवाले मैं भी, उसकी वन मतवाली ॥
आई अब मैं भी गिर पर टूटूं हूँ मे इधर उधर।
मुख दिखला जा आजा मोरे सजन आजा ॥घटा घन०

भजन नं० १५७

(तर्ज—मैं वन की चिड़िया)

मै कदम कदम पर पद्म प्रभु की जय बोलूं रे।
अरु पग पग पर अपने साहस को तोलूं रे॥
मैं शत्रुन से भिड, रणधीर वीर कहलाऊं।
इस कायरता के कण मैं रण रस घोलूं रे॥ १ ॥
हो विषधर की फुङ्कारें, चाहें दिग्गज चिक्कारें।
मैं सिंहों के झुण्डो मे संग संग डोलूं रे॥ २ ॥
गहरे सागर पर्वत हों, दल दल हो दावानल हो।
मै महाकाल के मुख के दन्त टटोलूं रे॥ ३ ॥
बढ़जा बढ़जा आगे बढ़जा, पुरुषार्थ की चोटी चढ़जा।
मैं कर्म भूमि की शूल सेज पर सोलूं रे ॥४॥
श्री पद्म प्रभु से विनय यही, दीजे मुझको शक्ति वही।
कहें जैन जौहरी अपने प्रण का होलूं रे॥ ५ ॥

भजन नं० १५८

ले०—श्रीमती सूरजदेवी सुपुत्री दानवीर ला०सरदारीमल जैन गोटेवाले देहली

[तर्ज—जब तुम्हीं चले परदेश]

जब तुम्हीं गये मुख मोड़, अकेला छोड़, महावीर प्यारा।
दुनियां में कौन हमारा ॥ १ ॥
ये कर्म हमें सताते हैं, जग में दुख हम पाते हैं।
फिर तुम्हीं कहो कित जांय, है कौन सहारा ॥दुनिया०।२
माया ने मुझको घेरा, चहुंगति में दुख दिया घनेरा।
तब व्याकुल होकर, हमने तुम्हें पुकारा ॥ दुनिया०। ३
दासी रो रो कहती है, अरज ये तुमसे करती है।
जब तुम्हीं ने भगवन, हमसे किया किनारा ॥ दुनिया०।४

भजन नं० १५६

[तर्ज—अंखियां मिलाके]

ब्याह रचा के, हमको रुला के, चले नहीं जाना।
नेम जी चले नहीं जाना, ओ ओ चले नहीं जाना ॥१॥
पशुओं की पुकार सुनी, अरु मेरी नहीं सुनी जी।
हाथ जोड़ बिनती करूं, रोकर कहूं जी।
कंगना तुड़ाके, जामा हटा के, चले नहीं जाना ॥नेमजी०
मौड़ पटकते देखा, सेरा झकटते देखा।
रथ को लौटाते देख, हा हा करूं जी।

दुल्हन मिटा के, जोगन बनाके, चले नहीं जाना ॥नेमजी०
नौ भर संग रखा जब तुमने, दसवें में क्यों छोड़ा।
क्या कुछ खोट हुआ जी हमसे, मझधार मे जो यों छोड़ा।
नेहा लगाके, जिया दुखा के, चले नहीं जाना ॥ नेमजी०
दासी कहे सुनो जी राजुल, सोच करो नहीं अब तो।
जिधर गये निज नेमी पिया, उत ही को जाओ तुमतो।
गिरनारी पे जाके, ध्यान लगाके, तपकर कर्म जलाना ।नेम

भजन न० १६०

[तर्ज—प्रेम नगर में बनाऊंगी घर में]

वीर चरन में लगाऊंगी दिल में, छोड के सब घर बार।
वीर हो तन में, वीर हो मन में, और न हो दरकार।
वीर की रटना लगाऊंगी हरदम, तभी तो हो उद्धार ॥ १
धरम परम है धरम शरण है, धरम है जग में सार।
धरम की नैया उतारेगी हमको, भवसागर से पार ॥ २
दासी को प्रभु शरन दो अपनी, तुम्हीं हो मेरे आधार।
जो प्रभु तुम न सुनोगे मेरी, करूं मैं किससे पुकार ॥ ३

भजन न० १६१

[तर्ज—आओ री सुहागन नारी]

आओ जी महावीरा स्वामी, दिल में समाओ जी।
मोहनी मूरत प्यारी, मुझको दिखाओ जी ॥१॥ आओ०

तुमरे दरश बिन, नैना हैं प्यासे।
दरश दिखाके इनकी, प्यास बुझाओ जी ॥२॥ आओ…
मेरे हृदय में प्रभु, घोर अन्धेरा।
ज्ञान का उजाला करके, रस्ता बताओ जी ॥३॥ आओ…
तुमरे बिना मन, मन्दिर है सूना।
आके बिराजो स्वामी, ज्योति जगाओ जी ॥४॥ आओ…
तुमरी सूरत मोरे, मन में बसी है।
आंखों में समा के प्रभु, हृदय में आजाओजी ॥५॥आओ…
हृदय में बिठा के स्वामी, ध्यान लगाऊं।
इक टक निहारूं प्रभु, दासी को अपनाओजी ।६।आओ…

भजन नं० १६२

[तर्ज—घटा घन घोर घोर]

दुख का हुआ जोर शोर, कोई नहीं दीखे ठौर।
मेरे प्रभु आजा, आजा, मेरे भगवन आजा आ आ ॥ १
मनुष जन्म जो मिला पुन्य से, उसको यों ही खोये।
पापों में लगता जीया, धर्म न कभी कीया।
इसे समझा जा, आजा, मेरे भगवन आजा आ आ ॥२
काल अनादी भ्रमते बीता, तो भी तप नहीं कीना।
विषियों में फँसा जीया, मोह में अंधा होया।
ज्ञान सिखाजा, आजा, मेरे भगवन आजा आ आ ॥ ३

मुट्ठी बांधे आया था, अब हाथ पसारे जाये।
कुछ नहीं ले जाये जीया, तो भी नहीं दान कीया।
ममता छुटा जा, आजा, मेरे भगवन आजा आ आ ॥४
दासी रहे खोज में तेरी, वीरा तुझ को ढूंढे।
तेरे ध्यान मे लग जाये हीया, तभी सुख पावे जीया।
दरश दिखाजा, आजा, मेरे भगवन आजा आ आ ॥ ५

भजन नं० १६३

(तर्ज—हमको नजर लग जायगी)

डुक डुक भी उभारो तो प्रभु जी,
एक दिन मुक्ति मिल जाय जी।
ये प्यारा प्यारा मुखडा, नैना मे बस जाय तो,
तुमसे सूरत लग जाय जी, एक दिन मुक्ति मिल जायजी।१.
मोक्ष महल करि कठिन डगरिया,
सीधो हाय, प्रभु तेरी नजरिया।
हमको सुगम हो जाय जी, एक दिन मुक्ति मिल जायजी।२
आखो मे छाया प्रभू, मोह अन्धेरा,
इससे ँन सूझे मुझे, रस्ता मेरा।
सहारा देगे तो, चले जाय जी, एक दिन मुक्ति मिल० ।३
रस्ते मे बैठा प्रभु, पाप लुटेरा,
आगे नहूं ता लूटे, ज्ञान धन मेरा।

साथ में तुम्हारे, चले जांय जी। एक दिन मुक्ति मिल० ॥४॥
दासी पे करो प्रभु, इतनी महरिया,
पहुंचादो हमको, मोक्ष डगरिया।
हर दम तुम्हारे गुन, गायें जी।
एक दिन मुक्ति मिल जाय जी ॥ ५ ॥

भजन नं० १६४

जिन धर्म के झण्डे को हम फिर से लगा देंगे।
महावीर के नारों से दुनियां को हलादेंगे ॥टेक॥
आयेंगे जो करनी पर, वह करके दिखा देंगे।
जिन धर्म के शत्रुओं को, हम जैनी बना देंगे ॥जिन०१॥
है जान हमें प्यारी या आन हमें प्यारी।
आने दो कोई मौका, मौके पर दिखा देंगे ॥ जिन० ॥२॥
कायर न हमें समझो बुजदिल न हमें समझो।
अगयार की हस्ती को जब चाहें मिटा देंगे ॥जिन०॥३॥
होगा जहां पै रोशन, अए दास नाम अपना।
मजहब के वास्ते हम, अब जान लड़ा देंगे ॥जिन० ॥४॥

भजन नं० १६५

[तर्ज—अब तेरे सिवा कौन मेरा कृष्ण कन्हैया]

आफत में फंसा दास तेरा आन बचाले, श्रीपद्म बचाले।
चारों तरफ से आन मुसीबत ने है घेरा ॥

लूटा है दीनता ने दया शील का डेरा ।
अब कुछ तो दया करके दयावान कहाले ॥श्री पद्म बचाले
मंज़िल है बडी दूर बडा दूर किनारा ।
मैं दीण तथा क्षुद्र नहीं कुछ भी अधारा ॥
अब कुछ तो सहारा दे प्रभो आन बचाले ॥श्रीपद्म बचाले
अब किस को पुकारूं मैं सिवा तेरे कौन है ।
प्रेमी कुटुम्बी बन्धु आज सभी मौन है ॥
अब तो जौहरी अनाथ बचा तू नाथ कहाले ॥श्रीपद्म बचाले
दीनों का तुझे ध्यान नहीं दीनबन्धु क्यों ।
करुणा बिना प्रसिद्ध है, करुणा निधान क्यों ॥
अब जारही है बात तेरी, सोच सुचाले ॥ श्रीपद्म बचाले

भजन न० १६६

[तर्ज—न जाने किधर आज मेरी नाव चलीरे—झूला)

न जाने किधर आज मेरी नाव चली रे ।
चलीरे, चलीरे, मेरी नाव चली रे ॥ टेक
कोई कहे नर्क चली, कोई कहे स्वर्ग चली ।
मैंने कहा प्रभु के द्वार चली रे ॥
चलीरे चलीरे मेरी नाव चली रे ॥ ना जाने०
आतमहितू मिलजा जल्दी, दुनिया के सागर मे
नाव मेरी चलदी ।

डूबत,डूबत मेरी नाव बचीरे। बचीरे बचीरे मोरी नाव बचीरे
पापों की लहरों में नाव मेरी डोले।
भीतर से जिया मेरा डम मग डोले॥
मेरे मन मुझ को बता मेरे तिरने का पता।
बोलो गम्भीर को कौन गली रे।
चलीरे चलीरे मोरी नाव चली रे॥ ना जाने०

भजन नं० १६७

मोह का जाल पड़ाथा मुझे मालूम न था।
दुख देते हैं सुना था, मुझे मालूम न था॥ टेक॥
भूल अपने को गया मोह के फन्दे में पड़कर।
पास में कौन था क्या था, मुझे मालूम न था॥
देखता जब में फिरा, नाभि की खुशबुए महँका।
आप में आप छिपा था, मुझे मालूम न था॥
मैं समझता ही रहा यह भी औ वहभी अपना।
जिस्म भी मुझसे जुदा था मुझे मालूम न था॥
अपनी गलती से ही, बन्धन में पड़ा था भगवन।
जीव कर्मों से रिहा था, मुझे मालूम न था॥

भजन नं० १६८

मनो कामना

मेरे मन मन्दिर में आन पधारो पद्म प्रभु भगवान॥ टेक
भगवन तुम आनन्द सरोवर, रूप तुम्हारा महा मनोहर।

निशि दिन रहे तुम्हारा ध्यान,पधारो पद्म प्रभु भगवान ॥ १
सुर किन्नर गणधर गुण गाते, योगी तेरा ध्यान लगाते ।
गाते सब तेरा यशगान, पधारो पद्म प्रभु भगवान ॥मेरे०॥२
जो तेरी शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया ।
तुम हो दयानिधे भगवान, पद्म प्रभू भगवान ॥मेरे०॥३
भक्त जनो के कष्ट निवारे, आप तरे हमको भी तारे ।
कीजे हमको आप समान,पधारो पद्म प्रभू भगवान ॥मेरे०॥४
आये हैं अब शरण तिहारी, पूजा हो स्वीकार हमारी ।
तुम हो करुण दया निधान,पधारो पद्म प्रभु भगवान॥मेरे०॥५
रोम रोम में तेज तुम्हारा, भूमण्डल तुम से उजियारा ।
रविशशि तुम से ज्योतिर्मान,पधारो पद्म प्रभु भगवान॥मेरे॥६

भजन न० १६६

भगवान महावीर जो भारत में न आते
दुखदर्द जमाने का कहो कौन मिटाते,व्यथा किसको सुनाते ॥
पशुओं की गर्दनो पर चला करते दुधारे ।
बे मौत बे गुनाह, कटा करते बिचारे ॥
गर वीर दया करके जो उनको न छुडाते ॥ दुख दर्द०
मन्दिर मठो में खूं की मचा करती होलिया ।
यज्ञों मे प्राणियो की जला करती टोलियॉ ॥
भगवान अहिंसा का जो डंका न बजाते ॥ दुख दर्द०

भगवान महावीर ने वह ज्ञान सिखाया
जिसने करोड़ों हैवों को इन्सान बनाया ॥
हम ठोकरें खाते जो न वह राह बताते ॥ दुख दर्द०
गर वीर न होते तो हमें कौन बचाते ।
स्वाधीन किस तरह से बनें कौन सिखाते ॥
गांधी को अहिंसा का सबक कौन बताते ॥ दुख दर्द०
शान्ति का था वह दूत, अहिंसा का पीर था ।
शेरों में था वह शेर और वीरों में वीर था ॥
कारण यही हम सब उसे सर अपना झुकाते ॥ दुख दर्द०

भजन नं० १७०

संसार का सितारा, स्वामी मुझे बनाना ।
निकलङ्क का दुलारा स्वामी मुझे बनाना ॥
जिन धर्म का जगत में डंका बजादूं फिर से ।
अकलंक वीर जैसा ज्ञानी मुझे बनाना ॥ १
ऐसी धरु समाधि, सुध बुध रहे न तनकी !
सुख माल सेठ जैसा, ध्यानी मुझे बनाना ॥ २
युधिष्ठिर वा भीम अर्जुन,हनुमान वीर लक्ष्मण ।
श्री रामचन्द्र जीका सानी मुझे बनाना ॥ ३
निजदेश को बचालूं, सर्वस्व भी लुटा दूं ।
भामा समान सच्चा दानी मुझे बनाना ॥ ४

अपमान मेरी जाति का हो जरा कहीं भी ।
उसको न सहने वाला मानी मुझे बनाना ॥ ५
ऐसा हो शील पालन, मानो कि हूं सुदर्शन ।
शिवराज सब का प्यारा प्राणी मुझे बनाना ॥ ६

भजनन० १७१

प्रभु पद्म भजो पर गेह तजो, मिट जाय कर्म का धन्धा ।
जिनध्यान करो गुणगान करो, कट जाय कर्म का फन्दा ॥
जिनदेव महा उपकारी, सब जीवों के हितकारी—
उठ भोर भक्ति मन लाय, जिनालय जाय ।
जिनेश्वर ध्याय,मिटाले चुर्तुगती का फन्दा ॥
जिनदेव भजो ··· ··

प्रभु पूजन का फल भारी, मंडूक अमर गति धारी ।
कर भाव शुद्ध भर थाल, चले नर नार प्रभु के द्वार ।
हुआ यह चमन प्रभु वन्दा ॥ २
प्रभु पद्म भजो परनेह तजो, मिट जाय कर्म का धंधा ।
जिन ध्यान करो,गुण गान करो,कट जाय कर्म का फन्दा ॥

❀ पद्म प्रभु कीर्तन ❀

न० १७२

जय पद्मप्रभो जिनचन्द प्रभो, जय जय सुसीमाके नन्दप्रभो।
रिपु कर्म हरे दुख द्वन्द हरे, जय जय भगवन भव फंद हरे
॥ जय पद्म प्रभो० ॥

जय विघ्न विकार निकंद प्रभो, जय ज्ञान सुदीप्त दिनंद प्रभो।
शिव पति दायक आनन्द प्रभो, जय जय श्री पद्म जिनंद प्रभो
॥ जय पद्म प्रभो० ॥
सुख सौरभ गुण मकरन्द हरे, भज 'भगवत' अत्र मतिमन्द
जय जय जिन परमानन्द प्रभो ॥जय पद्म प्रभो० ॥

* भगवान श्रीपद्म प्रभु के चरणों में श्रद्धा के फूल *

इक प्रेम पुजारी आया है, चरणों में ध्यान लगाने को।
भगवन् ! तुम्हारी सूरत पर श्रद्धा के फूल चढ़ानेको ॥१॥
तव भक्तिका तूफां दिलमें उठा जो वर्णनमें नहीं आसकता।
प्रेमाश्रु नयन में उमड़े हैं, भक्ति का भाव जताने को ॥२॥
तुम बाड़ा ग्राम के तारे हो; दुखियों के नाथ सहारे हो।
तुम चमत्कार दर्शाते हो, पाखण्ड नाश कराने को ॥३॥
आंखों से खून टपकता है, सीने पै हैं खंजर चलता।
श्री पद्म प्रभो जल्दी सुध लो दीनोंकी जान बचानेको॥४॥

नं० १७३

भजन श्रीमहावीर

चांदनपुर के महावीर हमारी पीर हरो ॥टेर॥
जयपुर राज्य गांव चांदनपुर।
तहां बनो उन्नत जिन मन्दिर ॥
तट नदी गम्भीर, हमारी पीर हरो।
चांदनपुर के० ॥१॥

पूरव वात चली यौं आवै।
एक गाय चरने को जावै॥
झर जाय इसका चीर, हमारी पीर हरो।
चादनपुर के० ॥ २ ॥
एक दिवस मालिक संग आयो।
देख गाय टीलो खुदवायो॥
खोदत भयो अधीर, हमारी पीर हरो।
चादनपुर के० ॥ ३ ॥
रैन माहि तन सुपनो दीनो ।
धीरे धीरे खोद जमींनो ॥
है इसमे तस्वीर, हमारी पीर हरो।
चादनपुर के० ॥ ४ ॥
प्रात होत फिर भूमि खुदाई,
वीर जिनेश्वर प्रतिमा पाई।
भई इकट्ठी भीर हमारी पीर हरो,
चादनपुर के० ॥ ५
तन ही से हुआ मेला जारी,
होय भीड हर साल करारी।
चैत्रका मास आखीर,हमारी पीरहरो
चांदनपुर के० ॥ ६
लाखों मीना गूजर आंवें

नाचें गावें गीत सुनावें।
जै बोले महावीर हमारी पीरहरो,
चांदनपुर के० ॥ ७
जुड़ें हजारों जैनी भाई,
पूजन पाठ करें सुखदाई।
मन वच तन धरि, हमारी पीर हरो;
चांदनपुर के० ॥ ८
छत्र चँवर सिंहासन लायें
भरि भरि घृत के दीप जलावें।
बोलें जै गंभीर,हमारी पीर हरो,
चांदनपुर के० ॥ ९
जो कोई सुमरे नाम तुम्हारा,
धन सन्तान चढ़े व्यौपारा।
होम निरोग शरीर,हमारी पीरहरो,
चांदनपुर के० ॥ १०
"मक्खन" शरण तुम्हारी आयो
पुण्य योग में दर्शन पायो।
खुली आज तगदीर, हमारी पीर हरो,
चांदनपुर के० ॥ ११



श्रीपद्म-शकुनावली



सम्पादक—
पं० सुमेरचन्द जैन साहित्यरत्न, न्यायतीर्थ

प्रकाशक—
मास्टर छोटेलाल जैन
१—सम्पादक 'पद्मवाणी' कार्यालय, कूचा सेठ, देहली।

पुस्तक मिलने का पता:—

२—जैन साहित्य-मन्दिर, जबलपुर।
३—सिंघई कुन्दनलाल जैन पद्मपुरी, पो० शिवदासपुर [जयपुर]
४—फूलचन्द जैन फोटोग्राफर, पद्मपुरी।

श्रीपद्म शकुनावली

विधि—श्री पद्मप्रभु का नाम सात बार जप कर किसी अङ्क पर अंगुली रखदे और आगे फल देखले।

१११	११२	११३	११४	१२१	१२२	१२३	१२४
१३१	१३२	१३३	१३४	१४१	१४२	१४३	१४४
२११	२१२	२१३	२१४	२२१	२२२	२२३	२२४
२३१	२३२	२३३	२३४	२४१	२४२	२४३	२४४
३११	३१२	३१३	३१४	३२१	३२२	३२३	३२४
३३१	३३२	३३३	३३४	३४१	३४२	३४३	३४४
४११	४१२	४१३	४१४	४२१	४२२	४२३	४२४
४३१	४३२	४३३	४३४	४४१	४४२	४४३	४४४

सिद्ध पासावलीका फल।

१११--हे प्रश्नकर्ता! यह पाशा बहुत शुभ है, तेरे दिन अच्छे हैं, तूने विलक्षण बात बिचार रक्खी है वह सब सिद्ध होगी, व्यापार में लाभ होगा और युद्ध में जीत होगी।

११२—हे प्रश्नकर्ता! तेरा काम सिद्ध नही होगा। इस लिये विचारे हुये काम को छोड़कर दूसरा काम कर तथा देवाधिदेवका

ध्यान रख। इस शकुनका यह प्रमाण है कि तू रातको काक (कौआ) घुग्घु, गीध, मक्खियां, मच्छर मानो अपने शरीरमें,तेल लगाया हो अथवा काला सार देखा हो ऐसा देखेगा।

११३–हे पूछने वाले। तूने जो विचार किया है उसका फल सुन। तू किसी स्थान (ठिकाने) को या धनके लाभको या किसी सज्जनकी मुलाकात को चाहता हैं यह सब तुझे मिलेगा, तेरे क्लेश चिंताके दिन बहुत से बीत गये, अब तेरे दिन अच्छे आ गये इस बात की सचाई का प्रमाण यह है कि तेरी कोख पर तिल मशा या घावका चिह्न है।

११४–हे पूछने वाले। यह पाशा बहुत कल्याणकारी है। कुलकी वृद्धि होगी जमीनका लाभ होगा,धनका लाभ होगा, पुत्रका भी लाभ दीखता है और प्यारे मित्रका दर्शन करेगा. किसी से सम्बन्ध होगा तथा तीन महीनेके अन्दर विचारे हुये कामका लाभ होगा। गुरु की भक्ति और कुलदेवकी पूजन कर। इस बात की सत्यता यह है कि तेरे शरीर के ऊपर दोनों तरफ मशा तिल या घावका चिह्न है

१२१–हे पूछने वाले। तुझे वित्त (धन)और यशका लाभ होगा ठिकाना और सम्मान की प्राप्ति होगी तथा तेरी मनोभिलाषित वस्तु मिलेगी,इसमें शङ्का मतकर। अब तेरा पाप और दुःख क्षीण होगया। इसलिये तुझे कल्याणकी प्राप्ति होगी। तू रात को स्वप्नमें प्रत्यक्षमें लड़ाई करना देखेगा।

१२२—हे प्रश्नकर्ता ! तेरे कार्य और धन की सिद्धि होगी, तेरे विचारे हुये सब मामले सिद्ध होंगे, कुटुम्बकी वृद्धि, स्त्री का लाभ तथा सज्जनकी मुलाकात होगी। तेरे मनमें जो बहुत दिनों से जो विचार है शीघ्र पूरा होगा। तेरे दिनमें स्त्री सम्बन्धी चिंता आजसे पांचवे दिन के अंदर होगी।

१२३—हे पूछनेवाले ! तेरे कार्य और धन की सिद्धि होगी, तेरे विचारे हुये सब मामले सिद्ध होंगे,कुटुम्बकी वृद्धि,स्त्रीका लाभ, तथा सज्जनकी मुलाकात होगी,तेरे मनमें जो बहुत दिनोंसे विचार है वह अब जल्दी पूर्ण होगा। इस बातका यह पुरावा है कि तेरे घरमें लड़ाई तथा स्त्री सम्बन्धी चिन्ता आज से पाँचवें दिनके भीतर हुई होगी।

१२४—हे पूछने वाले ! तेरी भाइयों से जल्दी मुलाकात होगी, तेरा सुकृत अच्छा है, गुरुका बल भी अच्छा है इसलिये तेरे सब काम सिद्ध हो जावेंगे। तू अपनी कुल देवी की पूजन कर।

१३१—हे प्रश्नकर्ता ! तुझे ठिकाने का लाभ, धन का लाभ, चित्तसे चैन होगा। जो कुछ तेरा काम विगड़गया हैं वह भी सुधर जायगा। तथा जो कुछ चीज चोरी में गई है वहभी मिल जावेगी इस बातका प्रमाण है कि तूने स्वप्न में वृक्षको देखा या देखेगा।

१३३—हे प्रश्नकर्ता, जो काम तूने विचारा है वह सब हो जावेगा। इस बात का प्रमाण यह है कि तेरी स्त्रीके साथ तेरी ज्यादा प्रीति है।

१३३–हे पूछने वाले ! इस शकुनसे तेरे धन के नाशका तथा शरीर में रोग होने का सम्भव है तथा तेरे किसी प्रकार का बन्धन है, जान के धोखे का खतरा है तूने भारी काम विचारा है वह बड़ी तकलीफ से पूरा होगा।

१३४–हे प्रश्नकर्ता। तुझे राजकाजकी तरफ की वा सर्कारकी तरफ की अथवा सोना चांदी की, परदेशकी चिन्ता है। तू किसी दुश्मन से जीतना चाहता है यह सब तुझे धीरे २ प्राप्त होगी। तेरे पाप कट गये, तु वीतराग देवका ध्यान कर, तेरे सब काम सिद्ध होंगे।

१४१- हे पूछनेवाले। तेरा प्रश्न किसी व्यापारका है तथा तुझे दूसरी भी कोई चिन्ता है। इस सब कष्ट से छूटकर मङ्गल होगा। आजके सातवें दिन या तो तुझे कुछ लाभ होगा या अच्छी द्धि पैदा होगी।

१४२–हे प्रश्नकर्ता। तेरे मन में धन धान्य की अथवा घर के विषयकी चिन्ता है वह सब चिन्ता दूर होगी, तेरे कुटुम्बकी वृद्धि होगी कल्याण होगा, सज्जनोंसे मुलाकात होगी तथा गई हुई वस्तु भी मिलेगी। इस बात का प्रमाण यह है कि तेरे घरमें या बाहर लड़ाई हुई है या होगी।

१४३–हे प्रश्नकर्ता। तेरे विचारे हुये सब काम सिद्ध होंगे, कल्याण होगा तथा लड़की का जन्म होगा। इसका प्रमाण यह है कि तू स्वप्न में किसी ग्राम को जावेगा।

१४४-हे प्रश्नकर्ता ! तेरे सब कार्यों की सिद्धि होगी और तुझे सम्पत्ति मिलेगी। इसका प्रमाण यह है कि तू स्वप्न में अपने विचारे कामको देखेगा या चन्द्रमा या देवमन्दिर वा मूर्तिको देखेगा।

२११-हे पूछनेवाले ! तूने मनमें एक बड़ा कार्य विचारा है तथा तुझे धन विषयक चिता है सो तेरे लिये सब अच्छा होगा। तथा प्यारे भाइयोंकी मुलाकात होगी। इस बातकी सत्यताका प्रमाण यह है कितूने स्वप्न मे ऊंचे मकानपर चढ़ता देखाहै अथवा देखेगा।

२१२-हे पूछनेवाले ! तेरे सब कामोंकी वृद्धि होगी, मित्रों से मुलाकात होगी, संसार से लाभ होगा, विवाह करने पर कुल की वृद्धि होगी तथा सोनाचांदी आदि संपत्ति होगी। इस बातका प्रमाण यह है कि स्वप्न में तूने गाय; बैल को देखा है, तू कुलदेवी को। मान, सब अच्छा होगा।

२१३-हे प्रश्नकर्ता ! तेरे मन में द्विपद (दो पैरवाले- स्त्री पुत्र) की चिता है और तूने अच्छा काम विचारा है उसका लाभ तुझे एक महीने में मिलेगा। तुझे सज्जन भाई मिलेंगे,शरीरमें प्रसन्नता होगी इस कार्यकी सिद्धि होगी परन्तु जो तेरा गोत्र देव है उसकी आराधना कर। तू माता पिता भाई बन्धु आदि से जो कुछ प्रयोजन चाहता है वह सफल होगा। तूने रातको प्रत्यक्ष में या स्वप्न में स्त्री से समागम किया है, इसका यह प्रमाण है।

२१४-हे पूछने वाले ! जो कुछ तेरा काम विगड़ गया है अर्थात् जो कुछ नुकसान आदि हुआ है अथवा किसीसे जो कुछ

तुझे लेना है या जिस किसीने तुझसे दगाबाजी की है उसको तू भूलजा। यहां से कुछ दूर जाने पर तुझे लाभ होगा। आज तूने स्वप्न में देवको या देवी या कुलके बडे जनोंको या नदी आदिको देखा है या सज्जनों से तेरी मुलाकात होगी।

२२१- हे प्रश्नकर्ता! अभी तक जो तूने कार्य किया है उसमें तुझे बराबर क्लेश हुआ अर्थात् सुख नहीं पाया, अब तू अपने मनमें और कल्याण चाहता है तथा धनकी इच्छा रखता है। तुझे बडे स्थानकी चिंता है तथा तेरा चित्त चंचल है सो अब तेरे दुःख नाश हुआ और कल्याणकी प्राप्ति हुई समझने। इस बातको सत्यताका प्रमाण यह है कि तू स्वप्न में वृक्ष को देखेगा।

२२२ -हे प्रश्नकर्ता! तेरा सज्जनों के साथ विरोध है और तेरी कुमित्रसे मित्रता है। जो तेरे मनमें चिंता है तथा जिस बडे काम को तूने उठा रक्खा है उस कामकी सिद्धि बहुत दिन में होगी तथा तेरा जो कुछ पाप बाकी है सो उसका नाश होजाने से तुझे स्थानका लाभ होगा।

२२३--हे पूछने वाले! इस समय तूने बुरे कामका मनोरथ किया है तथा तू दूसरे के धनसे व्यापार करके धन लाभ करना चाहता है, सो उस संपत्ति का मिलना कठिन है। तू व्यापार कर, लाभ होगा परन्तु जो तूने मन मे विचार रखा है उसको छोड़कर दूसरे प्रयोजन को विचार। इस बात की सत्यता का यही प्रमाण है कि तू स्वप्न में अपने खोटे दिन देखेगा।

२२४—हे पूछनेवाले! तेरे मनमें परस्त्री की चिन्ता है। तू बहुत दिनोंसे तकलीफ को देख रहा है, तू इधर उधर भटक रहा है तथा तेरे साथ यहां पर लड़ाई आदि बहुत दिनोंसे चल रही है, यह सब विरोध शांत हो जावेगा। अब तेरी तकलीफ गई, कल्याण होगा तथा पाप और दुःख सब मिट गये। तू गुरुदेव की भक्ति कर तथा कुलदेवकी पूजाकर। ऐसा करनेसे तेरे विचारे हुएकाम सफल होंगे।

२३१—हे प्रश्नकर्ता! तुझे दोषों के बिना विचारे ही धन का लाभ होगा। एक महीनेमे तेरा मनोरथ सफल होगा, तुझे बड़ाफल मिलेगा। इस बातकी सत्यताका प्रमाण यहहै कि तूने स्त्रियोंकी कथा की है अथवा तू स्वप्न में वृक्षों को सूने घरोंको अथवा सूने देशको वा सूखे तालाब को देखेगा।

२३२—हे प्रश्नकर्ताः! तूने बहुत कठिन काम विचारा है। तुझे फायदा नहीं होगा। तेरा काम सफल न होगा। तुझे सुख मिलना कठिन है। इस बात की सत्यता का प्रमाण यह है कि तू स्वप्न में भैंस देखेगा।

२३३—हे प्रश्नवाञ्छुक! तेरे मन में अचानक का उत्पन्न होगया है, तू दूसरे के काम के लिये चिता करता है। तेरे मन में कठिन और विलक्षण चिन्ता है। तूने अनर्थ करना विचारा है, इसलिये कार्य की चिता को दूर कर तथा गोत्र देवी की आराधना कर, उसमें तेरा भला होगा। इस बात की सत्यता जा प्रमाण यह है कि तेरे घरमें कलह है। तू बाहर फिरता है ऐसा देखेगा अथवा तुझे स्वप्न मे देवताओं का दर्शन होगा।

२३४—हे पूछने वाले। तुझे विवाह सम्बन्धी चिंता है। तुझे धनकी चिंता है, लाभ होगा। कुटुम्बी की चिंता से तू मुर्झाता है। तुझे ठिकाने और जमीन जगह की भी चिंता है। तेरे मन में पाप नहीं है। इसलिये तेरे मन की चिंता शीघ्र दूर होगी। तू स्वप्न में गाय भैंस तथा जल में तैरने को देखेगा, तेरे दुःख का अन्त आ गया। इसलिये तू शुद्ध भक्ति से कुलदेवता की पूजा कर।

२४१—हे पूछने वाले। तुझे स्त्री की चिंता है तथा तू कहीं लाभ के लिये जाना चाहता है। तेरा विचारा हुआ कार्य सिद्ध होगा तथा तेरे पद की वृद्धि होगी। इसका प्रमाण यह है तूने मैथुन के लिये बात की है।

२४२—हे प्रश्नकर्त्ता। तुझे बहुत दिनों से परदेश में गये हुये मनुष्य की चिंता है। तू उसको बुलाना चाहता तथा तूने जो काम विचारा है वह अच्छा है, परन्तु भावी बलवान् है। इसलिये यह बात इस समय सिद्ध होती नहीं दीखती।

२४३—हे पूछने वाले। तेरा रोग और दुःख मिट गया, तेरे सुख के दिन आ गये। तुझे मनोभिलाषित फल मिलेगा, तेरे सब उपद्रव मिट गये तथा इस समय जाने से तुझे लाभ होगा।

२४४—हे पूछने वाले। तेरे चित्त में जो चिन्ता है वह मिट जावेगी, कल्याण होगा तथा तेरा सब काम सिद्ध होगा। इस बात का प्रमाण यह है कि तेरे गुप्त अंग पर तिल है।

३११—हे पूंछने वाले ! तू इस वातको विचारता है कि मैं देशान्तरको जाऊं। मुझे स्थान मिलेगा या नहीं सो तू कुलदेवी या श्री गुरु का स्मरण कर- तेरे सब विघ्न मिट जावेंगे । तथा तुझे अच्छा लाभ होगा और कार्यकी सिद्धि होगी। इस बातकी सत्यता यह है कि तू स्वप्न में ऊंचे स्थल, पहाड़ आदि को देखेगा।

३१२—हे प्रश्नकर्तः! तेरे मनोरथ पूर्ण होवेंगे। तेरे लिये धन का लाभ दीखता है। तेरे कुटुम्ब की वृद्धि तथा शरीरमें सुख धीरे धीरे होगा। देवताओंको ग्रहोंकी जो पूर्व की पीड़ा है उसको शांति के लिये देवताको आराधना कर। ऐसा करने से जो तू जिस काम का आरम्भ करेगा वह सफल होगा। इस बातकी सत्यताका प्रमाण यह है कि तू स्वप्न में गाय घोड़ा और हाथी को देखेगा।

३१३—हे पूंछनेवाले ! तेरे मनमें धनकी चिन्ता है और तू कुछ दिलका नरम है। तेरे दुश्मनने तुझे दबा रखा है। तेरा मित्र भी तेरी सहायता नहीं करता। तू सज्जनता को बहुत रखता है इसलिये तेरा धन लोग खाते हैं सो शान्त रह, परिणाममें अच्छा है। तेरा दुःख मिट जावेगा। इसका प्रमाण यह है कि तेरे घरमें लड़ाई होगी।

३१४—हे प्रश्नकर्ता ! यह शकुन कल्याण या गुणसे भरा है। तू निश्चिन्तता से वेफिक्र हो जल्दी ही सब कामों की सिद्धि होना चाहता है सो वे काम सब धीरे २ सिद्ध होंगे। इस बातको सत्यताका प्रमाण यह है कि तू स्वप्नमें वृष्टिका होना सम्पत्ति, तालाब या मछली इनमें से किसी वस्तु को देखेगा।

३२१—हे पूंछनेवाले। यह शकुन ,अच्छा नहीं, यह काम तो तूने विचारा है निरर्थक है। छः महीने तक इस कर्मका उदय है इसलिये इसकी आशाको छोड़। दूसरा काम कर, क्योंकि यह कार्य कभी न होगा। इस बात की सत्यता का प्रमाण यह है कि तू स्वप्नमें गवैये लोगोंको अथवा नगरको देखेगा। सर्कारसे तुझे तकलीफ होगी। इसलिये अन्यत्र चला जा।

३२२—हे प्रश्नकर्तुं। एक माहसे तेरे मनमें धनकी इच्छा तुझे पीड़ा देरही है, परन्तु अब तेरे शत्रु भी मित्रहो जावेंगे,धुव सम्पत्तिकी वृद्धि होगी। धनका लाभ अवश्य होगा, सर्कार से भी तुझे कुछ सम्मान मिलेगा, इस बातकी सत्यताहै कि तूने मैथुन कियाहै

३२३—हे पूछनेवाले। यद्यपि तेरे अल्प भाग्योदय है। पर तकलीफ तो कुछ है ही नहीं। तुझे अच्छे प्रकार से रहने के लिये ठिकाना मिलेगा धनकी प्राप्ति होगी, प्यारे सज्जनोंकी मुलाकातहोगी इसकी सत्यता यह है कि तू स्वप्न में प्यारोंसे मुलाकात करेगा।

३२४—हे प्रश्नवाछक। तेरे मकान और जमीनकी वृद्धि होगी तू व्यापारमें सम्पत्ति पावेगा तथा तूने जो मनमें विचाराहै वहसब सिद्ध होगा, परन्तु तेरे मनमें कोई खटका या चिन्ताहै। इस बात की सत्यताका प्रमाण यह है कि तेरे सिरमें जख्म का निशान है।

३२५—हे प्रश्न करनेवाले। तू अपने चित्त में काम कुटुम्ब, घर, सम्पत्ति और धनकी वृद्धि प्रजा से लाभ तथा वस्त्र लाभ आदि का विचार करता है सो तू कुलदेव तथा गुरुकी भक्ति कर। ऐसा

करने से तुझको लाभ होगा। इसका प्रमाण यह है कि तू स्वप्न में गाय को देखेगा।

३३१—हे पूंछने वाले! तुझे बड़ी तकलीफ है, तेरे भाई और मित्र भी बदल कर चल रहे हैं तथा जो तू मन में विचारता है उस तरफ से तुझे लाभ का होना नहीं दिखता। इस लिये तू देशान्तर को चला जा, वहां तुझे लाभ होगा। तू आम बात में पराये धन में बात करता है। इस बात की सत्यता यह है कि तू स्वप्न में भाई और मित्र से मिलेगा।

३३२—हे प्रश्नवाँछक! तू चिन्ता को दूर कर। तेरी अच्छे आदमी से मुलाकात होगी। अब तेरे दुःख का नाश हुआ। तुझे व्यवहार, भाई आदि की चिन्ता है, शीघ्र दूर होगी, सब काम सिद्ध होंगे।

३३४—हे पूंछने वाले! चिता मत कर। तेरी अच्छे आदमी से मुलाकात होगी, दुःख का नाश होगा, तेरे विचारे सब कार्य सफल होंगे।

३४१—हे पूंछने वाले। तेरे मन में किसी पराये आदमी से प्रीति करने की इच्छा है सो तेरे लिए अच्छा होगा, तू घबरा मत। तुझे सुख मिलेगा, धन का लाभ होगा तथा अच्छे आदमी से मुलाकात होगी।

३४२—हे इच्छुक! तेरे मन में पराये आदमी से मुलाकात करने की चिन्ता है, तेरे ठिकाने की वृद्धि होगी, कल्याण होगा, प्रजा की वृद्धि तथा आरोग्यता होगी। इस बात का प्रमाण यह है कि तू स्वप्न में वृक्ष को देखेगा।

३४३—हे पूछने वाले। तुझे वेरी की अथवा जिस किसी ने तेरे साथ विश्वासघात किया है, उसकी चिन्ता है सो इस शकुन में ऐसा मालूम होता है कि तेरे बहुत दिन कलह में बीतेंगे। तथा तेरी जो चीज चली गई है वह बहुत दिन में भी न मिलेगी, बहुत दिन में कल्याण होगा।

३४४—हे पूछने वाले। तेरे सब काम अच्छे हैं तुझे शीघ्र ही मन चाहा फल मिलेगा। तुझे जो व्यापार की तथा भाई बन्धुओं की चिन्ता है वह सब मिट जावेगी। इसका प्रमाण यह है कि तेरे शिर में घाव का चिह्न है। तू उद्यम कर, अवश्य लाभ होगा।

४११—हे प्रश्नकर्ता। तेरे धन की हानि, शरीर में रोग और चित्त की चञ्चलता ये बातें सात वर्ष से हो रही हैं, जो काम तूने अब तक किया है उसमें नुकसान होता रहा है, परन्तु अब तू खुश हो क्योंकि अब तेरी तकलीफ चली गई। तू चिन्ता मत कर, क्योंकि अब कल्याण होगा, धन धान्य की आमद होगी, सुख मिलेगा।

४१२—हे प्रश्नकर्ता। तेरे मन में स्त्री विषयक चिंता है। तेरी कुछ रकम भी लोगों पर फस रही है और जब तू माँगता है तब हाँ ना होती है। धन के विषय में तकरार होने पर भी लाभ प्रताव नहीं होता। यद्यपि मन में तू अपने को खुशमिजाज समझता है परन्तु उसमें कुछ दिनों की ढाल है अर्थात् कुछ दिन पीछे मतलब सिद्ध होगा।

४१३—हे वांच्छक ! तेरे मनमें धनकी इच्छाहै और तू किसी प्यारे मित्र की मुलाकात चाहता है सो तेरी जीत होगी, अचल ठिकाना मिलेगा, पुत्र का लाभ होगा, परदेश जाने पर कुशलक्षेम रहेगा, तथा कुछ दिनों बाद तेरी बहुत वृद्धि होगी। इस बात की सत्यता का प्रमाण यह है कि तू स्वप्न में कांच (दर्पण) देखेगा।

४१४—हे पूछने वाले ! बहुत अच्छा शकुन है। तुझे द्विपद अर्थात् किसी आदमी की चिन्ता है सो महीने भर में मिट जावेगी, धन का लाभ होगा, मित्र से मुलाकात होगी तथा मन के मनोरथ सफल होंगे।

४२१—हे वांच्छक। तू धन को चाहता है, तेरी संसार में प्रतिष्ठा होगी। परदेश में जाने से मनोवांछित (मनचाहा) लाभ होगा। तथा सज्जनों की मुलाकात होगी तथा मन के विचारे सब काम सफल होंगे।

४२२—हे पूछने वाले ! तेरे मन में ठकुराई की चिंता है परंतु तेरे पीछे तो दारिद्रता पड़ रही है, तू पराये (दूसरे) के कामों में लगा रहता है, मन में बड़ी तकलीफ पा रहा है तथा तीन वर्ष से तुझे क्लेश हो रहा है। अर्थात् सुख नहीं. इसलिये तू अपने मन के विचारे हुए काम को छोड़ कर दूसरे काम कर, वह सफल होगा। तू कठिन स्वप्न को देखता है तथा उसका तुझे ज्ञान नहीं, इसलिये जो तेरा कुल धर्म है उसे कर, गुरु की सेवा कर तथा कुलदेव का ध्यान कर। ऐसा करने से सिद्धि होगी, यह अशुभ है।

४२३—हे पूछने वाले। तेरा विजय होगा, शत्रुका क्षय होगा, धन सम्पत्ति का लाभहोगा, सज्जनोंसे प्रीत होगी, कुशलक्षेम होगा तथा औषधि करने आदिसे लाभ होगा। अब तेरेपाप क्षयको प्राप्त हुए इस लिये जिस कामको तू विचरता है वह सब सिद्ध होगा। इस बात का प्रमाण यह है कि तू स्वप्न में अशोक वृक्षको देखेगा।

४२४—हे पूछने वाले! तेरे मनमें बडी भारी चिंता है, तुझे अर्थ का लाभ होगा तेरी जीत होगी तथा चित्तमें आनन्द होगा।

४३१—हे पिपासु। यह शकुन दीर्घायुर्धक है, बडी उम्र का बढाने वाला है; तुझे दूसरे ठिकाने की चिंता है, तू भाई व धुओं के आधार मन को चाहता है, तू अपने मन मे जिस काम को विचारता है वह सब सिद्ध होगा। अब तेरे दुःख का नाश हुआ परन्तु तुझे देशान्तर मे जानेसे धनका लाभ होगा और कुशलक्षेम से आना होगा। इस बात का प्रमाण यह है कि तू स्वप्न में पहाड़ पर चढ़ना तथा मकान आदि को देखेगा। देख, तेरे पैर पर पचफोडे का निशान है।

४३२—हे मुमुक्षु। अब तेरे दुख समाप्त हुये तथा तुझेकल्याण प्राप्त हुआ, तुझे स्थान की चिन्ता है तथा तू किसी मुलाकात को चाहता है सो जो कुछकाम तूने विचारा है वह सब होगा। देशातर में जानेसे धन की प्राप्ति होगी तथा वहासे कुशलक्षेम से आवेगा।

४३३—हे पूछने वाले। जब तेरे पास पहले धन था तब तो भाईबन्धु मित्र आदि तेरी आज्ञा मानतेथे परन्तु दुष्ट कर्मके प्रभाव से यह सब धन नष्ट होगया। तू चिंता मत कर, फिर धन मिलेगा। मन प्रसन्न होगा, मनोरथ सफल होगा, जिनेन्द्र की पूजा कर।

४३४—हे वांच्छक! जिसका तू मरना विचारता सो वह अभी नहीं मरेगा, और जो तूने यह विचार किया यह मेरा काम होगा हाँ अभी नहीं, कुछ दिन बाद होगा।

४४१—हे पूछनेवाले! तेरे भाई का नाश हुआ है तथा तेरे कष्ट, पीड़ा, दुःखके बहुत दिन बीत गये, अबतेरे ग्रहको पीड़ा केवल पांच पक्ष या पांच दिनकी है, जिस कामको तू विचारता है उसमें फायदा नहीं है। दूसरे कामको विचार उसमें फायदा होगा।

४४२—हे प्रश्नकर्ता! जिस कामका तू विचार करता है वह यत्न करने पर भी सिद्ध होता हुआ नहीं दीखता इसलिये दूसरा काम कर।

४४३—हे पूछनेवाले! जिस काम को तू प्रारम्भ करता है वह काम सिद्ध नहीं होगा। तू पराये वास्ते क्यों अपने प्राणोंको खोता है। वह तेरा नहीं, तू दूसरा कार्य कर जिससे लाभ हो।

४४४—हे इच्छिनीषु! जिस कामका तू विचार करता है वह तुझे शीघ्र प्राप्त होगा, तेरी मनोभिलाषित वस्तु अवश्य प्राप्त होगी पुत्र का लाभ, योग्य स्थानका लाभ तथा धनका लाभ और ऐश्वर्य बहुत शीघ्र प्राप्त होंगे। श्री जिनेन्द्रदेव को भक्ति कर।



हरिहर प्रेस, देहली।



श्रीपद्मप्रभु-महावीर पूजा

और

पद्मावती-स्तोत्र।

(संशोधित संस्करण)



[illegible]—

श्रीमान बा० [illegible]लाल जैन,

[illegible]।

[illegible]] [illegible] [[illegible])

* ॐ *

श्री अतिशय क्षेत्र बाड़ा पद्मपुरी

श्रीपदमप्रभु-पूजा

॥ दोहा ॥

श्रीधर नन्दन पद्म प्रभु, वीतराग जिन नाथ।
विघन हरण मंगल करन, नमो जोरि जुग हाथ॥
जन्म महोत्सव के लिये, मिल कर सब सुर राज।
आये कौसाम्बी नगर, पद पूजा के काज॥
पद्मपुरी में पद्म प्रभु, प्रगटे प्रतिमा रूप।
परम दिगम्बर शान्तिमय, छवि साकार अनूप॥
हम सब मिल करके यहां, प्रभु पूजा के काज।
आव्हानन करते सुखद, कृपा करो महाराज॥

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्र? अत्रमम सन्निहिता। भव भय वषट्।

(अष्टक)

क्षीरोदधि उज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा।
कंचन झारी में लेय, दीनो धार धरा॥

बाडा के पद्म जिनेश, मंगल रूप सही।
काटो सर्व क्लेश महेश, मेरी अर्ज यही॥
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय जन्म मृत्यु विनाशनाय जल

चन्दन केशर करपूर, मिश्रित गन्ध धरो।
शीतलता के हित देव, भव आताप हरो॥ बाडा के०
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय। भवताप विनाशनाय चन्दन।

ले तन्दुल अमल अखण्ड, थाली पूर्ण भरो।
अक्षय पद पावन हेतु, हे प्रभु पाप हरो॥ बाडा के०
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षत।

ले कमल केतकी बेल, पुष्प धरूं आगे।
अब प्रभु सुनिये टेर, काम कला भागे॥ बाडा के०
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्प।

नैवेद्य तुरत बनवाय, सुन्दर थाल सजा।
मम क्षुधा रोग नश जाय, गाऊं वाद्य बजा॥ बाड़ा के०
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य।

हो जगमग २ ज्योति, सुन्दर अनयारी।
ले दीपक श्री जिनचन्द, मोह नशे भारी॥ बाडा के०
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीप।

ले अगर कपूर सुगन्ध, चन्दन गन्ध महा।
खेवत हों प्रभु ढिग आज, आठों कर्म दहा॥ बाडा के०
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूप।

श्रीफल बादाम सुलेय, केला आदि हरे।
फल पाऊं शिव पद नाथ, अरपूं मोद भरे ॥ बाड़ा के०

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय मोक्ष फलप्राप्तये फलं।

जल चन्दन अक्षत पुष्प, नेवज आदि मिला।
मैं अष्ट द्रव्य से पूज, पाऊं सिद्ध सिला ॥ बाड़ा के०

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं।

दोहा (अर्घ चरणों का)

चरण कमल श्रीपद्म के, वन्दों मन वच काय।
अर्घ चढ़ाऊं भाव से, कर्म नष्ट हो जाय ॥ बाड़ा के०

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय के चरणों में अर्घं।

(भूमि के अन्दर विराजमान समय का अर्घ)

पृथ्वी में श्री पद्म की, पद्मासन आकार।
परम दिगम्बर शांतिमय, प्रतिमा भव्य अपार ॥
सौम्य शान्त अति कान्तिमय, निर्विकार साकर।
अष्ट द्रव्य का अर्घ ले, पूजूं विविध प्रकार ॥ बाड़ा के०

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय भूमि मे स्थित समय अर्घं।

(पंच कल्याण)

(हर एक दोहा के बाद नीचे लिखी अचरी पढ़ना चाहिये)

श्रीपद्म प्रभु जिनराज जी, मोहे राखो हो सरना ॥

॥ दोहा ॥

माघ कृष्ण छट मे प्रभो, आये गर्भ मझार ।
मात सुसीमा का जनम, किया सफल करतार ॥ श्रीपद्म०
ॐ ह्रीं माघ कृष्ण ६ गर्भ मगल प्राप्ताय श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घं ।
कार्तिक सुदि तेरस तिथी, प्रभो लियो अवतार ।
देवो ने पूजा करी, हुआ मगलाचार ॥ श्रीपद्म०
ॐ ह्रा कार्तिक शुक्ल १३ जन्म मगल प्राप्ताय श्रीपद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घं ।
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी, तृणवत बन्धन तोड ।
तप धारो भगवान ने, मोह कर्म को मोड ॥ श्रीपद्म०
ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल १३ तप कल्याणक प्राप्ताय श्रीपद्म प्रभु जिनेन्द्राय अ ।
चैत्र शुक्ल की पूर्णिमा, उपज्यो केवलज्ञान ।
भवसागर से पार हो, दियो भव्य जन ज्ञान ॥ श्रीपद्म०
ॐ ह्रीं चैत्र सुदी पूने केवल ज्ञान प्राप्ताय श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घं ।
फागुन वदी सुचौथ को, मोक्ष गये भगवान ।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजों धर ध्यान ॥ श्रीपद्म०
ॐ ह्रीं फाल्गुन वदी ४ मोक्ष मगल प्राप्ताय श्रीपद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घं ।

जयमाल ।

दोहा—चौंतीसो अतिशय सहित, बाडा के भगवान् ।
जयमाला श्री पद्म की, गाऊं सुखद महान ॥

[पद्धरी छन्द]

जय पद्म नाथ परमातम देव । जिनकी करते सुर चरन सेव ॥
जय पद्म २ प्रभु तन रसाल । जय२ करने मुनिमन विसाल ॥
कोशाम्बी में तुम जन्म लीन । बाड़ामें बहु अतिशय करीन ॥
एक जाट पुत्रने जमीं खोद । पाया तुमको होकर समोद ॥
सुनकर हर्पितहो भविक वृन्द । आकर पूजाको दुख निकंद ॥
करते दुखियों का दुक्ख दूर । हो नष्ट प्रेत बाधा जरूर ॥
डाकिन साकिन सब होंय चूर्ण । अन्धे हो जाते नेत्र पूर्ण ॥
श्रीपाल सेठ अंजन सुचार । तारे तुमने उनको बिमार ॥
नकुल सर्प सीता समेत । तारे तुमने निज भक्त हेत ।
हे संकट मोचन भक्त पाल । हमको भी तारो गुणविशाल ॥
विनती करता हूं बार बार । होवे मेरा दुःख छार छार ॥
मीना गूजर सब जाट जैन । आकर पूजें कर तृप्त नैन ॥
ऐसी महिमा तेरी दयाल । अब हम पर भी होवो कृपाल ।

ॐ ह्री श्री पदम प्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामिति स्वाहा

मेढ़ी में श्री पद्म की, पूजा रची विशाल ।
हुआ रोग तब नष्ट सब, विनवे छोटेलाल ॥
पूजा विधि जानूं नहीं, नहिं जानूं आव्हान ।
भूल चूक सब माफ कर, दया करो भगवान ॥

॥ श्री महावीरायनम ॥

श्रीचांदनपुर-महावीर पूजन



दोहा

चाँदनपुर अतिशय भयो, प्रगटे श्री महवीर ।
त्रिशला नन्दन जगतपति, परम पूज्य गभीर ॥
दर्शन कर नर नारि सब, आनंद नदी बहाय ।
भक्ति भाव से थाप कर, पूजत हैं शिर नाय ॥

ओं श्री ह्रीं चांदनपुर महावीराय अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ओं ह्रीं श्री चांदनपुर महावीराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापनम् ।

ओं ह्रीं श्री चांदनपुर महावीराय अत्रमम सन्नि हित भव भव वषट सन्निधिकरणम । परि पुष्पाजलि क्षिपेत् ।

(अष्टक २३ मात्रा)

भरके शुचि निर्मल नीर, मणिमय भाजन में ।
भव के आताप नशाय, डारूं चरणन में ॥
चांदनपुर के महवीर, सन्मति नायक हो ।
वेग हरो भव पीर, तुम सब लायक हो ॥

ओं ह्रीं श्री चांदनपुर महावीरायजन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामिति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिर चन्दन लेप, केशर गन्ध मिला ।
परस करूं सब देह, शीतल होय महा ॥ चां०

ओं ह्रीं श्री चांदनपुर महावीरायभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीतिः स्वाहा ॥ २ ॥

उज्वल तंदुल धोय, कंचन थार भरो ।
अक्षय पद पावन हेत, हे प्रभु पाप हरो ॥ चाँ०

ओं ह्रीं श्री चांदनपुर महावीरायभ्यो! अक्षयपद प्राप्तये अक्षयतान निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

ले जुही चमेली कंज, पुष्प धरूं आगे ।
हो कुसुमबाण का नाश, काम कला भागे ॥ चाँ०

ओं ह्रीं श्री चांदनपुर महावीरायभ्यो काम बाण विध्वंशनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

ये विविधि भाँति पकवान, सुन्दर मोद भरे ।
क्षुधा रोग मिट जाय, पातक दूर करे ॥ चाँ०

ओं ह्रीं श्री चादनपुर महावीरायभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामति स्वाहा ॥ ५ ॥

घृत में करपूर मिलाय, दीपक ज्योति जगे ।
अज्ञान तिमिर क्षय जाय, ज्ञान कला जागे ॥ चाँ०

ओं ह्री श्री चादनपुर महावीरायभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

मलयागिर चन्दन धूप, उत्तम गन्ध महा ।
मैं खेवत हों प्रभु पास, आठों कर्म दहा ॥ चाँ०

ओं ह्री श्री चाद्नपुर महावीरायभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

बादाम सुपारी लोंग, श्रीफल आदि सजा।
श्री महावीर पद पूज, पाऊं मोक्ष रमा ॥ चा०

ओं ह्रीं श्री चांदनपुर महावीरायनमः मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल गन्ध सुअक्षत पुष्प, आठों दरब मिला।
श्री वर्धमान को अर्घ, पाऊं सिद्ध सिला ॥ चा०

ओं ह्रीं श्री चांदनपुर महावीरायनमः अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

दोहा (अर्घ चरणों को)

नमन करूं उस टोंक को, प्रगट हुए जहं वीर।
छत्री बनी विशाल है, चरण पादुका तीर ॥
अतिशय का स्वप्ना दिया, ग्वाला गाय घना।
पूजों मन वच काय तह, आठों द्रव्य बना ॥ चा०

ओं ह्रीं श्री चांदनपुर महावीरायनमः टोंक में चरण स्थापित अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

[टीले के अन्दर विराजमान समय का अर्घ]

टीले में सुन्दर सुखद, छवि मय मूर्ति अनूप ॥
विविध भांति आकर करें, पूजा सुरगण भूप ॥
सुखद शांत आकुल रहित, पद्मासन आकार।
महावीर भगवान को, पूजों अष्ट प्रकार ॥ चा०

ओं ह्रीं श्री चांदनपुर महावीरायनमः टीले के मध्य स्थापित अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११ ॥

दोहा [पंच मंगल अर्घं]

त्रिशला माता के उदर, कुण्डलपुर सुख दीन।
छट असाढ़ सुद गर्भ में, रत्न वृष्टि सुर कीन ॥ चाँ०

ओं ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय आषाढ़ सुदी छट गर्भागम प्राप्तये अर्घं ॥ १२ ॥

चैत सुदी तेरस परस, जन्म भयो आनन्द।
सुरगिरि पर सुरगण कियो, जन्मोत्सव सानन्द ॥ चाँ०

ओं ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय चैत सुदी तेरस जन्म मंगल प्राप्तये अर्घं ॥ १३ ॥

मगसर वदि दसमी सुफल, केश लौंच तत्काल।
तप करने वन को गये, छोड़ जगत जंजाल ॥ चाँ०

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मगशिर बदी दशमी तप मङ्गल प्राप्तये अर्घं ॥ १४ ॥

दशमी सुदि वैसाख की, पायो केवल ज्ञान।
इन्द्र और देवादि ने, रचना रची महान ॥ चाँ०

ओं ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय वैशाख सुदी दशमी केवल ज्ञान प्राप्तये अर्घं ॥ १५ ॥

कार्तिक कृष्ण अमास को, पावापुर के थान।
आठ घातिया नष्ट कर, मोक्ष गये भगवान। चाँ०

ओं ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय कार्तिक वदी अमावश मोक्ष मङ्गल प्राप्तये अर्घं ॥ १६ ॥

जयमाल।

दोहा—विघन हरण मंगल करन, मूरत भव्य विशाल।
महावीर भागवान की कहता हूँ जयमाल ॥

जय जय त्रिभुवनपति गुण गभीर। जय चांदनपुर के महावीर॥
तुम गुन अनन्त दुख हरण देव। आकर करते सब चरण सेव॥
कुण्डलपुर में तुम जनम लेय। चांदनपुर में अतिशय करेय॥
प्रतिदिन ग्वाला की गाय एक। टीले पर देती दूध टेक॥
वह चकित हुआ फिर कर विचार। खोदा टीला को कर पुकार॥
उस में निकली प्रतिमा अनूप। थी परम दिगम्बर शांत रूप॥
जय जय करते हर्षित महान। रथ में प्रतिमा की बाजमान॥
चाहा लोगों ने लगा जोर। ले चले यहाँ से अन्य ओर॥
पर था वियोग से दुखी ग्वाल। इससे रथ चला न इच चाल॥
तब उचित स्वप्न का यही तथ्य। लो ग्वाल सग तब चले रथ्य॥
चरणपादुका दी बनाय। फिर चले वहां पर रथ सजाय॥
चांदनपुर में मन्दिर विशाल। बनवाई वेदी देख भाल॥
कोट फिरा चहु ओर पास। यात्री करते जिसमें निवास॥
प्रतिबिम्ब प्रतिष्ठित कर समान। अभिषेक क्रिया सब साजबाज॥
जयपुर का मन्त्री जैनजाध। उस पर नृप का बहुत क्रोध॥
दी आज्ञा उसने रोष पूर्ण। मन्त्री को कर दो अभी चूर्ण॥
था भक्त आपका वह दयाल। सुमरा उसने तुमको बहाल॥
गोला चरणों पर गिरा आन। मेला लगवाया बहु विधान॥
तब जाना नृप ने सब वृतान्त। मन्त्री को छोड़ा हुआ शान्त॥
दी आज्ञा उसने फिर विशेष। मन्दिर बनवाया तब अशेष॥
तिथि चैत सुदी पूनम बताय। मेला लगवाया बहु निकाय॥
दर्शन को आवें विविध लोक। मैना गूजर होवें विशोक॥
नाचें गावें सब पूज्यमान। मन चाहा फल पावें निदान॥
दोहा—पढ़ै सुने पूजा करे जो जन धर के ध्यान।
मिटे जगत जजाल सब, हो जावे कल्याण॥

॥ पद्मावती-स्तोत्र ॥

जिन शासनी हंसासनी पद्मासनी माता।
भुज चारते फल चारु दे पद्मावती शाता ॥ टेक ॥
जब पार्श्वनाथजी ने शुक्ल ध्यान अरम्भा,
कमठेश ने उपसर्ग तब किया था अचम्भा।
निज नाथ सहित आय के सहाय किया है,
जिन नाथ को निज माथ पै चढ़ाय लिया है ॥जिन०॥१॥
फल वीन सुमन लीन तेरे शीश विराजैं,
जिनराज तहां ध्यान धरें आप विराजैं।
फनिइन्द ने फनि की करी जिनन्द पै छाया,
उपसर्ग वर्ग मेटि के आनन्द बढ़ाया ॥ जिन० ॥ २
जिन पास को हुवा तभी केवल सुज्ञान है,
समवादी सरन की बनी रचना महान है।
प्रभू ने दिया धर्मार्थ काम मोक्ष दान है,
तब इन्द्र आदि ने किया पूजा विधान है ॥ जिन० ॥ ३
जब से किया तुम पास के उपसर्ग का विनाश,
तब से हुवा जस आपका त्रैलोक में प्रकाश।
इन्द्रादि ने भी आपके गुण में किया हुलास,
किस वास्ते कि इन्द्र खास पास का है दास ॥जिन०॥ ४
धर्मानुराग रंग से उमंग भरी हो,

संध्या समान लाल रंग अंग धरी हो।
जिन सन्त शीलवन्त पै तुरन्त खडी हो,
मन भावती दरसावती आनन्द बडी हो ॥ जिन० ॥ ५
जिन धर्म की प्रभावना का भाव किया है,
तिन साध ने भी आपकी सहाय लिया है।
तब आपने उस बात को बनाय दिया है,
जिन धर्म के निशान को फहराय दिया है ॥ जिन० ॥ ६
था बौध ने तारा का किया कुम्भ मे थापन,
अकलकजी से करते रहे वाद वेहापन।
तब आपने सहाय किया धाय मात धन,
तारा का हरा मान हुवा बौध उत्थापन ॥ जिन० ॥ ७
इत्यादि जहा धर्म का विवाद पड़ा है,
तहा आपने परवादियों का मान हरा है।
तुमसे यह स्यादवाद का निशान खरा है,
इसवास्ते हम आप से अनुराग धरा है ॥ जिन० ॥ ८
तुम शब्द ब्रह्मरूप मन्त्र मूर्ति धरैया,
चिन्तामनी समान कामना को भरैया।
जप जाग जोग जैन की मत्र सिद्ध करैया,
परवाद के पुरयोग की तत्काल हरैया ॥ जिन० ॥ ९
लिखि पास तेरे पास शत्रु त्राम तें भाजै,

अंकुश निहार दुष्ट जुष्ट दर्प को त्याजै ।
दुःख रूप खर्व गर्व को वह वज्र हरै है,
कर कंज में इक कंज सो सुख पुंज भरै है ॥ जिन० ॥१०

चरणारविन्द में है नूपुरादि आभरन,
कटि में है सार मेखला प्रमोद की करन ।
उर में है सुमन माल सुमन भान की माला,
पट रंग अंग संग सों सोह है विशाला ॥ जिन० ॥११

करकंज चारू भूषन सों भूरि भरा है,
भवि वृंद को आनन्द कंद पूरि करा है ।
जुग भान कान कुंडल सों जोति धरा है,
शिर शीस फूल २ सों अतूल धरा हैं ॥ जिन० १२ ॥

मुख चन्द को असन्द देख चन्द भी हू थंभा,
छबि हेर हार होरहा रम्भा को अचम्भा ।
दृग तीन सहित लाल तिलक भाल धरे हैं,
विकसित मुखारविन्द सों आनन्द भरे हैं ॥जिन०॥ १३

जो आप को त्रिकाल लाल चाल सों ध्यावै,
विकराल भूमिपालु उसे भाल झुकावै ।
जो प्रीत सों प्रतीत सपरीति वढ़ावे,
सो रिधि सिधि वृध नवों निधि को पावे ॥जिन०॥ १४

जो दीप दान के विधान से तुम्हें जपै,

सो पाप के निधान तेज पुंज दिपै ।
जो भेद मंत्र निवेद किया है,
सो वाध के उपाध सिद्ध साध लिया है ॥ जिन० ॥१५॥
धन धान्य का आर्थी है सो धन धान्य को पावै,
सन्तान का अर्थी है सो सन्तान खिलावै ।
निजराज का अर्थी है सो फिर राज लहावै,
पद भ्रष्ट सुपद पायकै मन मोद बढावै ॥ जिन० ॥ १६
ग्रह क्रूर व्यन्तराल व्याल जाल पूतना,
तुव नाम के सुन हाक सौभागे हैं भूतना ।
कफ वात पित्त रक्तरोग शोक शाकिनी,
तुम नाम तैं डरी मही परात डाकिनी ॥ जिन० ॥ १७
भयभीत की हरनी है तुही मात भवानी,
उपसर्ग दुर्ग द्रावती दुर्गावती रानी ।
तुम संकटा समस्त कष्ट काटिनी दानी,
सुख सार की करनी तू शंकरीश महारानी ॥जिन०॥१८
इस वक्त में जिन भक्त को दुख व्यक्त सतावै,
ऐ मात तुझे देखिके क्या दर्द ना आवै ।
सब दिन से तो करती रही जिन भक्त पै छाया,
किस वास्ते उस बात को ऐ मात भुलाया ॥जिन०॥ १९
हो मात मेरे सर्व ही अपराध छिमा कर,

होता नहीं क्या बाल से कुचाल यहां पर,
कुपुत्र तो होते हैं जगत मांहि सरासर,
माता न तजै तिनसों कभी नेह जन्मभर॥ जिन०॥ २०

अब मात मेरी बात को सब भांत सुधारो,
मन कामना को सिद्ध करो विघ्न विदारो।
मति देर करो मेरी ओर नेक निहारो,
करकंज की छाया करो दुःख दंद निवारो ॥जिन०॥ २१

ब्रह्मंडनी सुखमंडनी खलखंडनी ख्याता,
दुख टारिके परिवार सहित दे मुझे साता।
तज के विलम्ब अंब जी अवलम्ब दीजिये,
वृष चन्द नन्द वृन्द को आनन्द दीजिये॥ जिन०॥ २२

जिन धर्म से डिगने का कहीं आपड़े कारन,
तो लीजियो उबार मुझे भक्त उधारन।
निज कर्म के संजोग से जिस जोन में जावो,
तहां दीजिये सम्यक्त जो शिव धाम को पावो॥ जिन०॥
जिन शासिनी हंसासनी पद्मावती माता,
भुज चारतें फल चारु दे पद्मावती माता॥ २३॥



हरिहर प्रेस, चावड़ी बाजार, गली बजरङ्गबली, देहली।

सरल जैन मंत्र माला



सम्पादक—
ज्योतिष मार्तण्ड, मन्त्र शास्त्री, प्रो० शीतलप्रसाद जैन,
बी० ए०, जर्नलिस्ट एण्ड इकनामिस्ट, देहली।

प्रकाशक—मास्टर छोटेलाल जैन,
सम्पादक—'पद्मावती" कूँचा सेठ, देहली।

आवश्यक सूचना

१—"सरल जैन मंत्र माला का" प्रत्येक मंत्र वेश कीमती है, हमने अपने जीवन में इनकी परीक्षा स्वयं की है तथा दूसरों ने भी लाभ उठाया है। इसको मैंने अब तक इसलिए प्रकाशित नहीं कराया था कि अपात्रों के हाथ में पड़कर अर्थ का अनर्थ न होने पावे। किन्तु इस समय मैं श्रीयुत मास्टर छोटेलाल जी सम्पादक 'पद्मवाणी" के विशेष आग्रह को न टाल सका—फिर भी जो साधक सिद्ध करना चाहें वे नीचे लिखी वातों को खूब ध्यान से पढ़कर वा समझ कर इस कार्य में हाथ डालें। जो वात समझ में न आवे वह पत्र द्वारा मुझ से पूछ लें।

२—मंत्र आरम्भ उन्हीं को करना चाहिए, जिनका शारीरिक व मानसिक वल पूर्ण हो, तथा मंत्र सिद्धि में पूर्ण विश्वास हो। अन्यथा लाभ के वदले हानि होगी।

३—मंत्र साधने की विधि—मंत्र का अक्षर तीन गुना करके और अपने नाम का अक्षर मिला ले, फिर सव को जोड़कर १२ का भाग दे, शेष बचे उसको लेकर देखे, मंत्र सिद्ध होगा या नहीं। नीचे लिखे अंकों में जो शेष अंक बचे उन अंकों को मिलान कर देखे।

१-५-९ बचे तो सिद्ध है। यह जल्दी सिद्ध होगा।
२-६-१० बचे तो सम है। देर से सिद्ध होगा।
३-७-११ बचे तो अच्छा है।
४-८-१२ बचे तो यह सिद्ध न होगा।

४—स्वर साधन की विधि—वशीकरण, आकर्षण, कालवचन, विष भूतादि, स्तम्भन कार्य यह सव वाम स्वर में शुरू करे। पौष्टिक, तीक्ष्ण, उच्चाटन, मोहन यह सव कार्य दक्षिण स्वर में

शुरू करे। जब कोई कार्य करने बैठे तो स्वर देख ले। दोनों स्वर चलते हों या दोनों बन्द हों तो थोडी देर ठहरे, फिर जब स्वर ठीक हो जावें कार्य आरम्भ करे।

फिर भी जो सज्जन इस सम्बन्ध मे विशेष जानकारी प्राप्त करना चाहें वह मुझे लिखें। मैं उन्हें सहर्ष अपनी अनुभूति सम्मति दूंगा।

मंत्र साधन–विधि

१—मत्र सिद्धि को जिस स्थान पर जावें वहा के रक्षकदेव से प्रार्थना करें कि हम इस स्थान पर इतने समय तक ठहरेंगे यदि कोई उपसर्ग हो तो टालना, तीर्थ क्षेत्रों पर साधना अच्छा होता है।

२—मन वच काय से रक्षक देव की योग्य विनय करे और मुख से यह उच्चारण करें कि हम इस स्थान पर अमुक कार्य के लिये आये हैं। तुम्हारी रक्षा का आश्रय लिया है, यदि कोई सकट आवे तो निवारण करना।

३—दूसरा साथी अवश्य साथ मे रहे जो सामान की रक्षा करे।

४—जितना जाप हर रोज जप सको उतना जपो। कुल सवा लाख जपना जरूरी है।

५—रक्षा मत्र पहिले जपना चाहिये। किसी से डरना नहीं चाहिए।

६—जिस रग की माला लिखी हो उसी रग का आसन दुपट्टा धोती चाहिए। यदि माला न लिखी हो तो सूत की माला या जिये पोते की माला चाहिए। यदि माला न हो तो सूत की माला को उसी रग मे रग लो।

७—इस तरह सब कार्य ठीक करके मंत्र जपो। पुत्र प्राप्ति के लिए मोती की माला से जपो। दुश्मन के उच्चाटन के लिए रुद्राक्ष की माला से जपो।

यन्त्र सिद्ध करने की विधि—

शुभ दिन और शुभ तिथि देखकर अनार की क़लम से आम की लकड़ी की पट्टी पर रोली बिछाकर यन्त्र को लिखें। अलग अलग यन्त्रों की अलग अलग संख्या होती है जितनी संख्या में लिखना हो उतना लिखो। पूरी संख्या लिखने के बाद यन्त्र सिद्ध हो जाता है। जिस विधि से लिखना हो, वैसे ही यन्त्र काम देता है। जरूरत के समय ही लिखकर काम में लेवें। यन्त्र सिद्ध करने से यन्त्र काम देगा, ध्यान रहे पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करके यन्त्र लिखें और जब तक लिखें पूर्ण पवित्र रहे। इसको याद रखना, भूलना नहीं, नहीं तो खतरा है।

१—सिद्ध मन्त्र को १०८ बार जपे और यन्त्र को धूप दिखावे।

२—होली, दिवाली की रात्रि को और ग्रहण में जरूर जप ले, और धूप खेवे अन्यथा सिद्धि जाती रहेगी।

स्वप्नेश्वरी साधन—स्वप्नेश्वरी मन्त्र जपने के बाद किसी से बोले नहीं। पृथ्वी पर सोवे। जिस काम के जानने का निश्चय करे उसका ध्यान सोने से पहिले करे। स्वप्न अवश्य होगा और ठीक होगा।

पीपल वाली गली
देहली। —शीतलप्रसाद जैन



सरल-जैन मंत्र-माला।



१—रोग निवारण मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आइरियाणं। णमो उवज्झायाणं णमो लोएसव्वसाहूणं। ॐ णमो भगवतिसुअदे। वयाणवारसंगएव। यणजणणीयं। सरस्सइए सव्व। वाईखिसवणवणे। ॐ अवतर अवतर। देवीमम शरीरं वपिस मुञ्छ। अरहंत सिरि सिरिए स्वाहा।

विधि—यह मन्त्र १०८ वार लिख रोगी के हाथ मे रक्खे सर्व रोग जाय।

२—रक्षा मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं। ॐ णमो सिद्धाणं।

ॐ णमो आइरियाणं। ॐ णमो उवज्झायाणं।

ॐ णमो लोए सव्व साहूणं। ऐसो पंच णमो यारो सव्वपापप्पणासणो मॅगलाणॅ च सव्वेंसिं पढ़मं हवइ मंगलँ ॐ ह्रीं हुं फट् स्वाहा।

३—ताप निवारण मन्त्र

णमो लोए सव्व साहूणं। ॐ णमो उवज्झायाणं।

ॐ णमो आइरियाणँ। ॐ णमो सिद्धाणँ। ॐ णमो अरहंताणं।

विधि—जब यह मन्त्र पढ़े पाँचवें चरण के अन्त में ॐ ह्रीं पढ़ता जावे। एक सफेद शुद्ध चादर लेकर उसके एक कौने पर यह मन्त्र पढ़े। और गाँठ देने की तरह कोने को मोडता जावे। १०८ वार उस कोने पर मन्त्र पढ़ उसमें गाँठ देवें, वह चद्दर रोगी को उढ़ावे। गाँठ सिर की तरफ रहे। जब तक बुखार न उतरे चद्दर ओढ़े रहे।

४—दुश्मन भूत निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय अंधय अंधय मूकवत्कारय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः ठः।

नोटः—इस मन्त्र की दो क्रियाएँ हैं।

[अ] यदि किसी पर गनीम चढ़ आवे या दुश्मन हमला करे और जब मुकाबिला हो तब यह मन्त्र १०८ वार मुट्ठी बाँधकर जपे दुश्मन भग जावेगा।

[आ] यदि किसी को भूत पिशाच चुडेल डायन सतावे तो यह मन्त्र १०८ वार मुट्ठी बाँधकर उसे झाड़ दे और दोनों वक्त सुवह शाम झाड़ा करें सब भूतादिक दूर हो जावेंगे।

इस मन्त्र के नीचे के चरण में ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः ठः में दुष्टान् की जगह दुश्मन का नाम जानते हो तो लो या भूतादिक का लेवें।

५—परदेश लाभ मन्त्र

ॐ णमो अरहताणं। ॐ णमो चँग वईए। चन्दा-

यईएसतट्ठाए। गिरे मोर मोर हुल हुल चुल चुल मयूर वाहिनि।

विधि—रोजगार या धन प्राप्ति के लिए परदेश जाने से पेश्तर श्री पार्श्वनाथ की प्रतिमा के आगे यह मन्त्र दस हजार वार जपे। फिर श्रेष्ठ मुहूर्त्त निकलवा कर १०८ वार जप कर गमन करे तथा नगर प्रवेश करते समय १०८ वार मन्त्र जप ले।

नोट—रोजगार वगैरह को मङ्गल के दिन कभी भूल कर प्रवेश न करे इससे बडी हानि होती है।

६—मन चिन्ता कार्य सिद्ध मन्त्र

ॐ ह्रॉ ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रः अ सि आ उ सा स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र को सवा लाख जाप करने पर कार्य सिद्ध होय। पधू सामने रक्खे।

७—द्रव्य प्राप्ति मन्त्र

अरहँत सिद्ध आइरिय उवज्झँ सव्व साहूणँ।

विधि—इस मन्त्र को विधि पूर्वक सवा लाख जप करे, धन प्राप्ति होय।

८—लक्ष्मी प्राप्ति यश करन रोग निवारण मंत्र

ॐ णमो अरहताणँ। ॐ णमो सिद्धाणँ। ॐ णमो आइरियाणँ।

ॐ णमो उवज्झायाणँ। ॐ णमो लोए सव्व साहूणँ ॐ ह्रॉ ह्री ह्रीं ह्रः स्वाहा।

विधि—ऊपर लिखे मन्त्र को सवा लाख वार जप जपने से सर्व कार्य सिद्ध हों। विधि पूर्वक नियम से जपना चाहिये।

९—सर्वसिद्ध मंत्र

ॐ अ सि आ उ सा नमः

विधि—उपरोक्त मंत्र को सवा लाख जपे। विधि पूर्वक जपने से सर्वकार्य सिद्ध हों।

१०—पुत्र सम्पदा प्राप्ति मंत्र

ॐ ह्रां श्री ह्रीं क्लीं अ-सि आ उ सा। चुलु चुलु हुलु हुलु मुलु मुलु। इच्छियँ मे कुरु कुरु स्वाहा। त्रिभुवन स्वामिन विद्या।

नोटः—जब यह मंत्र जपने बैठे आगे धूप जलाकर रख लेवे।

विधि—ये मँत्र २४ हज़ार फूलों पर जपना चाहिए। एक फूल पर एक मंत्र जपता जावे इस तरह पूरा जपे इसमें धन दौलत स्त्री पुत्र मकान सर्व सम्पत्ति प्राप्त होय।

११—वशीकरण मंत्र

ॐ णमो अरहताँणं अरे अरणि मोहणि अमुकं मोहय मोहय स्वाहा

विधि—इस मंत्र को चावल तथा फूल पर १०८ वार पढ़ कर जिसके सिर पर रक्खे वह वश होय।

१२—जैन मंत्र रोग निवारण

८	११	१४	१
१३	२	७	१२
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

विधिः—इस यंत्र को कागज पर लिखकर बीमार आदमी को दोनों वक्त सुबह शाम पानी में घोल कर पिलाया करें चद्दर में गांठ देवे और बीमार को वह चद्दर उढ़ावे तो सर्व-रोग जायें। यदि पशु बीमार हो तो उसे पिलावे वह भी अच्छा हो जावे।

१३—ऋद्धि करण मन्त्र

ॐ पद्मावती पद्मनेत्रे पद्मासने लक्ष्मीदायिनी वॉछा भूतप्रेतनिग्रहणी सर्वशत्रुमहारणी दुर्जनमोहनी ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं श्री पद्मावत्यै नमः ।

विधि—गूगल, गोरोचन, छाडछडीला, कपूरकचरी, इनको इकट्ठी करके १०८ गोली चने के बराबर करे। शनिवार की रात्रि को तथा रविवार को दिन मे लाल वस्त्र पहिन कर लाल कोथली पर लाल पुष्प कनेर के चढावे १०८ वार जाप नित्य जपे। मन्त्र के साथ १ गोली अग्नि पर रक्खे १ माह मे लक्ष्मी प्रसन्न हो फिर नित्य प्रति ११ गोली मन्त्र की अग्नि पर चढाया करे तो जरूर ऋद्धि हो

१४—व्यापार के द्वारा धन लाभ मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं क्लीं श्री लक्ष्मीममगृहे धनं पूरय पूरय चिन्तां दूरय दूरय स्वाहा।

विधि—प्रातःकाल दन्त धावन और स्नान करके १०८ वार मन्त्र जपे धन का लाभ हो यह सत्य है।

१५—उपद्रव नाशन घंटाकर्णी मत्र

ॐ घंटाकर्णी महावीरी (अपना नाम) सर्व उपद्रव नाशनं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—सूर्य सन्मुख बैठे दीप धूप नैवेद्य कपूर से पूजन करे। ३५०० वार मन्त्र का जाप करे। पश्चिम मुख होकर गूगल की एक एक सहस्र गोली मन्त्र कर अग्नि मे डाले। इसी तरह तीन दिन करे सर्व उपद्रव मिट जाय सुख मिले।

१६—देव प्रसन्न लाभ मंत्र

ॐ ह्रीं श्री अर्हं नमि उणो त्रिसहर विसह जिण फुलिंग ह्रीं श्री नमः।

विधिः—इस मन्त्र को सवा लक्ष (१२५०००) जाप करने से अधिष्ठाता प्रसन्न हों। मांगने पर सब देवें। लक्ष्मी दिन पर दिन बढ़े हमेशा आनन्द मंगल रहे जब तक जपे ब्रह्मचर्य से रहे।

१७—ऐश्वर्य प्राप्त मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्री क्लीं लक्ष्मी कलिकुण्डस्वामिनेमम आरोग्यं ऐश्वर्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधिः—इस मन्त्र को १०८ वार पढ़ने से सन्तान सुख मिले और लक्ष्मी अटूट हो।

१८—लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

इस यन्त्र को अनार की या चमेली की कलम से हल्दी का चन्दन बनाकर कागज पर लिखे और यन्त्र के नीचे अपना मनोरथ लिखे प्रति रविवार को।

विधिः—यन्त्र लिखने की विधि—पहले एक का फिर दो का इसी तरह नम्बर वार १६ तक हरुफ १६ कोठों में लिखे।

मन्त्र—ॐ ह्रीं हंसः।

विधिः—एक माला हल्दी की १०८ मणियों की बनावे और प्रति रविवार को रात्रि के प्रथम पवित्र होकर धूप, दीप, नैवेद्य,

पुष्प से मन्त्र को सामने रख कर पूजन करे और प्राणायाम सकल्प करके विधि से ११ माला मन्त्र की जाप करे फिर पीछे यन्त्र का पलीता दीपक मे जलादे ७ रविवार इसी तरह करे ब्रह्मचर्य से रहे और रविवार को १ दफा खीर का भोजन करे और कोई चीज न खावे। रोजी मिले, धन वढे, ऋद्धि सिद्धि होय। यह कई दफा का आजमूदा है। रविवार की रात्रि को जमीन पर सोवे और मन्त्र जपने के पीछे किसी से बोले नहीं सो जावे।

नोट—यदि हल्दी गाठ की माला न वना सके तो १०८ हल्दी की गाठों पर जपे। यदि खीर न खा सके, तो सिर्फ नमक न खाकर एक दफे भोजन करे। पान सिगरेट पानी का परिमाण कर लेवे।

१६ दुकान में बिक्री होने के दो यंत्र

व	श्र	ह	व
व	ह	श्र	व
श्र	व	न	ह
ह	व	व	ह

न० १ शहद मे रखने का

८	११	१४	१
१३	२	७	१२
३	१६	६	६
१०	५	४	१५

न० २ दुकान पर वाधने का

विधि—पहिला अक्षर पहिले घर मे इसी तरह १६ अक्षर नम्बरवार लिखना दोनों यन्त्र शुभ घडी, शुभ तिथि, वार मे लिखें न० १ को शहद मे रक्खे फिर शक्कर वूरा मे डाले, फिर मीठे अनार के पेड मे वाधें। न० २ को दुकान के दरवाजे मे वाधे अवश्य बिक्री हो।

२० लाभान्तराय मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मम लाभं अन्तरायकर्म निवारनाय स्वाहा ।

विधिः—जिनेन्द्रदेव के सामने बैठकर १ माला हर रोज फेरे। और धूप खेवे ।

२१ सिद्ध स्वप्नेश्वरी मंत्र

ॐ ह्रीं बाहुबलि महाबाहुबलि प्रचण्डबाहुबलि ऊर्ध्व बाहुबलि शुभाशुभँ कथियते स्वाहा ।

विधिः—एक जाप प्रातःकाल और एक जाप रात्रि को सोते समय करें पृथ्वी पर सोवें । जब कोई प्रश्न पूछना हो तो दाहिने कान की लौ पर कस्तूरी चन्दन सफेद घिसकर लगाकर काम विचारे तब सोवे । जो बात पूछोगे अवश्य उत्तर मिलेगा ।

२२ लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं महालक्ष्मयै नमः स्वाहा ।

विधिः—प्रातःकाल धूप दीप खेकर एक जाप जपै तो ४० दिन में लक्ष्मी मिले ।

२३ ऋण मोचन मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं गं ओ गं नमो संकटकष्ट हरणाय विकटदुखनिवारणाय ऋणमोचनाय स्वाहा ।

विधिः—जिनेन्द्र देव के सामने १० माला जपने से संकट ऋण और सब दुःख निवारण होते हैं ।

२४ सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीं वद वद वादवादिनी भगवती सरस्वती ह्रूं नमः ।

विधि—एक माला नित्य जपे। परीक्षा मे पास हो और विद्या की प्राप्ति हो। अथवा २१००० जाप इक्कीस दिन मे जपले।

२५ शान्ति मंत्र

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्व शांति कुरु कुरु ॐ नमः।

विधि—प्रात काल स्नान करके एक माला नित्य फेरने से सर्व ग्रहों के अरिष्ट निवारण होते हैं।

२६ सन्तान प्राप्ति सिद्ध मत्र

ॐ ह्रीं पुत्रसुखप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय नमः।

विधि—प्रात काल श्री आदिनाथ भगवान के सामने ५ माला रोज फेरे और हर सोमवार को ५ बादाम चढाये।

२७ स्त्री रोग निवारण मत्र

ओं ह्रीं स्त्रीरोगविनाशनाय श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः।

विधि—प्रात काल सात माला रोज फेरे और हर शनिवार को श्री मुनि सुव्रतनाथ भगवान का पूजन करे अवश्य शान्ति होकर रोग दूर होंगे।

२८ फौजदारी के मुकद्दमे से वरी होने का मंत्र

ॐ णमो सिद्धान।

विधि—शुद्ध पवित्र वस्त्र धारण कर ११५ वार रोज जपें और "ॐ णमो सिद्धान स्वाहा" इस मन्त्र से ११५ वार रोज लौंग का हवन करे। कई वार का परीक्षित है।

२९ स्वप्नेश्वरी मन्त्र

ओं विश्वमालिनी विश्वप्रकाशिनी मध्ये रात्रौ सत्यं अमुकस्य वद २ प्रकटय २ श्री ह्रौं हुम फट स्वाहा ।

विधिः—सिंगरफ काली मिर्च स्याही मिला कर कागज पर लिख कर तकिए के नीचे रख कर सोवें। सिर्फ मंगलवार और रविवार की रात्रि को अनुभव करे।

३० चिन्ता चूरणी मंत्र

ओं णमो भगवती पद्मावती सर्व जनमोहनी सर्वकार्य करनी मम विकटसंकटहरनी मम मनोरथपूरनी मम चिन्ता चूरणी ओं णमो पद्मावती नमः स्वाहा ।

विधिः—प्रातः काल श्री पार्श्वनाथ या श्री पद्मावती जी की मूर्ति के आगे १०८ वार जाप करे। धूप खेता जाय। सब विघ्नों का नाश हो।

३१ भगवान चन्द्राप्रभु का मंत्र

ओं ह्रीं श्री चन्द्राप्रभु ह्रीं श्रीं कुरू स्वाहा ।

विधिः—१२००० जप १२ दिन में चन्द्राप्रभु भगवान की मूर्ति के सामने जप करे तो मन इच्छित कार्य पूर्ण हो। धूप दीप सामने रखे। यदि बन सके तो १२ दिन तक चन्द्रप्रभु भगवान का पूजन भी करे तो वहुत उत्तम फल प्राप्त होगा।

३२ चारों दिशाओं से धन प्राप्तिकरन मंत्र

ओं णमो भगवती पद्म पद्मावती ओं ह्रीं श्रीं पूर्वाय पश्चिमाय उत्तराय दक्षिणाय सर्व अनावश्यं कुरु २ स्वाहा।

विधि—प्रातःकाल सर्व कार्य से पहिले उपरोक्त मंत्र को १०८ दफे पढ़कर चारों दिशाओं से दस २ फूंक मारे तो प्रत्येक दिशा से धन प्राप्ति हो।

३३ रोजगार प्राप्ति सिद्ध यंत्र

७७	७२	७३
७९	७४	७८
७५	७६	७१

विधि—यह यंत्र सफेद कागज पर सिंगरफ से लिखे। तकिये में रक्खे प्रातःकाल इस यंत्र को देखकर तब किसी और को देखे। नौकरी अवश्य मिलेगी, पचासों बार का आजमूदा है।

३४ चौबीस घंटे में सिद्धिदायक मंत्र

विधि—प्रातःकाल सूर्योदय से पहिले स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर एकान्त स्थान में जहां किसी प्रकार का शोरो गुल न हो। 'ॐ वीराय नमः' का मूंगे की माला पर जाप करे। चाहे बैठकर जपे, चाहे खड़े होकर जपे, परन्तु सोवे नहीं। जिस स्थान पर जपे गूगल की धूप बत्ती जला लेवे। जब धूप बत्ती खत्म हो जावे, फिर दूसरी बत्ती जलाले, पेशाब आदि की शंका निवारण करके हाथ पैर धोकर फिर जप शुरु करदे। श्री महावीर प्रभु के शासन देव 'मातंग' और शासन देवी 'सिद्धायका' का भी ध्यान रक्खे। इस तरह करने पर रात्रि को किसी समय वीर प्रभु की शासन देवी दर्शन देगी। दर्शन मात्र ही से जिस प्रयोजन से आपने मन्त्र शुरु किया है। समझ लो वह सिद्ध हो गया। यदि दर्शन न भी हो तो भी इस प्रकार के २४ घन्टे के अखण्ड जपने से कार्य सिद्ध हो जाता है। आजमाइश किया हुआ है। इसी मंत्र को ४० दिन तक यदि सात लाख जप श्री महावीर भगवान की प्रतिमा के सामने बैठ कर धूप दीप से जपे तो सर्व सांसारिक मनोरथ सिद्ध हों।

३५ बिच्छू विष हरण मंत्र

ओं भं हुं यं कं उं वं वं लं द्वं एं ऐ ओ ओं हं हः ।

विधिः—बकुले की छाल अथवा बीजों को पीस कर इस मन्त्र से काटने की जगह लेप करे तो विच्छू का विष दूर होय।

३६ बुरे ग्रहों की शान्ति करने के मंत्र व दान

सूर्य—ओं ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः—जप ७०००

चन्द्र—ओं ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः—जप ११०००

मँगल—ओं ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः-जप १००००

बुध—ओं ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्रायनमः—जप ९०००

वृहस्पति-ओं ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः-जप १९०००

शुक्र—ओं ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः—जप १६०००

शनि-ओं ह्रीं श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्रायनमः-जप २३०००

राहु—ओं ह्रीं श्री नेमनाथ जिनेन्द्राय नमः—जप १८०००

केतु—ओं ह्रीं श्री नेमनाथ जिनेन्द्राय नमः—जप १७०००

जिस भगवान का जप करे उसी भगवान का अष्ट द्रव्य से शुद्ध मन, वचन, कायसे पूजन करे। अवश्यही अनिष्ट ग्रहोंकी शान्तिहोगी।

रविवार—बच्चों को मिठाई बांटो।

चन्द्रवार—भूखों को दही बूरा मिठाई खिलाओ।

मंगल—बन्दरों को गेहूं की गुड़धानी या सब्जी खिलाओ।

बुधवार—बच्चों को मूँग की बर्फी बांटो।

गुरुवार—बच्चों को नुकती के लड्डू खिलाओ।

शुक्रवार—भूखोंको खीरका भोजन और दक्षिणा दो।

शनिवार—कुत्तों को चूरमा, पक्षियों को दाना डालो